+निधनननो घर छे एह बाभीलां बोदर जे गणेस ते जयवंत हो के हवा बे असरण नाशरण छे ++ ३८

॥८०॥ ऐंनमः॥ अथ रसिकप्रियाबालाबोध लिख्यते॥ गाऊं गोपीनाथ गुन गुपत गुढ गुरु ध्यांनु श्रीव्रिजभूषन नंदसु
त ताको धरीयत ध्यानु १ एकरदन गजवदन सदन बुद्धिमदन कदन सुत गवरीनंद आनंदकंद जगवंद चंदयु
त सुषदायक दायक सुकिर्त्ति गननायक नायक षलघायक घायक दलिद्र सबलाइक सबलाइक गुरुगुन अ
नंत भगवंत भवभगतिवंत भवयहर नजय केशवदास निवास निधि लंबोदर असरन सरन २ अथ गणा
पति वर्णन गणेस ते केहवा छइ एकदांत छइ हस्तीना सरीषु मुष छइ बुद्धिनु घर छइ मदनकदन जे महादेव तेह
नो सुत छे गवरी जे पार्वती तेह थकी उत्पन्न छे हर्षनु मूल छे जगतनइ वंद्य छइ लालने विषे चंद्रमा छइ सुषनादा
ता छे सुकीर्त्तिनो दाता छे गणना जे नायक तेहनो स्वामी छइ दुष्टना घातकी छइ वली दलिद्रना जल हार छइ ला
यक जे योग्य ते मांहि योग्यता छइ मोटा गुण अनंत छइ भाग्यवंत छइ सव महादेव नी भक्तिमां छइ ते केशवदास क
हइ छइ सहूने जयकारी हुउ २ अथ छप्पै श्री वृषभानु कुमारि हेतु शृंगार रूप भय बासहास रस हरै मातु बंधन क
रुण बइ सहूने जयकारी करुणा ... वीर मारयो वत्सासुर भयदावानल पांनिमीयो बीभत्स बकी उर अति अद्भुत बंचि बिरं
च नाम मय के सप्रति अति रुद्रवीर मार्यो वत्सासुर ... केशव सेवहु रसिक जनन नवरस मय ब्रजराज नित २ अथ श्री कृष्ण वर्णन श्रीक्र
ष्ण मति मातनसु तत सो विचित के हे केशव सेवहु रसिकजनन नवरसमय ब्रजराज नित ... श्री राधाने काजि शृंगार रूप थया गोपीनां वस्त्र हर्यां तिहां हास्यरस थयो माता पे बंधनु तिहां
करुण केहवाछे नवरसमय छे श्री राधाने काजि शृंगार रूप थया गोपीनां वस्त्र हस्यां तिहां हास्यरस थयो माता पे बंध्यु तिहा
रेकरुणा रस मय थया केसाद रस मारयो तिहां रुद्र मय थया वत्सासुर मार्यो तिहां वीररस थया भयरस करी दावानलमी
रेकरुण रस मय थया ... अद्भुत रस करी ब्रह्माने बाला वत्साहरण कीधा त्यारे शांत रस मय पोते अवतर्या
क्षे निर्दर सेंकरी नइ सूत नाना प्राणाली ... ते व्रजराज ने सेवो सदा नवरस मय छइ २ अथ कर्ण श्री कृष्ण कहइ ३ मदहा नदी बेत ... २
वे केशव कहे छइ रसिक हुइ ते ब्रजराज ने सेवो सदा नवरसमय छइ ३ अथ देशवर्णन वेत्रवती नदी छे तुंगारन्य ती
वे ती ए तहां तीरथ तुंगारन्य नगर उडछो बकूबसइ धरणीतल मे धन्य ३ प्रथम देशवर्णन वेत्रवती नदी छे तुंगारन्य ती
रथ छे तिहां नगर उडछो तें बस्यो छे ते धरतीमे धन्य छे एक ब्रह्मचारी बीजो गृहस्थ त्रीजो वानप्र

×दीनी ताहि नसिंह सं ननमन रनजय सिद्धि हितकी लघमन राम सौं नई राजसो बृद्धि ए ३ २८

स्थ चोथो संन्यास च्यार वर्ण तिहां वसै छे ब्राह्मण क्षत्री विश्य शूद्र ते सहू न्याचार पाले छे तप जप वेद विद्या धर्म नित्य व्रते
वाधइ छे ४ दूहा एजे अर्थ कह्यो ते हनो हू हो हूंतां लभ्यो छे आश्रम च्यार वसै तिहां च्यार वर्ण श्रुत कर्म तपजप विद्या वेदवि
धि सबे बढे धन धर्म ४ दिनरत्न नइ हू नी वढे जहां दया उरदान एक सक कवि के सो तहां जानें सकल जिहान ५ दिनरत्ने
कांत वाधती छे दयादान वाधतां छइ जिहां एक पंडित केसवदास तिहां रहे छे तेहने सहु जलषे छे ५ दूहा अपने रधर्म त
हां सबे सदा सुषकार जासो देश विदेश के सबै रहे नृप हारि ६ पोता पोताना धर्म सहू ने सुषकारी छइ ते माटे सघला
देशना राजा ते आगलि हार रह्या छे ६ रयो विरंचि विचार तहां नृपमनि मधुकरसाहि गहरबार कासी सरवि कुलमं
डण जसु जाहां ७ ते राजा मधुकरसाह सघला राजानो मुगटमनि ब्रह्माये सिरज्यो छे तेह नी जाति गहरबार कासी धन
नाधूणी सूर्यवंशी नु भूषण छे उत्तम यश छइ ७ ताको पुत्र प्रसिद्ध महिमंडन हूलह राम इंद्रजीत ताको अनुज सकल
धर्म को धाम ८ तेहनो पुत्र प्रसिद्ध पृथ्वी मंडण छे तेहनो नाम दुलह राम तेहनो लघु भ्राता इंद्रजीत ते सकल धर्मनुं स्था
नक छे ८ तिन कवि केसवदास सु कीयो धर्म को नेह सब सुषदे करियइ कह्यो रसिकप्रिया करि देहु ९ तिणे केशा
वदास कवि सु हस्ती प्रीति कीधी जासु धन दीधं घणो कह्युं जे रसिकप्रिया करी आपो ९ संवत सोरह सें बरस बीते अ
ठतारीस कातिक सुदि तिथि सप्तमी वार वरनि रजनीस १० ते संवत छइ कह्यो छे संवत १६४८ कीधी कातिक सुदि सप्त
मी गुरु वार सोमवारनो ११ अति गति रति मति एक करि विविध विवेक विलास रसिकन कुं सुषदा की या कीनी केसवदास १२
जाणी प्रीति करी जाणी मति करी विवेक करी जाणो विलास आणी रसिक जनने वाह्रो एहवी रसिक प्रीया केशवदासे की
धी १२ ताते रुचि सो सोचि पचि कीजे सरस कवित्त केशव श्याम सुजान को सुनत होइ वसि चित्त १३ ते माटे सोची वि
चारी सरस कवित्त करुं छउं श्याम जे सांवलता चतुर नाम नरी जे १३ ज्यों बिनु दीठ न सो भीजे लोचन लोल बिशाल
त्यों ही केसव सकल कवि बिनु बानी हिरसाल १४ जिम मोटां नेत्र हुइ अने चंचल हुइ पिण मांहि कीकी नो हे तो सोभे नही

तिमसारा कवी कहइ पिणनी रसक वित्त करें तो शोभे नहीं १४ अथ नवरस लक्षणं दूहा प्रथम सिंगार रु हास्य रस क-
रुणा रौद्र अरु बीर भयबीभत्स बषानहो सांत अद्भुत धीर १५ प्रथम सिंगार रस १ बीजो हास्य रस २ त्रीजो करुणा रस ३
चोथो रुद्र रस ४ पांचमो वीर रस ५ छठो भय रस ६ सातमो बिभत्स रस ७ आठमो अद्भुत रस ८ नवमो शांत रस ९ १५ नो-
उरसके नाव बउ तिनकौं चित्त विचारु सबको केसवदास कहि नायक है सिंगार १६ ए नवे रसनां नाव ग्रंणावइ
नव नवा ने एवइ एनवे रसनो राजा ते शृंगार छइ १६ रति हांसी अरु शोक पुनि क्रोध उत्साह सुजान भय निंदा विस्म
य सदा थिर भाव प्रमानु १७ अथ रसोत्पत्तिः रतिप्रीति थकी शृंगार रस उपजे हास्य रस थकी हास्य रस उपजे शो
सोक थकी करुणा रस उपजे क्रोध थकी रुद्र रस उपजइ हर्ष थकी वीर रस उपजइ भय थकी भय रस उपजे निंदा
थकी बीभत्स रस उपजइ विस्मय थकी अद्भुत रस उपजे सात्विक थकी शांत रस उपजे १७ अथ शृंगार लक्षणं रति म
तिकी अति चातुरी रतिपति मंत्र विचार ताही सो सब कहत है कवि कोविद सिंगार १८ रतिमति ये काम तेह नी जे हमा-
चतुराई तेह ना विचार जेह मां काम नो परिग्यान तेहनइ शृंगार रस कहीइ १८ शुभ संयोग वियोग ए द्वे सिंगार की जाति
पुनि प्रच्छन्न प्रकास ए दोउ द्वे द्वे भांति १९ ते शृंगार नी बे जाति एक संयोग बीजो बियोग तेह ना वली बे भेद एक प्रच्छन्न बी
जो प्रकास १९ अथ प्रच्छन्न संयोग सो प्रच्छन्न संयोग कविक है वियोग प्रमान जानि पित प्रिया सषी होइ जाति के समान २०
तेह मां प्रच्छन्न लक्षण नायक नायिका जाणे त्रीजी वा कोई सषी जाणे तेह ने प्रच्छन्न कहीइ २० अथ यथा कवित्त ॥ ॥
- बन में वृषभानु कुमारि मुरारि रमे रस रूप पीयें कल कूजित पूजित काम कला विपरीत रची रति केलि कीये मन मोहति-
रूप मनराई जरी अति चोक चलै चल बाक हीये मुष चूलत किं कुज कूजवरतिके शावलानु मनो शान अंकली ये २० एक
समइ नइ विषइ वन मां वृषभानु कुमारि जे राधा मुरारि संघाते प्रीते विलास करे छइ रस रूप पीये छइ कल कहतां म- २
नोहर कूजित कहतां शब्द थाइ छे आरंभी एह बीजे काम कीम विपरीत कहतां अवली रची छइ राधा जी नी कोटि मां चोकी
छइ ते म छे श्याम मणी जड़ी छे वली अनेक हीरा जड्या छे तेह तु ते जस सूर्य ना सरषु छइ ते

चोकी दिलाय मान थाइ छे ते केहवी दीसे छे केशव दास कहे छे जाणीइ मुष तुल्य ने ही चके सूर्य वे वा बेसी ने शानी ष्वर ने-
षोले वे सारी हीबका वे छइ २० अथ प्रकास संयोग शृंगार दोहरा सो प्रकास संयोग अरु कहै प्रकास वियोग अपने
२ चित्त में जाने सिगरे लोग २१ तेह ने प्रकास संयोग अने प्रकाश वियोग कहीइ पोतापोताना मन मांस जाणे छइ
२१ यथा केशव एक समै हरि राधिका आसन एक लसै रस सीने आनंद सुं त्रिया आनन की द्युति देषत दर्पन त्यों
दृग दीने लाल के लाल मा बाल विलोकत ही तरिलोचन लालन लीने मासन विचित्र सुवासन सीय कृतासन में मानो
आसन कीनें २२ अथ अर्थः केशव कहे छइ एक समे राधा कृष्ण एकासन नै रसे करी लीना बेवा छइ आनंद में राधा
जी दर्पण लेई ने आनन जे मुष तेह नी द्युति जे कांति ते जोइ छे तिहां श्री ठाकुरे दृष्टि दीधी छे तिवारे लाल ना चांदला मां
कोइ कलालत हीरोज थोडि छे ते मां श्री जीइ प्रतिबिंब दीठु तिवारे गदगद कंठ थया नेत्रे जल आव्युं जाण्युं जाण्युं रघु-
नाथ जी नी आज्ञा थकी सीता जी वस्त्र सहित कृतासन जे अग्नि तेह मां बेठा न कइ एह वडे दीठउ २२ अथ प्रिया प्रच्छन्न
वियोग जथा कोट यो काट न कांन नि कोक सो मान कु सो कहइ आवत क नो ना हि चुः लेस निके चुपु छेर है ताके ही केशा-
व एक न छूनो नै कु अटे मट फूट ति आप सुं देषति है कब कौ ब्रजन नो काहि कोकाउ को कीजे पर मो बजी जे री जीव के मा
कदें छूनो २३ अर्थः राधा जी मन सुं विचार करे छइ जे कु मान करती तिवारे ठाकुरे इम कहता जे अम में परदेश जासु ते
मांसली ने जाणी ये कांन मां कीमीई चट को दी थे एह वुं कुष लागतु तेह ने वात्यां सांभली ने कांई थातु न थी लोक लाज इ ष-
घटो काट ना ति बारे आंषी आंसु ली घाती जाणी इ हमणां फाटि सइ ते केइ दिहाडा नु ब्रजन सूँ छै तु जो ये छे पणि आंषि फूटी-
नहीं अने कु इम जाणती जे प्रिय ने विरहे जीव देही थी जासे पणि जीव नीलजो थयो जो थयो जिम न गठाना के चनो चो
पनी नें गाम मां रहे तेमाट कोके हेतु पार पुजो सो मां २३ अथ वियोग सिंगार लक्षनः शीतल समीर डारि चंद्र चंद्रिका ति-
वारि के सोदास ए से ही तो हर महिरा तु हि कुलनि कि ला इना रि सारि मारि घनसार वंदन कुठारि चित्त बोगुनो पिराइ है

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

नीरही न मीन पुर कानि जीवें नीर ही पै डीर कें डीर कें कहा धीरज धीरातु है पाई ही तें पीर किधें यों ही उपचार करें आगि को
नीर आगि ही सिरातु है २४ अथ प्रकास वियोग॥ एक समे राधाजी ने विरह रूप जो अग्नि प्रबल बाधी भई तेह
ने सखी अनेक उपचार करें भई ते अनेको गमन नो न थी ते कहे भई शीतल बाफ स्नान इ नाखइ भई अनेक चंद्र मान इ कि र काजे
लेपना ने मुआ रोग ए ए नो साम्रु हरख हराइ भई फूल अमानी ना बइ घनसार घस्यो भई ने टोली नाख्यो अने चंदन नइ
उगटइ चित्त मां वो गुणी बलता वापी जिम जल माहि धीम ब काढीइ ते तम फमें तिवारे तेह दूध माहिं नाखीइ तो होसे तो मन पा
मइ ते पाछु पाणी मां नाखीइ तो तत काल प्रजान थाय जीवतुं रहे ते माटे आगी बलतु जकइ ते आगीई जनादु थाय २५ अथ कवि
त्तः केशव रूव रसोतु मही सो का थे न यकाऊ के नीतन यो है वे मोहि काहू के हाथ के नाथ किधें तुम काहू के संग दयो है
मेरी सो मो सऊ मानऊ वे गिदै याम न नाहि कहा पठयो है सांची कहो हसि हास्यो है काहू सों काहू हस्यो किहि रायग यो है २५
अथ प्रच्छन्न वियोग सिंगार लछन॥ अर्थः एक समे ते विषइ कृष्णजी नु मन महादुख रूपी या समुद्र मां पड्यो भइ
ते सखी इ जाण्युं ते कहे भइ हे महाराज तुमारु मन कोय ह की री सांलु भइ के कोय घ की बीहनु भइ के केनि हाथइ वेच्युं भइ के के
हने साथइ मोकल्यु भइ माहरा समजो साचु बोलो नहीं तो अही मन नथी किहीं मोकल्यु भइ सांचु कहो किहां होने आव्यु भइ के
नाको यह रि गयुं भइ २५ अथ कवित्तः बात कहे न सूने कछु काऊ तें हेरे नहीं कोउ के सें जू हेरो थाइ कछु न पीई पीइ न क
छु केशव कछु वे न कछु करके कोरो करे रो सूल त विबुजाब बीक हातु विश्रावत न हें देखि क लोक रिमेरो जाने गोसाई कहा नयो का
हू को जो गु संजोगु वियोग ते रो २६ श्रीजी को स्रंगार लछन॥ अर्थः एक समे कृष्णजी राधाजी ने विरहे घणुं दुख पाम्या भइ ते
सखी राधाजी नइ कहै भइ जे ठाकुरजी कोइ वात सूं भइ तो कहे नहीं जे कहोइ ते य ते सांभलइ नहीं खावुं खवरावीइ ते खाइ न २
हीं पीवानी वस्तु पीइ नहीं कोइ सा हमुं जोइ नहीं कोइ वस्तु ऊजलो अथवा कविनहा थइ अम इ नहीं ते माटे ब्रजमा ऊ
लऊ पनी रस्त्र भइ तुं ह जो वेठी भइ उ विकहि उ करि माहरू सांची ने जो ठाकुर ने सीद सा वे कोय योग वियोग मां आव्या
वे किना तमारे वियोग इ इम थया भइ ते कोय एम जाणतु नथी तो कोई सुजाणु जे का ने न्हें ने में थयो भइ २६ दूहा यों प्रका॥

श पइ च न्न सब बरन्यो योग वियोग अब नायक लछन कऊं गूढ अगूढ प्रयोग २७ प्रच्छन्न अथवा प्रकास संयोग वियोग कह्यो
हवे नायक लछण कहिस्युं गूढ कहतां प्रछन्न अगूढ कहतां प्रकास एम हला प्रनाव नो अर्थ पूरो थयो २७ इति श्रीमन्महाराज
कुमार इंद्रजीत विरचितायां रसिकप्रियायां प्रच्छन्नप्रकासवर्णनो नाम प्रथम प्रभाव: १ अथ नायक लछण दूहा अभि
मानी त्यागी तरुन कोकिकलानु प्रवीन भब्य छमी सुंदर धनी सुचि रुचि सदा कुलीन २७ अर्थ: एह बोल छ गुन जेह मां हो
य तेह ने नायक कहीइ अभिमानी कुइ त्यागी कहतां दातार होइ कोकिकलाने विषइ प्रवीण कुइ भव्य कहतां भलु कुइ छ
मावंत कुइ सुंदर कुइ धनवंत कुइ पवित्र प्रीतिवंत कुलीन कुइ केशवदास कहे भइ तेहने इ नायक कहीई २७ दूहा
एगुन के सब जास मै सोई नायक जानु अनुकूल दछन सठ धृष्ट पुनि चो विधि ताहि बखानु २८ अर्थ: ते नायक चार
प्रकार ना अनुकूल दछ सठ वहे धृष्ट पुनि अनुकूल दछन सठ धीठ ४ २८ दूहा प्रीति करइ निज नार सुं परनारि निम
तिकूल केशव मन क्रम वचन करि सो कहिइ अनुकूल २८ अर्थ: अनुकूल लछण वर्णन पोतानी स्त्री सुं प्रीति करि प
रनारि थकी वेगलो रहइ केसव कहे भइ मने वचने कर्मे करीने इ परस्त्री संगात न करे तेह पुरुष ने अनुकूल कहीई २८ प्रथम
प्रथमानुवि नानायका श्रीजी प्रतें कहे छे
अनुकूलो जथा अथ कवित्त: और के हास विलास न भावत साधन को यह सूद्धस तावे बात कहइ सपनें नि वहे हरि को ऊ +भु+
कऊं कहु सो धन मावे आसन बास सुबासन भूखन केशव क्योंऊ थहे बनि आवे सो बिनु मानऊ मातु नहीं विरकि धें यह +काहूसौं
प्रीति कहावे २० अर्थ: बीजी स्त्री ना हास्य विलास तेहने गमें नहीं साधु पुरुष तो एह वो स्वनावजु इ जे बात कहे ते तेहनो
निर्वाह पामें कस्से ने वली न कस्से एम न करे कोय तेह तो मार न यांम इ आसन कहतां शय्या बास जे वस्त्र सुबास ते सो॥
धें न भूषण ते आभरण गरहणा एतला बाना से थी किहा थकी बनि आवइ अपित्तु बनि नावे ज ठकुराणी कहे भइ जो मो विना
पानी बी मीकिहां आरोगे नहीं तो सखी कहे भइ ए प्रीति कहवाय केवेर कहिवाय २० अथ कवित्त: केशव सुधि विलो
चन सुधि विलोकन कै अवलोकि सदाई सूधियें बान सूनें सुमुखें कहि आवति सूधियें बात सुहाई सूधी सी हांसी सुधानि॥

मुख व
खिसो मुख सो खिलई सुधा की सुधाई मुह सुताउ मबे सजनी बसके से को एअति टेढे कुमाई २१ हवे के भाव कवी कहे छे इ ।
सुधा कहता पाधरा लोचन पाधरी दृष्टि जू एम दाई पाधरी वात न होइ ते मात ले सम जीवात कहे पाधरी वात होइ ते गमे वली हसे
ते पाधर सुधा निधि जे चंद्र मा ते हता सरी मुख मुख छइ का जे हतुं टेढी मांजे टली पाधरी वस्तु ने तली सोधी ली धी सुधा नाव इ सू
धा पाधरा की धी एह वात सुता ने वा की इ कि मवस की धी २२ अथ कवित्त: मेरे नो नाहि न चंचल लोचन नाहि न के सव बानी सु
हाई जातु न भूषन भेद को भावन भूलि हू मैं नही मोह चटाई लोरे जू नाचि न यो हरि ओर लो यो धन करै हू हलाति तु गाई रंच
+व+ कतो चतुराई नही चित न का कुल ये शिखा कहे तें माई २२ अर्थ: हवे राधाजी उत्तर आप इ छै ।। राधाजी कहे छे इ हे सखी माहरे ।
लो चंचल लोचन न थी अने मुख ने भूषण काहि परहरी जाणु नही मेंलूलि री सव हवी न थी मइ कहा हूं करीने इ हरिसामो ।
जो यो न थी अने लोक माहरा निंद्या करे छइ माहरा चित्त मां एक इ चतुराई न थी तो माई कां कुतइ की सवरा की धा २३ अथ
दछनलछन दोहा पहिले सुख ये तु हे तु मद सहज वनाई कोन चित्त चलेहू ना चले दछिन लछन जान २३ तेह ने दछन ल ।
छन ना नायक कहीइ जेहनो चित्त चल्यो होय तो हि एतलो वाना न चलइ जे पहिलुं होय ते मा थी कांइ उखुं थाय नही जेतली
य कानी वीह कूइ ते तली राखइ पोताना कुल नी लाज छै ते मूकें नही पोतानी वनाई मूंके नही २३ प्रछन्न दछिण यथा कवि
त्त: हरि मेंहि तुम सो अमन लिहि जे नको जें मानता तोक रिहो यइ कूते हो त हि तहा ता ए लोक में अलोक आनि नी के कुल गातु
हे सीता जू को हू न गीत के से उर आनीइ आमिन जो देषीय न सोइ साची के सो दास का न नि की सूनी साची क बकुन मानीइ गो
कुल की कुलटा ह्वै यों ही कुलटा वनि है आज लों ते वे सें इ हे कालिंकी न जानीइ २४ अर्थ: राधा जी राषीनी वात सामलीवि चा
र करे छे ।। हे मन हर सिरी पाहि तका रीनो त्रमतू ले मन मां जाणी इ नही जो आणी इ तो ही या माहि हे उनी हाण था इ अने तो ४
कने कू माने लो छन लगाम इ के हनी परे जिम सीता जी ने धोवी इ कलंक जे रावण ना घर मां दोइ मास रही तो ही राम चंद इ ।
x या । घर मां राखी लो एकांइ तलाम तु थइ मां आली आमित न आली ने माटे जे वात आपें दीषी इ ते साची कान नी सांभली सांची क ।
हीइ न मानी इ गोकुल नी स्त्री यो ने कांइ म व ला तु आ व तू करइ आज नी घणी सूधा तो हरि छै ते ह वा छइ कालि नी तो जाणता न थी ।।

---

२४ अथ प्रकाश दछिणो यथा कवित्त: चितचौ पचि तें बेकी तें सी अहें अरु तें सी ही लतिन रातिप नें अरु तें सें ही ई कोमल बोल
गुपाल के मोहतहे तहि लतिम नैं गुनतें में ई हास विलास म बे जति जे सें इ के भाव को नग नें भामि तु कहि आनि वधू के अ ।
धीन है सापर तीक किओ से रूप नें २३ अर्थ: राधा जी सषी प्रतइ कहे छे इ हे सषी प्रकृजी न इ जो या नी चोप पाधरी वइ ते हवी
छे जे हवी बीह क सदाई माहरी आण ता ते टली ज आणें छे अने जेहवा वचन कुल ता बोल ता ते ह वा ज बोल इ छइ तेज लतिम
न ने मोहव मृ जा वइ छइ हास विलास ना गुण ते हज छइ जे ह वा ह ता ते ह वा छइ के भाव कवि कहे छे को ई लषी न सके भामि
नमे कहो छो जे मर स्त्री ने आधीन छे हरि ना एवा तनी तो प्रतीत कांइ स्वप्न मां हे आवे नहीं २६ अथ प्रकाश लछन कवित्त:
वही अंतर गुढ अगूढ निरंतर काम कला कुल को तु गने के भाव हास विलास म बें व्रतिउ सवठे रस रीति स नैं । जिन को जी
उ मेरे ही जीइ जा यें सषी काय मनो वच प्रेम प नें तिन सो कहि आन वधू के अधीन हे सापर तीक किओ से रूप नें २५ अर्थ: हवे ।
राधा जी सषी प्रतें प्रत्युत्तर कहे छे ।। वहि कहता वाह्य: अंत: कहता अंतर गत गूढ कहता गुप्त अगुढ कहता प्रकाश एछ वा जे ।
निरंतर कामकला ना गुन ते को इ लषी सके न ही के सव ना जे हास विलास ने दिवस दिवस प्रत इ वाधइ छे ते रस रति समे
जणाव्या हो य एह वा छे जेह ने जो जीव माहरे जीवा में जीव इ मन सा वाचा कर्मणा जे सषी ते ह जे कहो छो जे अन्य ने आधीन छइ
ते प्रतीत स्वप्न मां हें नो हे तो प्रत्यक्ष एवात किम होइ २७ अथ भाव लछन दोहा मुह मीठी बाते कहे निपट कपट जिय जानु जा
हि न मन अपराध को भाव करि नाहि विषानु २५ अर्थ: मुह मीठी वाति करे अने हीया माहि सवल कपट राषइ अने अपरा
ध करयो होइ तो ही वी हे नहीं तेह ने भाव नायक कहीइ २८ अथ प्रछन्न सवया कवित्त: रुचि पंकज वंदन वंदन कंचन रंचन
रोचन कुं की व चीक ही ए किहि कारन को इत लाइक काम रनामिनि सो हन वी अनुमान तु हो अभि आलषि लाल ए नाहि न राति
के रोम रची न तु ने रे वियोग तप्यो तन लोतिहि मान कूमो ही यमा हि लची २६ अर्थ: एक दा मे राधा जी बे ठां छे कांइ उजागरो को
इ ली सतलों व सें आंष्यो रातां थई छइ ति हां भाव नायक आव्या पोतानो अपराध जाणता न थी राधा जी ना नेत्र व षाण करे छे तुला
।।राने त्र एह वा दी से छे एह वारा ता कमल थकी अधिक छे रक्त गोरोचंदन सिंदूर अथवा गुलाल ते थकी कंचन थकी य

Dr BHAU DAJI

ए अधिक छे तेनो पणु बारु दीसे छे पलन मरबटावी छे ते केशव कहे छे एह बोहरां नायक छै पण छे वली आं षोरानी जोई नइ अनु
मानक रुबउं एकांइरी सेंरानी थई नथी प्रभुजी कहे नातो किम थई तमारुं स्वरूप माहरा हीयामांहि थी नीसरतो नथी तेऊं आ
जतन थी अंगोगारस्यो ते माहरो हीयो तसारें वियोग ठइ बल्यो ते ऐं तापइं तसारी आषि रानी थई ३५ अथ प्रकाश शठ यथा:
कवित्त: कान्ह ४ निके रंगे रंग नें ननि के डोलें संगना सा अंगरस नाके रसही समाने हो और गूढ़ कहा कहूं मूट हो जू जाने जा
ऊ प्रीति रूठि के सब पसनी के करि जाने हो तन आनि मन आनि कपट निधान काऊ सांची कहो मेरी आनि काहे को मरा ने हो
बे तो हे बिकानी हाथि मेरे ऊं तुमारे हाथ उ मथुजनाथ हाथ काहू के बिकाने हो ३५ अर्थ: नायक नइ सषी कहे छे इं कांनने
रंगे एक संघानें रंग्या छे बीजी नें नेत्र रूपणी दोरीइं बांध्या जावो छउ नासिकाइं त्रीजी नें स्न गंधथइ मोस्या छे चोथीने बो थी स्न
बाते लागा छो तन ते जे शरीर ते अलगु बीजो गूढ गुप्त अर्थ ते स्नं कही दे षाउं पणऊं जमुर ष छउं तो हें तमने उत्तम प्रा प्रीत टक
हतां सो टासट कहतां कठिन के सोराय तमें रुसी पवइं उत्तम प्रान न अलगु मन अलगु एह वाक पट निधान का क साउं कहो
माहरी आणकहो इस्या माटे बीह ना छो ते एवा पनी माहार हाथ वेचाणी ऊं ता तमारे हाथ बेचाणी पणि ब्रुजनाथ तमे केह नइ
हाथें वेचाणा छो ४० अथ ह प्रछन्न दोहा: लाज नि गारि ऊंमार की छोनि दयो सब त्रास देख्यो दोषन मानही इष्ट स्न केशव
दास १७ अर्थ: कोई मारें तो लाजे नहीं गालि दीजे तो लाजे नहीं वीहक सगली हाकी मुंकी छे दीठो दोष माने नहीं तेह ने केसव
धाव कहे छे ४१ अथ कवित्त: ने ऊलरें लेलें लाजन लाजन कौन गनें दषि ह्धय मवाए गारि दए नेह सेंवर जैं घर आवत है जा
तु बोलि मवाए लाज की और कहा कहौं केशव जे स्न निनि तु म वेगुन वाए सांमपिये ई न की मेरी माई कोहें हरी आंठो गांठ अ
वाए ४२ अथ प्रछन्न दोगलक्षण॥ अर्थ: जसोदा आगलि गोपांगना उलं लो छे छइ हे माताजी ष तन थामां थण न स्या पात्र लां
जे छे तमारो पुत्र ते अन्य रूधन थाद ही बाजी मीवाई तेह नो स्नं गणीइं गालि दीजे तो ह सें अने वारीइं जे इहां माव स्यो तेदी हाने ५
जाणीइं ते दीसो कछु होइं एम आबीऊं स्तार हे बीजी लाज नी वात छे ते स्नं कहीइं जेनला गुण सांभलीइं नेनला एह मां छइं
माताजी एहनुं को यउ परिमन करो ए हरी आंठे गांठें अगाव का छे ४२ अथ दोहरो मनसा वाचा कर्मना चित्त व निहसनि स्न

लेष चलनि चातुरी आतुरी आंठो गांठि विशेष ४८ अथ प्रकाश हृष्ट: कवित्त: सोऊ को सोच संकोच न पांच को मोल न तसाऊ स्तये
करि बोरी बैननि वंचक ताई रचि रति नें ननि की संग मोलन मोरी लाज करें न मरें हित हांनि नें आनि अरें जियजानि कि तोरी
नाहि न केशव साषि जिन्हें बकी ऐसें निसो डुष वै मुषकोरी ४९ हवे नायका नायक प्रतइं कहे छे जेह नें समष्या स्न तो विचा
रनहीं पांच मांणस मांहें संकोच न नहीं करें हीन ना हाणि थकी बीहें नहीं आवीनें आगा बेसे इसजाणे छे एकाइ जाण तो न थी ऊंल
तोला छे पिण ऊं बोलु नहीं केशव जेहनी पांच मांहे लाज नहीं शाम नहीं ते स्नं बोलीनइ मुह डउ डुषवा आणइ ४२ दोहरा बर
नऊं कवि नायक साथें नायक हे अनुसारि सब गुन नायक नायका स्न निअब बऊं न प्रकार ३० अर्थ: कवि नायक नइ के
सोदास नि लेइ ले अनुसारें नायक संग ला वर्णव्या हवें नायका नो लक्षण सर्व गुण ला यक तेह ना अनेक प्रकारें तेद कऊं ते
सांभलो ४४ इति श्री मन्महाराजकुमार इइजीति विरचितायां रसिकप्रियायां चतुर्विध नायक प्रछन्न प्रकाश वर्णनं द्वितीय
प्रकाश:॥२॥ अथ नायका जाति लक्षण दोहरा नानायक भ की नायका गुंथि नि तीन प्रमानि स्वकीया परकीया अवर स्वकी
या परकीया आनि ४५ अर्थ: ते नायक नी नायका गुंथे त्रिण प्रकार नी कहे छे इं एक स्वकीया १ बीजी परकीया २ त्रीजी सामा
न्या ३ स्वकीया ने पतिव्रता परकीया ने विनचारिणी सामान्या कहवां परे शान बेश्या कंचनि ४५ दोहरा प्रथम पद्मिनी चि
त्रणी ज्यु वति जाति प्रमांण बऊंर संषिनी हस्तिनी केशव राय सुजानि ४६ अथ नायका तचनें जातिलछन पहिली पद्मि
नी १ बीजी चित्रणी २ त्रीजी संषनी ३ चोथी हस्तिनी ४ केशव कवी कहे छे इं ४६ अथ पद्मनी लक्षण दोहरा: सहज स्न गंध स्न
रूप गुन पुन्य प्रेम स्न षदान तनु रनोज न रो सरति निद्रा मानु वषानु ३ अर्थ: सहजें शरीर मां स्न गंध ना ऊइं संदर स्वरूप
ना ऊंइं पुन्य उपरि प्रेम होईं दान आप्ये स्न ष पामे अनि वलीए छवा ना थोमां ऊइं ते कहे छे एक शरीर स्न न्म होइं १ बीजो आ
हार अल्प होइं २ निद्रा थोडी होइं ३ रीस थोडी होइं ४ मान ने अहंकार थोडो होइं ४७ दोहरा सहज स्न बुद्धि उदार मृदु हास बा
स स्न चि शौच अमल अमोल अनंग गत्न पद्मिनी हाटक रंग ४८ अर्थ: शरीरें सलज्ज होइं उदार पणुं होइं हास्य करतं होइं व
स्त्र पवित्र राषइं शरीर पवित्र राषे स्मर मंदिर निर्मल राखइं पद्मिनी नो रंग स्न वर्ण नो सारी षु षो ऊइं

४८ अथपद्मिनीकवित्त ॥ हसतकहतबातफूलसेझरतजातओठनूरिहावभावकोककेसीकारिकापद्मिनीनगीस्फवारि।
आसूरीसूरीनिहारिवारिमासंकिंनरीनरीगवारिनारिकानायकाहाथैंकिजातुंबलिजातुंकेसोरायरचीबिधिएकबुजलोचन
कीतारिकातोरसैलवतअतिलाषलाषभांतिदिमचंपेकेसीकलीवृषभानुकीकुमारिका ४९ अर्थः पद्मनीलक्षणं ॥ हस
तांबातकरतांजाणीइंमुषथीफूलषरेछेएहवोपरिमलआवइं ओठकहतांगुमन्नूरिकहतांझांझोएहवाजेहावभावतेणइंका
रीजाणीइंकोकशास्त्रनीकारिकाजनोहेंएहवीदीसेछेपद्मिनीकहतांनागपद्मीनगीकहतांपर्वतपुत्रीएहवीधणुरूपीछइं
असूरनीस्त्रीसुरीजेदेवतानीस्त्रीकिंनरीकहतांगंधर्वनीस्त्रीएसर्वमांजीरूपरिंझनारीनांषीइं लोगमारजेमनुष्यनी।
स्त्रीतेएआगलिसर्वतेकनेरूंकेहवीथइजातुंकेसोरायबलीहारीजातुंविधिजेब्रह्मातिणिवृजरूपीपुंजेलोचननेतेहनीतारि
काकहतांकीकीसरिषीछेदेवतानांमनोरूपीआनसरातेलाषलाषभांतिएकेमेनमतांहीनइंछइंपणिएहवृषभाननीकुं।
अरिंचंपानीकलीसरिषीछेजिमचांपानीकलीइंभमरोवेहीनसकेंतेहनीपटेंपलगेंदेवतानांमनोरथभमुहुचाखाकेंनहीं।
५० अथचित्रणीलक्षणदोहरा नृत्यगीतकबितानिरुचे अचलचित्तचलदृष्टि बहिरतिअतिस्फरमजल मधुमंधगंधकी
सृष्टि ५ अर्थः नृत्यगीतजेहनेंवाह्लोहोइ अचलचित्तचलदृष्टि चित्तजेहनुंअचलहोइ दृष्टिपणिचंचलहोइ अनेंबाह्यर
तिच्यारप्रकारनीछे आलिंगनमर्दनचुंबननखनखक्षतएऊपरिप्रीतिहोइ अनेंसुरतिनुजलतेहनोमधुसरिषो।
गंधहोइ ५१ दोहरा विरललोमतनुमदनगृह नावतनसकलसुवास मित्रचित्रप्रियचित्रणी जानऊकेशवदास ६ अर्थः
मदनतुंजेघरतेऊपरिरोमथोडाहोइ सौंधाऊपरिप्रेमघणोहोइ मित्रतुंचित्रामणवातुहोइ केशवदासकहेंछेतेहने
चित्रणीकहीइं ५२ अथकवित्तः बोलिबोबोलिनकोमनिबोअवलोकनांकअवलोकनजाने नाचिबोगाइबोबिनुबजाइ
बोरीझिरीझाइबोजानतितीनोंतेंरागविरागनिकेपरिरंभनहासविलासनितेंरतिकोनें नोमिलतोहरिमित्रहिकोसषिओमें ६
चरित्रजोचित्रमेंहोतें ७ अर्थः आषीइंचित्रामणमांनायकनुंरूपआलेषीनइंदेषाडुं नायकानेंदेषीनेंप्रत्यक्षथयाआषीनइं
कहेंछइंजेआषीजोएचित्रबोलायोहोततोऊंसांलततते प्रीतइंऊंजोअत अनेंतेपणिमोसाम्हत्रेजोअनतरागकहतांप्रीतिवि

रागजेअप्रीतितेहनायपरिरंभनजेआलिंगनहास्यजेहसवुंविलासजेरमवुंतेरसमांहेंकिहांथी वलीनाचवुंगायवुं
वेणवजाववुंरीझवुंअनइंसाम्हानइंरीझवुंजोजेजाणततेहरिमित्रमिल्यानुंसुषऊपजत जोएहवाचरित्रचीत्रणी
मांऊपजंत ५३ अथशंषनीलक्षणं दोहरा कोपसीलकोविदकपट मजलषालामशरीर असनवसननषदानरुचि।
निलजनिसंकअधीर ७ अर्थः शंषनीकोपसीलकपटतेहजवडाइ शरीरस्वेदफलहोइं शरीरहरूअमाहोइं।
शरीरेंरातावस्त्रऊपरिप्रीतिहोइ अनेंनषक्षतऊपरिप्रीतिहोइ अनेंनीलजहोइ अनेंनिःशंकहोइ केषकीबीहेंन
ही अनेंअधीरहोइं कविजनलखावंतहोइ ५३ अर्थः दोहरा षारगंधजलतमारजल नसन्यरिलगहोइं सुरतारतिअ
तिशंषनी बरनऊकविजनतोअ ८ अर्थः षारनागंधसरषीगंधिवीर्यनोऊइं केसवदासकहेंछेएतलोलक्षणहोइ
तेहनेंशंषनीकहीइं ५४ अथशंषनीलक्षणं कवित्तः जातुनहींकदलीकिगलीनितलीविधलिबदरीमुऊलावें आद
रसोअतिआदकेपातसंहूबदेहरुचिकंऊपजावें जोकोउकेसवनागलवंगलतालबलीअवलीनिवरावें भारिकर
षषवाइमरइकोऊंतंटहींउटकंटेरोहोलावें ९ अर्थः तेहनेंकेसवदासऊंटनुंदृष्टांतआणीनइंवर्णवइंछइं ऊंटके
लिनीवाटिंजाइनहीं उत्तमवस्तनेंऊलषेंनहीं बोरसीमामुहघालइ आदानापानमांमांझझोप्याररापइं रूषजेशेव
तेनुंमोबुधेंकरीषाइं पणप्रसन्नथाइंनहीं केसवदासकहेंछइं कोइनागरवेलिनांषेंलविंगनीलतानीफाटिल्खरीने
नीरइंतोहीप्रसन्नथाइंनहीं ऊंटनेंतेऊंटकंटोइजनावे तिमशंषनीनेंतेमनीवस्तुनावेंनहीं नंरवीवस्तुउपरिस्नेह।
घणोराषें ५५ अथहस्तनीलक्षणंदोहरा स्थूलअंगुलीचरनमुष अधरस्तऊटिकटिबोल मदनसदनकंदकंधरा
मंदचालिचितलोल ८ अर्थः जाडीअंगूलीहोइं पगजाडाहोइं मुषजाडंतेषोबनहोइं होठजाडास्तनरिजाडीदांतमोटा
कटिजाडीबोलइंतेसादजाडा कामनोघरमोटोजाडोहोइ हृदयजाडोहोइ कांधजाडोहोइ चालिमंदकहतांहळलवीहो
इ अनेंचित्तघणुंचपलहोइं ५६ अथदोहरा स्वेदमदनजलछिरदमद अंषितत्यरेकेश अतिनीवनबऊलोमतन।
जनिहस्तिनीहरवेश ९ अर्थः स्वेदजेपरसेवोकामनुंजलछुरदजेहाथिनिहनामदसा

विषोगंधमयैं केसजेतेकमराहोइ कहतांबीकणानहोइं आरीरेंसआंमांजाआहोइं तीलक्षणकहतांकांटासरिखाहोइं एहवां
लक्षणहोइं तेहनेंहस्तिनीकहोइ ५७ अथहस्तिनीयथा कवित्तः सबदेहदईदुरगंधमईमतिअंधमईमसुपावनकों
मैं कचुसालतेलोमविशालसिहैं अतनानमनकेसबबोलअनेसें अलियोंमलिनीनलिनीतजिकेकरिकेकपोलनिमं
डितातमैं छिनिछोमिकेराजसिरीवरपायनिरेंपदराजविराजितकेसें १२ अर्थः हस्तिनीनीदेहमैंधीदुगंधहोइं अ
नेजेबुद्धिझानीमतिकामइं अंधथइहोइं तेहस्तिनी अंगस्मषपामइं तेमासेंस्तेथकें मोलनामूआजाएहवाखुचें जाणी
इंजोरमीनाकांटा अनेंमनजेकाकनेमोटाहोइं तेहनानामजेआतरणअनेशागारबादीमें वलीजेतमरातेसरिखा
मलिन नलिनीजेकमलिनीतेहनेंतजीनेंकरणीजेहाथिणीतेहनाकमोलगूतमरिजईनइंबेसेंबइं तिमछिनिछघ
वीतेहनीराज्यपदवी अंगीनेंनरकनुसाधनकरइ तिमनायकजेतेयचिनीनेंतजीनेंहस्तिनीनेंसेवइंबइं ५८ अ
थदोहरा तानायकनीनायका ग्रथनतीनप्रमान स्वकीयापरकीयाअवर सामान्याप्रनिआनि १३ अथस्वकीया
लक्षनदोहरा।। संपतिविपतिजूमैरनेहसदाएकअनेंहार ताहिस्वकीयाजानियअ मनक्रमवचनविचार ५९ अ
र्थः संपतिकुइंअथवाविपतिहोइं पिलसदाइएकरंगहोइं नरनारनीसेबानेंविषइनत्सरअइं मनसावाचाकर्मना
इंतेहनेंस्वकीयाकहोइ ५९ स्वकीयानेदलक्षणं दूहा मुग्धामध्याप्रौढगति तीनकेतीनविचार एकएकनीजानियअ
चारइअनुहार १४ अर्थः स्वकीयानात्रिणभेद एकमुग्धा१ बीजीमध्या२ त्रीजीप्रौढा३ एएकीकीनाच्यारच्यारभेद ६० अथ
मुग्धाभेद दोहरा।। नवलवधूनवयौवना नवलअनंगानाम लज्जालीएजूरतिकरैं लज्जाप्रायसवास १५ अर्थः ते
हनेंनवलवधूमुग्धाडाहोवें तेकहेंबेंयेएहनीदिहाडीविमलीकांतिवाधतीजायें तेहनेंकवीवर्णवीशाकेंनहीं ६१ अ
थमुग्धालक्षनदोहरा।। तामेंमुग्धानवलवधू कहतसयानेलोय दिनदिनजीकतिबढें बरननसकेंकविकोय १६ ७
अथमुग्धालक्षनंकवित्तः मोहिबोमोहनकीगतिकोगतिहांपढीबैनकहाबेंपढेंगी उपर्योरोजनीउपजेंदिनकाहेंमढें की
आंगीआनमढेंगी नैननिकीगतिगूढचलाचलकेसवदासअकासचढेंगी माईयंकहायहमायगीदीपतिजोदिनछै।

।।मुखनामनिनीकाहेंमुकतेपुरीसीनाकहासोंहंतनैननिकौंहमनिबनीसीहैं मोहनकेमंत्रनिकेअमरानिकेसीरे लरकूटीमनेषनामनेंदछविछासीहैं चित
कहनांतिबढेंगी ६२ अर्थः श्रीराधाजीनेंकहेंबेंजेकोईमोहननेंमोहकमजावबानीगतिबेंतेतोतुंतणी अनेंहजीवचनें
करीकेटतुंकतणीशातेकिहांलगेंतणीश अनेंताहराउरोजजेस्तनतेहनीजेउपमातेदिहाडीविमलीरवाधइंबें तेहा
णेटांकीश अंगीयाजेकांचलीतेतोंतोहकांशेनहीं नेत्रनीगुप्तमतितेकेशवदासकहेंबें आकासलगेंचढसेंमहीनेमाइ
ताहरूरूप ताहरीविद्याएणीरीतेंबेबेदिहाडेंवाधसेंतोमासेंकिहां ६२ अथनवयौवनामुग्धालक्षनदोहरा सोनव
यौवनभूषिता मुग्धाकोयहवेस बालदशानिकसेंजहां यौवनकोपरवेस ६३ अर्थः तेहनेंनवभूषिताकहोइं जेहनें
बाल्यावस्थाटलीनेंयौवनावस्थाआवीबइं ६४ अथकवित्तः केशवकूलनचीलकूटीकरिलूटितितंबलईबडकाली
बेंननिसौंचसंकोचसोनेनिहिछूटगईगतिहेंचलचालीछोसकधीरधरोनधरोअबलेंतुमकोमिलबोबनमालीबाकींअ
थाननिकासनकोंउरआएछिंजेछिनकेंअबताली ६५ अर्थः केशवकवीकहेंबइंश्रीसीनेवचनबाकरमतइं।।लकूटी।
जेतमूहतेफूलीनेंनाचीरहीबें कटीजेजामीऊंतीतेनितंबेंलूटीलीधी कटितितंबेंकिमलूटीजेकटिमानलीथई नितंब
मोटाथया वयणजेबोलवुंतेहनोविचारआंमा नेत्रनेंविषेंसंकोचजेलाजतेआवी गतिनीजेचंचलताइतेछुटीगईहवें।
एकदिहामांतुंधीर्यधरोअथवानधरो हेवनमालीहमणांतमछोनेंआणीमेलवुं एहतुंबालपणुंकाढवानेंकालइं स्तनरूपी
याथौवननाचोमदारआवावइं ६४ अथनवलअनंगामुग्धालक्षनंदोहरा।। नवलअनंगाहाइसोमुग्धाकेशवदासप्रि
लेंबोलेंबालविधिहसैंत्रसैंसविलास २२ अर्थः केशवदासकहेंबइंतेहनेंनवलअनंगामुग्धाकहीजें १बालकनीपरेंबोलें।
षेलेंबालकनीपरेंहसेमिलविलासथकीत्रासपामें ६५ अथकवित्तः चंचलनहूजेनाथअंचरनएंचोहाथसोवेंनेंअमारिका
अस्मकतोसूबायोजू मंदकरोदीपद्युतिचंदमुखदेखिनतुदौरकेंदुराइआवुहारिस्योंदिखायोजू मृगजमरालबालबाहिरिटि।
गरिदेउनावेंउसकेशवसुमोहिसुननायोजू छलकेंनिवासऐसेंबवनविलासमनिसोंगुनोंसूरतअंतेंस्याससुमपायोजू
७२ अर्थः मुग्धानायकानायकप्रतेंकहेंबें।। हेनाथचंचलथईइंनहीं अनेंअचलजेछेहमोतहाथइंताणोमांलगारेकमसोजि
हांलगेंमेंनामूइं मोपटतोमूआसोबइं लगारेकदीमज्योतिमंदकरीआवुंचंद्रमादीसेंबें लगारेकटलवादो नघाइंसनाबालं।
चडंजोरमटी नबटीडुनिबालिहिबालकताहतिअंगअनंगकीफोजैचटी २

।।धनभूध रिलोचन लोलनामे लीसका मकराक्ष कीकौरैंक टी मध्य माधुरीवा नीबसैंच तुराईसू केसबमो हनताम पटी कुच तबतने तनलाज विराजत धारगहे

चतुराई उठकीसी उठकेसेउ रजुवसउ चेतीनेंनग नउठकी मीहेंके सौदासम पकेंसामा जाबेसदें मीमाला आजुंजौ न देषी सनीजे सीआजु दीमाहें।

कंतेबाहिरकाढीश्रावुं केसेरायजेतमनेंगमुंतेमाहरामनमांगमुं छलनोछेंजतिकासजेहमांएहवाजेवचनविलासतेमां॥
लीनेंरूपामजीथकीसोगुणोरूपथायाया ६६ अथलज्जाप्रायरति मुग्धालक्षण दोहरा मुग्धालज्जाप्रायरति वरनतकविइ
हरीति करेजूरतिअतिलाजसों पतिहिवढावेप्रीति २३ बालीतेहलाजप्रायरति मुग्धाकहीयेंइ जाजीलाजस्मरतिक
रे अनेंसं२ जीरजेपतीतेहसुंप्रीतिबधार ६७ अथकवित्तः बोलीनबोलबोलाइराहुंहरिमाइपरेअरुतेलीतेजीकेजा
वतेटवेंकीतरिअकबुमाइरहेंजकमेंईमेंनबोमीमधिचितेवेकुंकेतेकीयोसिरवायितवाईअंगूठतिवीमीमेंतरि
चित्ततऊचितयोनरहीगहनैननिलाजनिगोमी २४ अर्थः मुग्धानायकाशयिआगलिवातकहेंछें।हे स्वामीआज
प्रभुजीश्यानेविषेमुजनेबोलावीबोलावीरसापिणजबोलीनहीमाहरेंपगेपणलागाबोलापणपांथस्याबलीवाजु
रजीइंआलिंगनलेवानेंकाजेंअनेकवातांकीधां पणिमेंहठमुक्योनही बलीप्रभुजीइंसाहसजोवानेंकाजेंमाकंचावी
नेंहसवचीत्रंवीकीधी तोहिमणमेंसारीपवेंमाहाप्रभुजोअंनथी अनीलाजमाहरीआंष्योमांआवीबेठी ६८ अथमुग्धा॥
कोसयनु दोहरा मुग्धासोइरहेंनहीपियसंगमनजअजानज्योंकोहुसवहिमबीअपनताहिसमान २५ अर्थः
मुग्धाकांईपीउपासेंसूईरहेंनही अनेजोकोईवाहीनेंस्वामीसूआरेतोतेसमान कांइसंसारमांअपनहीं ६९ अ
थमुग्धाशयनलवनं कवित्तः पाइंपरेमनुहारकरेपलिकापरपाइधरीनयनीनें सोयगईकहिकेश्रावकेसेअ
कोरहिकोरिकसोंहनिकीनेंमाहअकेंमुषसोंमुषदेंछिनमेंहरिमांनिसबेंअपलीनें एकतुसासनिकेंतसेंसिग
रेइस्वासविपाकरिदीनें २६ अर्थःपगेलागीरमनोहारिकरीकरीनेंप्रभुजीइंसाहसकरीनइपलिगउपरिपग
धर्योतेहनयनीतिषकीधर्योकेश्रावकहेंछेंसषीइकोठिकोठिसमरी थंतिवारेंएकेंकोरेंसूतीतिवारेंप्रभुजीइंसा
हसकरीनेंमुषचुंबनादिककीधं बलीमाहसस्कहताबलेकरीनेंसंजोगकीधो एटलामांप्रभुजीइंसघतुंअपमा ६
नीतीथं तिवारेंजुमामाजीइंएकनोकोंसासोमेल्यो तिवारेंअपमांहिंथी अंगंधवाल्यो तेपरिमलेंकरीनेंसंधईअगंधट
काइगया ७० अथमुग्धास्मरतांत दोहरा॥ मुग्धास्मरतकरेंनहीसूअेसमनेंअअपमान छलबलकीनेहोतहें अप

सोताम्रहानि ४६ अर्थः मुग्धाकांइस्मरतकरेंनही सूयेथकेअपमांनवुं अनेंछलेंबलेंकरीनिंकीजेंतोअपसोनानीहा
निथाय ७१ अथमुग्धास्मरतात कवित्तः अनुदेखाधीनिबीचिअहधाइल्यायकेंथवायकबुकीनीअअबरबअबस
हेंकोमलिमृनालिकासीमलिकाकीमालिकासीबालीकाजआरीमीमिमानअकेंपसहेंजानिनविलातनयोकेसो॥
अनेकोवातदेषोआनिगातुजातुनयोकिधेंअअहें चित्रकीसुमारिरापीचित्रमीविचित्रगतिकहोसंतएरमिकया
मेंकोनरसहें ५७ अर्थः प्रभुजीइंबलात्कारेंस्मरतकीधं तेश्यामीउलेंनाठेछइं एमबीमारमतीहतातिहामेंअनेकस
षदीधं निमकस्योतिमकीधं कमलनीमांदलीयेंकोमलमालतीनीमालथकीकोमलएहवीबालिकातेहनेंतमेंतुसीनांषी
तोमनुष्यनीरीतिकेंपसूनीहजीजगेंअचेतपणीछइं इमनथीजाणतीजेविहाणुंवायकेंरातिछेकायवातस्वादमांनलो॥
तिनथीआवीनेंजोयोजेदेहीमांप्राणछइंकेंनथी एहवीबीत्रणीनायकाविपरीतिगतिथईनइंचित्रामणनीपठेथईपणी॥
छेंकहोजीनवारसीयाएवातमांस्योरस ७२ अथमुग्धाकोमान दोहराः मुग्धामानकरेंकहोकरेंतुअनजनिदानज्योंम॥
रबाइबुमाइऐंजोमरपेंअग्यान ५८ अर्थः मुग्धानायकामानकरेंनही जोमानकरेंतोतेहनोउपाकरकजुतेसांतलि बालक
नीपठेंबीहावीनेंमुकीइं अग्यांननीपठेंबीहानेंमानमुकें ७३ अथमुग्धाकवित्तः बोलेंनबालबुलावतिअनमरेंषलेषेंक
वपैंमपरेषेंआपनोहाथविलोकिविलोकककोलतवाकसबबुधिविजोंषें छोडीबनीक्षिधिरेषलषीजगायेंआयुकिरेषअ
कोनजलेषेंप्रेमतेंबोलसलोनपस्योअजुलाइकसोपियदेंसाहेदेषें ५९ अर्थःएकसमेंनेंविषइंराधामानकरेंछइंप्र
भुबोलावइंछइंपिणबोलतानथीतिवारप्रभुजीइंबुद्धिकरीकीधीपोतानोहाथजोईजोइनेंथरतीयेंरेषाकाठवामांमीअ
तेंकेहवामांस्कंजेविधातायेंहाथमांरेषाकाढीछइंकेटलीकनान्हीकाढीछइंकेटलीकमोटीकाढीछें तेमांआफदीर्घनीरेषा
तेकहीहस्येंनान्हीहसेंकेंमोटीहस्येंतिवारेंप्रेमेंकरीबोलथमीरहवानही आकलाथईमांनमुकीनेंकस्केंप्रीयजुजोउं॥
हाथनीरेषाकेहवीछइं ७४ इतिश्रीमुग्धाधिकारसमाप्तं॥ अथमध्यादोहरा मध्याआरुढयोवना प्रगलभवचनाजानि॥
प्रादुर्भूतमनोभवा सुरतिविचित्राआनि ६० अर्थः तेमध्याचारप्रकारनी प्रथमआरूढयोवना १ बीजीप्रगलभवच

नाइ त्रीजी प्राउर्द्धतमनोतवा ह बोधी सूरतविचित्रा ४ ७५ अथ मध्य आरूढ यौवना दोहरा मध्य आरूढ यौवना पूरन
यौवनवंत लागसुहाग लरीसदा लावत है मनि कंत ४८ अर्थः केसवदासकवि कहै छै पूरन यौवनवंत छइ सदा
ई लाग्यसी लाग्यें लरी छइ सदाई कंतनें गमें ७५ अथ कवित्त चंदकैसी लागा लालत्क छटी कमान एसी में न केसै पै नेस
रनेंननि विलासु है नासिका सरोजगंधवात सें सुगंधवात दासी सैदसन के सोवाजूरी सुहासु है लाइ एसी ग्रीव तु
लपात सोउ दरू अरु पंकजसै पाउ गति हंस की सीजासु है देषी है गुपाल एक गोपिका मैं देवता सी सोने सो सरीर सब
सौधेंकी सीवासु है ५० अथ ग्राषी नायका आगलि कहै छै हे महाराज आज गोपिका मैं दीठी देवता सरीषी छै तेहनो ला
लजाणी इ चंद्रमा सरीषो छै कमाणसरषी कटाक्ष जाणीइ कांमना आणी आलाबाण अने नासिका जाणीइ कमलनी क
ली मुषनो वास जाणीइ मलयाचलनो वायरो एहवो मुषनो सुषगंधवाय दाडिमना बीज सरीषा दांत हास्य जाणीइ वी
जली कोट जाणीइ संघाते ऊनारी छै तूज संघाते ऊनास्या छै उदरनो पान सरीषु कमल सरीषा पग दीसे छै चाल जाणी
इ हंसना सरषी सरीर सर्व जाणीइ सोना सरिषु परिमल जाणीइ सोधा सरिषो ७७ अथ प्रगलभा वचना मध्य दोहरा॥
प्रगलभ वचना जानि तिहां वरनउ केसवदास वचननि मांझि उराहनो दइ देषावइ त्रास ५१ अर्थ केसवदास कहै छै
नता। तेहनें प्रगलभ वचना कहीइ जे बोलता मांजउ मेलतो दइनें बीहक देषाडे छै ७८ अथ कवित्त: कांइ ऊनतेऊ न तेऊ गताओ
तले वहि नें ननि के रंग रागे जासु मो तुही सवहो उसजानउ आपुसे केसव लाल बलागें जाऊ नहीं अहो जाऊ चले हरिजा
तिजि तैं दिनहीं बनि वागे देषि कहा रहे धौं पैंपरे उलटे के सदेषें हि देषहो आगे ७८ अर्थ: नायका नायक प्रतइ कहइ छइ
हे कान्ह लालन ली कमाई करो छो तो तें नने रंगे रंग्या छो पिण ऊजा पुतु जे तमे एम जाणो छो ये सकु को मो सरीषु लालची
इ सें पणि अहीं को लालची छै नहीं जाओ वाल्या जिहां दिहाडी वागा बना वी जाओ छो मुझनें देषानै वली बेषा मांसु मध्या छो १९
तमारी वाट रामुं जोउं जिम आषमीनहीं ७९ अथ मध्य दोहरा प्राउर्द्धतमनोतवा मध्य कङ्ख वषानि तनमन लूषित
सोहए केशवकाम कलानि ५२ अर्थः केसव कहै छै तेहनें प्राउर्द्धतमनोतवा मध्या कहीइ जेहनें शरीर जेहनुं लूष

॥ इथ मम कलन सूचि मंजन अमल वासु जावक सुदेस कैस पास कौ सुधारिबौ अंगराग भूषन विविध मुषवास राग कज्जल कलित लोल लोचनि निहार
पाजेह तुं मन कामनी कला झारषाओ सें ८० अथ कवित्त: आज मैं देषी है गोप सुना एक होइ न एसी अहीर की जाई दे
ष तिहारे हाउ तिदेह की देषें न ओर न देषी सुहाई एक ही वंक विलोकनि ऊ परि वारु विलोक त्रिलोकनि काई केसव
दास कलानिधि सो वर रूप जोइ कासु कै मेरी कसाई ८२ अर्थ: ग्राषी कहै छै आज मैं एक गोपिका मइ दीठी पणि एहवी
अहीरनी जणी न होइ नही दीठइ थकें एहनी छति कांति ने जोई रहीइ बीजें दीठइ को इसु हाइ नहीं एहनुं एक कटा
क्षनुं जोई तुं ते उपरि त्रिणलोक नी सुंदरता वारी नाषीयें केसवदास कहै छै कलानिधि जे चंद्रमा ते सरषो सुंदर
महाकामिक एहवो माहरो काकु एयो ग्य वर घटें ८३ अथ विचित्र सूरतांत दोहरा: अति विचित्र सुरनाम नो जैकै
सूरति विचित्र वरनत कवि कुल कौ कवि नसुन नसु हायो मित्र ५५ अर्थ: तेहनें सुरत विचित्रा मध्य कहीइ जे
हमां सुरत जे काम क्रीडा ते विचित्रा कहीइ अनेक भांतिनी जाणें ८४ मोर ही सिंगार सों मोरही सुरत समान सांत अं
तरित जाणीइ वहरति सात सुजान ५६ छिरति रयक सन मुष विमुष अध उर्ध उत्तान सात अंतरित जानीयें केसव
सकल सुजान ५७ अर्थ: आलिंगन चुंबन नष स्पर्श मर्दन धरदन रवदान अधरपान ए जानीइ वहिरत सात सुजा
न ५८ अथ कवित्त केसोदास सविलास मंद हास ऊन अवलोकनि अलापनि को आनंद अपार है बहरति बार वाह अं
तरति पच कुनि रत विपरीतिनि को विविध विचार है छुटजाति लाज जहां भूषन सूवेस केश टूटि जात हार सबै छिटा
टु वहै सिंगार है कूजि कूजि उठें रति कूजित नि सूनि षगा साई तो सुरत शाषि और व्यवहार है ८६ अर्थ: बाहरति आठ
प्रकारनी छै ते आलिंगन चुंबन नष स्पर्शन मर्दन दंतघात अंतर्गत नी रति पांच प्रकारनी छइ आसन ५ पेहलें दे
तें मां विपरीतासन अनेक विविध विचार छै केसोदास कहै छइ अनेक विलास फु ऊ छइ मंद हास्य संयुक्त जोवउ आ
लाप कहता बोलवुं तेहनो जे को आनंद ते अपार छइ तिहां लाज सें धी छूटी जाइ छइ रतिनो सुंदर जे भूषण ते चुं थाइ जाइ
छइ केस पास सिथल थई जाइ छइ हार जिहां तूटी जाइ छइ श्रृंगार सघला मिटी जाइ छै रतिनो जे शाष्द नें सांभलत जीने
षगा जे पंषी तिणें शाष्द करवा मांड्या हे सषी एहनें सूरत कहीइ बीजे सुरत ते संसार नो व्यवहार छै ८७ अथ सुरतांत कवि
त्त:॥

वो वोल निहसति मधुवाउ राजनति कं कपट म्हपति पुरी वृ पुरमारे वेंके सो ष विला सी कदु ऊ धरि धोदिव छि मोरे ह सिंगारनि सिंगारि बौ॥ उ...

सुंदरता पय मा वक जावक पीक ही एन षवं दन एहै चंदन चित्र कपोल विषु अंजन टूटि सबैं मनि हार गए है केसव नैन नि।
नींद मई मदिरा मद घूमत मोह मदे है केलि के नागरि नागर प्रात उजागर सागर तैत बनए है ५७ अर्थः सषी कहे छे छइ।
नायक तथा नायिका सुरतांत संग्राम करी नइ उजागरो करीन इहां मुहुरी षाटी मैं छै माहें जलज ल स्या छइ चौदर त्र क
ऊ ते किरात रूप सूपीया तो जलज स्या छइ अलता नो रंग छे ते पावक अने पीक ना नरव सूपीया चंद ही यानइ विषइ छ
इ चंदन ना त्रगट ते ते जाणीइ अमृत आंषि ना अंजन ते जाणीइ विषे अने कहार मणी ना टूटी पस्या छइ ते हने विषइ।
हस्ती घोडा आले घ्या छे केसव कहे छइ उजागरे नेत्र मिलता जाए छइ ते जाणीइ मोह रूपिणी मदिरा घूमइ छे ५८ दोहरो
त्रिगरी मध्या तीन विधि धीरा उर अधीर धीराधीरा तीसरी बरनत है कबी धीर ६० अर्थः मध्या नी ह मध्या त्रिणि प्रकार
नी छे एक धीरा कहता मासती बीजी अधीरा कहता आकुली काइक सासती काइक आकुली ते धीराधीरा ५९ दोहरा॥
धीरा बोलै बक्र विधि बानी विषम अधीर पीय मौ देइ उराहनौ सा धीराअधीर ६१ अर्थः धीरा होइ ते वांका बोलै अने।
अधीरा होइ ते विषम षारषी वाणी बोलै अने पीउ ने उलंभो दे ते धीराधीरा कहीइ ६० कबित्त: ज्यों ज्यों अ लाम सों के सब।
दास विलास निवास हिये अवरेष्यो त्यों त्यों बढ्यो उर कंप कछु भ्रम भीत भयो किधौं सीत विशेष्यो मुद्रित है उरगामी बरही
मेरे नैन सिरोज निसा बकले षो सेजु कल्यो कल मोहन को अरविंद सो है सुतो चंद सो देष्यो ६२ अर्थः नायका स्वामी आग।
लि कहे छे नायक अन्य नायिका सुं विहार करी ने आव्या छे ते हना चिह्न अंग नें विषें दीसे छे ते देषी ने माह रुंही उपजे छे अने
भ्रम इ करी ने ते सीत घई रह्युं जाणीइ सीत नो हें एह बुंदीसें छे अने सषी माहरा नेत्र रूपीया कमल बीमाना या इ छे तिणा।
अमाबु जाणुं जेह रितु मुष चंद्र सरषुं छे पिण तुं कमल सरषुं कहती ते षोटुं ते हमांहु सूच षो जे कमल छइ ते निर्मल छे।
५१ अने वइमानतां बनन छइ अधीराय घा तानके सोगान सब बतु बलबीर कोसो मानु को सो मुकु महामोक्षमन ना यो है १०
घतु सो अचतु मीतु अनिल सौं चल चित जल सो अमतु ते ज ते जकै सो गायो है केसो दास बसंत अकास के प्रकार घोष
घर घर घेरु घनो छायो है रति कैसी रति नाथ रूप रति नाथ कोसो कहो के सो राइ रूढ़ो कौन एहि मायो है ६२ अर्थः ना

यका नायक प्रते कहे छे हे नाथ तमारुं सर्व सरीर तमारा बाप ना सरषुं छे अने बलतो बलदेव ना सरषुं छे अवल छे अने म
न तो जल सरषुं छे निर्मल जल छे ते तो महा सुंदर मुष निगमे छे अनइ तमारुं शील षल सरीषुं छे मुष तो तमारी माता स।
रीषुं छे ते तो महा सुंदर मुष नैगमे छइ अने तमारु शील षवील सरीषुं छे निर्मल छे अचल छइ अनइ मन जल सरीषुं।
छे निर्मल छे पिण तमारुं चित्त बाय सरषुं छइ चंचल अने तमारुं जेत ज छइ ते तेजो मय छइ हे केसवराय तमे आका
स ने विषें बसो छो के प्रथवी मां प्रकाश छो घोष जे ब्रज तेह मां घर घर प्रते नइ घट घट प्रते तमारी नि घ्या षाइ छे प्रीति ते साक्षा
त रति सरीषी छइ अने तमारुं जे रूप कामें साक्षात काम सरषुं छे कहो जी आ बुद्ध त रूडुं के हने कने षीसीष्या ६३
अथ मध्याधीराय घा: का कुलले कुलली नम मकाई अ मोह समुद्र को ज्यों उमस्यो है केसव आपु नो मालिक सो मतु हाय।
पराए दे को ने लस्यो है नैन नि ही मिल बो करी ओै अब वैनन कोमिलवो नोरस्यो है जाइ कस्यो तुम्ह जैसें उरा षीसरू ओै अ
गुपाल मै ऐसे कस्यो है ६४ अर्थः का कुल ता जी तला मुष ने नली सम जाबी मोह रूपीया समुद्र नी पर उलल्यो छइ आ।
न केसव आप पुण्य माणक सरिषुं मन पीयारा हाथ मां आपी ने कोलि माकुली धं छे ते मा टे नेत्र न उही जमिला पकर सुं आज
थ की बोल बोनो रस्यो गोपाल तमे जे मुषी आगलि जई ने कस्यु मे सु ए हबुं कस्यु हतुं ६४ इति श्री मध्या अथ प्रौढा ने
दूहा सूति सम मस्त रस कोविदा विचित्र विभ्रमा जाति अति आक्रामति नायका लब्ध पति अनजाति ६५ अर्थः प्रौ
ढा ना र प्रकार नी एक सम मस्त रस कोविदा बीजी विचित्र विभ्रमा त्रीजी अति आक्रामती चोथी लब्धापति ना ६५ सम मस्त रस
को विदा लक्षणं॥ सो सम मस्त रस कोविदा कोविद कहत बषान जो रस मनावे प्रीति महि ता ही रस की दानि ६६ अर्थः को।
विद जे पंडित ते हने सम मस्त रस कोविदा कहे छे नायक ने जे रस गमे ते रस प्रगट करइ ६६ अथ कबित्त: देषि हे गु
पाल एक गोपिका अनूप रूप सो तो तैसें तनी बास सो घने सहाई है सोता ही सुनाय अवता सुति यो प्रन रूपा मकि घै
यह दामिनी कामिनी ह्वै आई है देवी ऊ न दानवी न मानवी तन होइ ए सी मांनि बितु हाव ला व ना र ती पठाई है के सो दास
सब कम षसा धन की सिद्धि यह मेरे जान मैं न ही सो मैं न काढ़ी जाई है ६७ अर्थ स्वामी कहे छे हे गुपाल आज एक गोपी का

मइंदीवी देवांगनाशरीषी अनुपरूपदीसें सोनाषकी तेजतें अधिकछे अनें सघलासुगंधषकी एहनाअंगनोसु-
गंधअधिकोछे अनें हेघनस्यामसोनाछेजकोकहवायेछे तिणेंदेहधरीछइ के दामिनीजेवीजलीतेणीघइछे केना-
कोदेवतानोअवतारछइ के कोइदेत्यनीस्त्रीअवतरीछइ पिणएमाननवी तोएहवीनजरछइ जाणीइंमानपणेवीजा
सेहावनावनेसरस्वतीयेतणाआ हेके सवरायतनमाराजे सघलासुषतेसाधवानीए सिद्धिनहोइ अनेंमाहरेजा-
णपणइं जाणुंछुं मेनयेकामअनेंमिनकायेरतिनेषकीतुपनीछे ६७ अथविचित्रविलमाप्रोढाकहीइंदोहरा॥
अतिविचित्रविलसमसदा प्रोढाप्रगटवषानि जाकीदीपतिहतिकापियहिमिलावइआनि ६७ अर्थः अनेतेहनइंवि-
चित्रविलमाप्रोढाकहीइं जेहनीकांतिहूतिप्रियआगतिकहीदेमानइं ५५ अथकवित्तः हिंगतिमंदमनोहरकेसव
आनंदकंदहियेतमहेहें सोहविलासनिकोमलहासनिअंगसवासनिगाठेगहेहें वंकविलोकनिकोंअवलोकसमा-
सहोंनंदकुमाररहेहें पहीतोकामकेबानकहावतफूलनिकेबिधफूलिकहेहें ६८ अर्थः सषीनायकआगलिकहेछइ
हेकेसवगतिकहतांचालमंदकहतां हसीनासरिषीहलवीछे तेदीठइ षकेमननेहरीलेहें आनंदनाकंदहइयातिविषहइ-
उदयपाम्याछे सुनअनेंनहेंसमें तेहनाविलासअनेकछइ कोमलहास्यसुंदरछइ अंगनेविषइंसुवासायसुगंधतेगाढो
ग्रह्योछइ वक्रजेनेत्रकटाक्षतिलेकरीअवलोकवुंजेजोयवुं तेजाणीइंकामनाबाणनंदकुमारउपरइंनाष्याछइका-
मनाबाणजेकहवाइंछे एहजफूलनाबाणलोककहेछे तेफूलेकहेछे ५४ आक्रामितनायकाप्रोढाकहीइं सोआक्रामि-
तनायकाप्रोढाकहेहेंचितु मनसावाचाकर्मणा जिहिवसकीनोमितु ६७ अर्थः तेहनेंआक्रामतीनायकाप्रोढाकहीइं-
जेणीइंमनसावाचाकर्मणाइंभरतारनेंवसकीधोछइ ५५ अथकवित्तः नोहितनाइवजावतनाचतवारअनेकसिंगारु-
बनायाजीत्रमेंआनकोआनिवोआम्योरीतेरोतअनंतयोमनलायोताबेसतोकरिवोकरिजामिनीजागवमेवसहेकरि ११
पायोकाहूलोंसूधेंजूवाहतिनाहिसुंचाहतिहेंअबपायलगायो ६९ अर्थः स्वामीनायकानेंकहेछे हेराधाकृष्णजीजेगाये
वजाइंछेंनाचेछइ तेताहराहितनइकाजे अनेंअनेकवारसिंगारबनावेछइ तेतुजनेंरीझवानेंकाजें अनेंकोयबीजीनें

वांछतानथी तारोतेहेमनतमनीजतुंनथीताछे नेकसाजकरि विचारिवासिनीतुंमोटानायनीधनीआणीजेवसेंकरी
लीधेकाकनेंअनेहजीलगेंकांकसघातेंसुधइंमनइंचाहतीनथी नेसुंहतुंयगेलगाम्याछांछइछइ ५६ अथलघुपतिल-
नदोहरा॥ सोलघुपतिजाणीइं केसवप्रगटप्रमानकानकरेपतिकुलसवि प्रकृताप्रकृहिसमान ६२ अर्थ तेहनइं
लघुपतिप्रोढाकहीइं कांलिजोउसीआलपणते१सगलीहाकीमुंकी अनेंप्रकृताप्रकृसमानजणावइकहतांनायक
नीबराबरीकरइ ५७ अथकवित्तः आजविराजतहिंकहेकेसवश्रीवृषभानुकुमारिककाई वानिविरंचिवहिकाम
कामरचीकबचीसुबधनिबनाई अंगविलोकत्रिलोकमेंएसीकोनारिनिहारिननारिबनाई सूरतिवंतसिंगारसमी-
पिसिंगारकीएजतुसुंदरनाई ६२ अर्थः तेहनेलघुपतिप्रोढाकहीइं केसवकहेछे आजश्रीराधाजीतुअंगजोइने
त्रिलोकमांएहवीकाईनारिनथी एहवुंजाणीनइंकोटनमावी वृषभानुजीइंजाणीइंमूर्त्तिवंतशृंगारमाससाक्षातसुंदरता-
सजानेंछेवीछइ ६३ अथप्रोढाधीराचषा॥ आदरमांझअनादरहि प्रगटकरेहितहोइ आकृतिआपुंउरावहि प्रोढा-
धीरासोइ ६४ अर्थः प्रोढाधीरातेहनेंकहीइं जेआदरकरइछइ अनेअनादरप्रगटदीसइ अनेंबाजीपोतानीप्रसु-
तिगुमराषइंएवेदप्रोढाधीराना ५५ अथकवित्तः आवतदेखिलीएउठिआगोकें केसवआपुहीआसनदीनों आपु-
हिपाइपषारितलेजलपानकोताजननाइनवीनोंबीरीबनायकेंआगधरेंजबवेहरकोकरबीजनलीनों बाहिगही
हरिएमोकहोहसमेंनोइनोअपराधनकीनों ६५ अर्थः नायकअपराधितस्या आवइछइ आवतादेषीनेंपोतेंउठीआ-
सनदीधुं पोतेंउठीबाजुरनापगपषाल्या वलीजलपाननोमात्रउबुं आणीमुंक्युं पाननीबीडीबनावीनेंआगलिधरीव-
लीवायनामबानेंबीजणोकरमांलीधे तिवारेंहरइंबाहग्रहीनइंएमकह्युंजेमेंतोएटलोअपराधनकीधो ५५ अ-
थप्रोढामाहराधीरा आकृतिगुप्ता अथकवित्त चितवेचितवाइंहसाइंहसोहोबुलाइतेबोलोरहोनितमौनेसोहअने
कानआवैअंकभरोरतिकोप्रतिरेंतकीरोतेंषवायतेषाऊंबताइंबीरीजतुआयेऊंकेसवआपुहीगोनेंमोहनकेमु-
नमोहनकोंकहोयहफेसिमइसिषकौनें १ अर्थः स्वामीराधाजीप्रतेंकहेछे कहीइंसाहमुंजोयोनिवारेंजूउहसावीइंति

बारेहसौं बोलेतो नहीनें मुनधरीवें सौं अनेकसमझायेतो समीपिआवो हूवजे कीनातेजाणी आजनहीकाल्हिकरा
स कांईदमीवस्तुनधाबीनीमवरावीई तो षाईजाणी इंकांई आजकोईगो नेंआयाछे कहतांग्रथमसमागमछेई ए
हवीमोहननेंमोहउपजावानीगतिएसमीकोणी सीषवी १ अथप्रौढाधीराकवित्त: हितुकेंइतदिषकुंदेषोसाबहि
तबातसूनोजूसूनीसबहीहि यहतोकछुउरवहिंसबहीअरुस्फहकरुबकरीजूतहांहिं समुझाइकहोसमुझाइ
मकेसवकूवीसबिहमसोंजूकहीहैं मानुकिथोअपमानकरो तोहसोअवकोंहमिवेकोरहीहिं २ अर्थः एकसमें
राधाजीबिंवाछे तिहांप्रभुजीआआएतलेरूपजोयो तिवारेप्रभुजीइकस्फहितकरीनेंअसमास्फजोयो तिवा
रेकस्कतमासूहितसघतोजोयो एकअमारीवातसांभलोकहैंसेधीवातसांभलोछे अनेंवलीनबुतेतोकहिहमणां
सघलोइनबुछें तिवारेवाकुरकहेंसमस्ततांकहेसमंतोतिहांकीधहसें मुकनेंसमजावीकहोतो कहिजुंतासमजीनें
सेंधीकवीताकहेतेतोअमस्कंकाधीछेतोकांईतमेमांनकीधेतोकहेंउपमानकरुतोकहेंतगरिकहासतोकहेंहवेंह
मबुरसकंछें २ अथप्रौढाधीरालक्षणं॥ दोहरा॥ पतिकोअतिअपराधगतिहतनकहिंहितुमानि कहतअधीराप्रौ
ढतिहि केसवदासवषानि ३ अर्थः पतिनोअतिअपराधजाणीनेंहेतनकरेंअतिमानतनादकेसवदासतेहनइंअ
धीराप्रौढाकहेंछें ३ अथकवित्त: ॰ । डोरूपषाइसिषाइरहीसीषसीषेंनएसिषतइजुंसिषाई मैंवजुतेंसमुझाइजु
देषोपेकेसवक्योंजुकुटेववजाई ॰ दंनदीएबिनुसाधनिसंगतिकुटतिक्योंषलकोषलताई देषकुंदेमधकीपुट
कोटमिटेंनघटेंविषकीविषमाई ४ अर्थः वजुरांणीनोवचनदासीप्रतइंकहेंहेसषीकुंएनायकनेंअनेकसीषा
मणदेइरनेंषाकीपलिएकांइदासीषेनहीअनेंतमारीसीषामणमणिएहनेंनलागी अनेंमेंपणसमजावीजोयपा
णिएवाकुरनइंकुटेवपडीतेजाइनहीतोतेघटउजरवलनेंकांइदमदीधपषेंसाधनीसंगतिषजाइजाइनही
जिमदासीविषनेंमधनाकोटिपिपुटदीजेंतोहिमांहिथीविषनोएकरतीजागिउछोषाइनहीं ४ अथप्रौढाधीराल
क्षणं दोहरा॥ मुषरूषीबातनकहैं जियमेंपीउकीरूष धीराधीराजांनकें जैसीमीवीउष ५ अर्थः नेहनेंप्रौढाधी

राग्रकहोइंजेमुहमेंलूषीवातोकरें मनमांपीउनीलूषहोइंअनेंअंतकरणकोमलकुइंजिमसेलडीउपरिकठिनकु
इंपिणमांहिंरसरसकुइंअनेंमीठीकुइं ५ अथकवित्त: हौंमुनमेलेनबोलौंकछुअबलानहउबोलिबोबोलसोहैंके
सवतुरनिसौरसरासिरओरसबाकुमबेहमसोहिंदेषकुंधइकबारसंकोचनआरसलोचनआरसीसोहैं आए
जूवसेहीसाजमूआजस्फलूतिगईपीयकाल्हिसोहिं ६ अर्थः हवेंनायकानायकप्रतइंकहेंछेंजिहांजगेकांइमन
मांमेलाछोतिहांलगेबोलबोलसो बोलूतोसमछइंहेकेसवबोजासंघातेरसरासरहाअनेअमसंतेरसबादरछोछो
एकबारसंकोचमुंकीआरसीलइनइआलसिलस्याउजागस्याएहवाजेलोचनातेलोजूउबलीआनइंएहवासाजस
आव्याछोतेस्फंपियुकालनासमविसरीगया ६ इतिस्वकीयापरकीयालक्षणं दोहरा॥ सबतिंपरपरसिद्धजगताकीप्र
याजूहोइपरकीयातासोकहेंपरमपूरातेलोइ ७ अर्थः सर्वथकोपरकहतांअलगोजगतमांप्रसिद्धएहवोजेपुरुष
तेहनइंजेवाल्हीकुइंतेहनेंपरकीयाकहेंपरमपुरुषछेत ७ परकीयादिजातिकुनिउढाएकअनूढ जिनदेखिसबहो
तसबसंततमूढअमूढ ८ अर्थः परकीयाबेजातिनीछेंएकउढानेंबीजीअनूढातेहनोअर्थआगलिकहिसिंतेहनें
दीठेंथकेंसघकुपजेंसंततकहतांनिरंतरमूढकहतांगुमअगूढकहतांप्रत्यक्ष ८ अथउढाअनूढालक्षणं दोहरा॥ उ
ढाहोइविवाहिताअविवाहिताअनूढ तिनकेंकहोविलाससबकेसवगूढअगूढ ९ अथऊढाअनूढानाभेद एकउढा
बीजीअनूढापरणीहोइंतोऊढाअनइंकुंआरीकुइंतोअनूढातेहनोप्रस्फसेविवरोकेसवकहइंछइं गूढअनेंअगूढक
हतांप्रछन्नअनेंप्रकास: ९ अथऊढायथाकवित्त: बेवीसमीतिकीसोतेसनासबहीकिस्फनिमतिमांजवसेंमबुजेहीवा
तबस्याइकहिंमनहीमनकेसवदासहसेंमेलतिहिइउपेजुउतपियचित्रवेलावतिप्योविलसेंमेलतहिंहताषलउते
पियचित्रविलावतिइप्योविलसेंकोकुजाननहीहगदोरकिवेंकेंहरिआननचेनिकसें १० अर्थः एकसमइंनेविमइ
दासीनीसनाबेठीतेशोतेंछइंतेसर्वनांनेत्रमांवजुरांणीवसेंछइंसेंधानेंरूमीरूडीवातोप्रछेछेंअनेंकहेंछेतेसांभलीके
सवरायमनमांहिंहसेंछइंईहांदासीसंघातेंकोइकषेलेरमेंछेपरेमोमानाचित्तनेरमाडइछे

॥केसवराइ बुलावत है चित बाकु विलोचन निचित करो जु कालि कलेवर एक विसो परेंगी सबिसे ब्रतते नट रो जु आगि ततो तेरी कालि हि परौं ते सौं परजाइ बजागि

एणी री तें रमे छे कोई न जाणे इम ने त्रिशो भीने हरि ना मुषने बोही ने आवे छे १० अथ अनूठाय था कवित्त: बेली कुंती बुज परो जू
नारि नि में बनि श्री वृषभानु कुमारि सनागी षेलत ही सषी को मरि वा फूल नई तहि षेल षरी अनुरागी पीछि तकेसव बाल आंतु मि
लउ विं सानि के चित चातुरी आतुरी जागी जानि निको अक बिहरि के रस मार गहीम रसीहू गलागी ११ अर्थ: एक समे लौने। मिले
ने विषइ श्री वृषभानजे राधाजी वमनागी बुज नारि नी मंडली मांहि बनी बेली कुंती सषीसं घाते मनोहर चोवटा ते पोर बुज राजहि
मती हती ते षेल मांष री आशा का थई बड़ एह वे समे मंड़ बाने वाकुरजी कोई क समे बोली उथ्या ते सांसली ने चित्त मांहि नाही नोनी
चतुरताई नी आतुरताई करता उवबाने कताव ली थई जाणीइ हि नास्वरूपी यो जे मारगे इं जनमीनी हूगलागी न ही ११ केह्रैराज
अथ दोहरा कारूं सौं न कहे कछु बात अगूढा गूढ समी स हैलो सौं कहे उठा गूढ अगूढ १२ अर्थ: केहनइ मो तानी वार्त्ता करो जू
कहे नहीं वार्त्ता गुप्त राषे तेहने अनूठा कहीइ १२ अथ कवित्त: केसवराय की सौं ह कें कें कबु एक नी आपुसे हो दमरी १४+
एक चिते मुहाकाई इते उत बात कहे बकुलाइ तरी बारु च कोर विलो चन ता सि चिकुंदिशा ते अंगुरी पसरी सषी आजु
गई कुंती गाकल मे स व ही मिल छे जं तु चंद चकोरी १३ दोहरो जगनायक की नायका बरणी केसोदास तिन के दरस
न रसक हौ कवि प्रछन्न प्रकाश १४ अर्थ: जगतनायक जे श्रीकृष्ण तेहनी जे नायिका ते केसवदासे वर्णवी तेहना जे द
र्शन एक प्रछन्न बीजो प्रकाश: १४ इति श्री रसिकप्रीयायां स्वकीया परकीया भेद वर्णनो नाम तृतीय प्रभाव: ३ अथ द
र्शन लक्षणं दोहा॥ एटो कदरस इंदरस होइ सकाम शरीर दरसन च्यार प्रकार के बरनत हे मतिधीर १ अर्थ: ए
बे नां दरसन दो वेष के सकाम शरीर थाइ ते कवी श्वर धीर थई च्यार प्रकार ते कहे छइ १ दोहरा एक जो नीके देषीइ दू
जो दरसन चित्र तीजो स्वप्ने देषीइ चोथो श्रवण निमित्र २ अर्थ: प्रथम तो साक्षात दर्शन जे देषीइ ते लष्यीइ बीजो चि १३
त्रामणदेषीइ ते २ त्रीजो स्वप्न मां देषीइ ते ३ चोथो कानें सांभलीइ ते ४ श्रवण दर्शन ४ एच्यारे दर्शन कह्या अथ साक्षा
त दर्शन दोहा॥ नीदक्षप्रकृति देह की गई सुनि तिहिं जाहि को जानक्षे हे कहा केशव देषे ताहि ३ अर्थ: जेहने गुण सांभ
लीया के निद्रा गई भूष गई त रस गई देहनी कांति गई केसवदास कहे छइ ते हने दीठा पछी सुख थासे ३ अथ प्रिया

-स कल स्रुगंध बासरंजन को घनसार उत्तर अंगुष्ठे आछे अंजनसमार कं देउ नमल कनं पलप मिलनं एक अनिलाब ला मंलो तिन पति हो सारिकुं

प्रछन्न साक्षात दर्शन कवित्त: केसव श्री वृषभानुकुमारि सिंगार सिंगार स बे सर से स विलासि चिते रति नायक ज्यों
हरि नायक सायक से बरसे कबकुं कुरि दे पति दर्पन में उपमा मुष की सुषमा य रसे जानु आनंद कंद सपूरण चंद कुं
स्पोर बिमं न लमें द रसे ४ अर्थ: सवायो चंद कला बड़ केसव कवी कहे छे श्रीराधाजी इं स गलाभ्रंगारि को धमन मां
विलास चिंत वीने हरि नायक सारुं जो यो ति वारे रतिनायक जे कामते बाणनी वृष्टि करतो हवो कहता धणुं कामा
तुर थया दर्पण लेई ने इं मो ता नु मुष जो वा मांड्यु ए मुषनी उपमा जोई ने इमहा सुषमा मनाह वा जाणीइ आनंद नो कं
द एह वो थई ने र बिमं नलमां बच्यो छइ एह वुं दीठा तुं नो हइ स्कं ४ अथ प्रिया प्रकाश साक्षात दरसन कवित्त: पहिले
त्यजि आर सक्ष आरसी देषि घरी क घाम घनसार हि ले फूलनि पौंछि गुलाब निलों छि फूलन ले अंगोछइ मे आछे अंगो छनि के
कहि केसव मेछु ज बादि सो मांछि इ ने परस्याज में अंजतु दे कें बकुसों कुरि दे ब्यो तो दे षो लै सषी इत लाज तो लोचन लागीय
हें ५ अर्थ: स्वामिनी जी कहतां राधा जी पहिलुं आल सत जी न इं आरसी कहतां आरी सो जो यो पछे घरी कलगे घनसार.
जे कपूर ते घस्यो वली गुलाब नुं पाणी डां ढुं हतुं लूंही रांख्युं फूल नते लनुं मर्दन हतुं तिन्ना छे अंगोछइ करानइ लूंही ना
ष्यु केसव कहे छे मेद जे कस्तूरी अने जवाषि दि तन आंग चोपड्या तां हवा एतला उपरि नेत्र अंजन देता हवा पछे शषी कहे छइ
उ हरि उतांज तोरे जो शाषी लाज तो ने त्र मां लागी ब्रि-नों ५ अथ कृष्ण को प्रछन्न साक्षात दर्शन कवित्त: लाल गूंही गुनलाल
लट इलपटी लर मोतिन की सुमदेनी ताहि विलोकति आरसी लैकरि आरस सुं एक सारस नैनी केसव कान्ह दुरे दरसी
परसी मनि की उपमा अति पैनी सूरज मंडल में शशी मंडल मद्धे धसी जानु नाहि त्रिबेनी. ६ दिजय छंद: राधा जी इंगार
करी कुंतां छे सो सषकी लट गुटी छइ ते राते दोर ने बीटी छे गुंथी छइ को हमां मोतीनी माला छे तेमांथे सेरल पगणी छे ते महा
सुषने देती छे एह वी छइ ते जो वाने काजे आलस तजी ने आरसन य णी जे राधाजी+आरसी लेई नइ जूइ छइ ते केसवक
कहे छे श्रीकृष्णजी वेगला ते रषे छइ ते मणी की उप मन मां उपमा उपमनी छे ते जाणीइ सूर्यमंडल मांहि चंद्रमा तु बिंबदी
-सै छइ ते मांहि जाणीइ त्रिवेणी गंगा यमुनाने सरस्वती दे हमांहि रतीछइ मोती नी माला ते गंगाजी अने

कहत प्रबिन राय सों जयह किरा कछे की सुनि बाय न यण यहैं पय त प्रतिपारि कुं जब हिं मिलेगे प्रान प्यारे इंद्रजित ताहि नि दूगनि सुं दे तोहि सु निहारि कुं १८

^मानेमोहनमोहकूं मोहीकरतिकुचेन कहाकहंब्रजतेपरे ह्वै नैनोंनेनैन ११+रक्षि+

अलकतेयमुनाजी अनेराते दोरमें गुथीतेसरस्वती ६ अथप्रछन्नकोप्रकाससाक्षातदरसनं कवित्त: एकतो दक्षोर दुरौज
अनुपमतेसे मनमोहर१। हारमहारी चित्रु चलें तरुनीनिकुं कें तमदने ८ तुकीके सववातकहारी छितसंहितनकोकहैंआव
ताह्यपरिकोलगिकुंकुरीकोतिगहारी अंचलदेनंदलालविलोकितरीनौमिथिछिलोवनहारी ६ अर्थः एकदासमइनइ
विषइंश्रीराधाजीइंसोलसृंगारिकरीदधिमथनकरइंछे तेहनाउरउपरश्रीजुगलुमसीगफबे तेमहासुंदरस्ततनवा
धरीसे बइ तेदीवेषकेतरुणीजेस्त्रीतेहा।यतुपिणचित्तचलेनरनैनजेपुरुसातहनोमननकिमनचलेंचलेजतेहितमाटे
तुकनेंहीयानीकहिवाइछे कुंकेहवारनीकोतिकजोउछो ग्रारगटोवालीनंदलालकेईवारनाउलाछेजोयेबइ उतोअ
लंश्रीविलालगावलहारीदीसे ६ अथचित्रदरसनंदोहरा चित्रमेंहरिमित्रकी अतिविचित्रगतिगुढ प्रगटकाम^
कोकल्पतरु कहिनजाहिमतिमूढ ७ अर्थः मित्रनुचित्रदीठेथकेंमनमांसंतोषनुपजेंबार्त्राहावनावगुमराधेतेहा^
नुनामचित्रदर्शनकहीइ ७ अथप्रियाकोप्रछन्नचित्रदर्शनसवियालेईसो॥ लोचनग्रेचिलिएइतकोमनिकीमतिया^ +ग+
छपिनेहनहीहैं आंननआइगएअमसीकररोमउठेतबिकंपहाहैं तासोंकहाकहीयेंकहेकेसवलाजसमै *मुहमेंबु^
फिरहीहैं चित्रकुमेंहरिमित्रहुंदेषकेयोंसकुचीजनुबाकुगहीहै ८ अर्थः एकसमेनेविषेराधाजीनेप्रभुजीनोस्वरूपल
षीदेषानइबइ तेजोईनेनेत्रपरांकीधंघूंघटोकाढ्योयद्यपिमननीवृत्तांतकहतांप्रीतितोएहनेविषेबांधीछे पणितोहिप्रथम
मेलापनुलज्जानछे मुषनेविषेपरसेवानाबिंदुआआवीगयाछे शरीरबहुरोमंचितथयंबइ हृदयकंजवामांम्हबइ^
केसवकवीकहेबइ महाराजानेहनेंइस्यंजेलाजरूपीयासमुद्रमांबुमारहीछे चित्रमाहरिमित्रदेषीनेसंकोचजाणी
इस्यंसाक्षातवाहेंझालीछे ८ अथप्रियाकोप्रकासचित्रदर्शनं कबित्तः केसोदासनेहदसादीपकसंयोथकीभेजोतिही १४
केधानतमतेजहानसाईहैं आंषिनसोंबाधेअनुकाकुकीबूझानीतूषपाणीकीकहानीराणीप्यासकोबुजाइहे एरीमेरी
इउमुषीइदीबरनयनीलिषेंइदिराकोमंदिरमेंसपतिसीधंइहै ऐसैंदिनऐसेंहीगवावतिगवारिकहाचित्रदेषेंमित्र
\\केमिलेकोसमुपाइहे ९ अर्थः

केसवदासकहेछे एकदासमेंनेविसे श्रीराधाजीप्रत्येंशषीकहेछे नेहजेनेहलक्षनेंदशाजेवाटदीपकनुंकोमीउंएसगला
संयोगसामग्रीकीधमणिजोतिप्रगटकीधानषी अनेंजोतिनुंछेवाधनतधरीइंतोकई अंधसंटलेअनेसांरूअन्नलेईनइ^
आंषिबाधीइंतोतेहनीतृषजाइ काइअनइपाणीनीकहाणीकरीतेंणेकाइतरसनटलइ अनेमाहरीइंदमुषीकहतां^
चंद्रमुषीकमलनेनीइंदिराजेलक्ष्मीतेहनुंस्वरूपघरमांलिषीवोटिए तेमाटेकाइलक्ष्मीपामीइ अरेगमारएहवादि
हाडागतेंतोनीगमेछेचित्रामणदीठांमित्रमल्यानुंसुषपामीइ १० अथप्रछन्नकोप्रछन्नचित्रदरसनंइकनीसो॥ रुछिवे
कोरुछिवेंकोमृदुमुसकाइकेविलोकवेकोनेदकछुकसोनमरतुहैं केसोदासबोलेचितुबोलनिकेंसनेचितुंहिल^
निमिलनिचितुमोहीकरुशारतुहैं कोलगिअलनौरूप्पप्याविप्याविराषोंनेननीरदेषेंमीनकेशेंधीरजधरतुहैं चित्रनी
किन विचित्रेंवधमोनाकेंहीचितेजेसमनुचित्रमेंचितयेंचितुबोगुनोजरतुहें ११ अर्थः एकदासमेनेविषेप्रभुजीनइश्रीरा
धाजीनुंस्वरूपलिषीदेषांमुतिवारवाऊरकहेंबइ हृदयशषीएहमांएतलातेदनथीदीसतातेकिम एकतोसावबुं१ बी
जुंप्रसन्नथावुं२ त्रीजोमंदहास्यइ चोथुंकटाक्षेजोवुं४ एनथी अनइएहनाजेकोईतेदवेतेकांइकसानजाये केसाराय
कहेंछेबोल्याविनाबोलीइतमांमल्याविनाहल्यामल्याविनाअमारेतोकिमचालेचित्रणीजेराधाजीतेसाक्षातसारीप
ठेजोएतिवारेसुषपामीइ पणिचित्रामणमांजोयेचित्तचोगुणोदुषपामीइछे ११ अथप्रछन्नकोप्रकासचित्रदरसनं कवि
त्तः अंतरिक्षगछनीनिजछनीसत्छनीनिआछीरअछिनीनिबविबमनीयाहे किंनरीनरीसुनारिपन्नगीनगीकुमारि^
आसुरीसुरिनिहोंनिहारिनमनीयाहे लोगनीकीलामिनीयोंदेहधरेंदामिनीयोंकामकामिनीयोंकहाइसीकमनीयाहें
चित्रकुमेंचित्रहीतुराइलेतकोउयहरामकीसीरमनीरमातैरमनीयाहें १२ अर्थः एकदासमेंनइविषेश्रीप्रभुजीनेरा^
धाजीनुंस्वरूपदेषांमुहउतेवषाणकरेंबइ अंतरिक्षवालेएहबीजाणीइयक्षनीनकुवेसुंदरआंषछेकांजेहनेंएहबी
छविमहाछमनीचिकहतांक्षमावंतछे किंनरीक० गंधर्वनीस्त्रीनरीक० मनुष्यनीस्त्रीपन्नगीक० नागनीस्त्रीनगीक० प
र्वतपुत्रीआसुरीक० असुरनीस्त्रीसुरीक० देवतानीस्त्रीएटलीस्त्रियोंनेहनेंजोईनेंहारमानीलोगनिलामिनीक० सा

जे
ज्ञातजेतोगतेहस्त्रीतेहनऊवैं जाणीइकें बीजलीदेहधरी घईनइंआवीछेकेनांकामिनीस्त्रीरतितेएहवीस्फंसुंदरछें चि
त्रमांहिंजोयेंघकइचित्तनेंचोरीलेंछेंकेनांरामनीरमनीकहंस्त्रीसीताजीवलीरमाजेलछमीतेहथीसुंदरछइ १२ अथ
रूपनदरसनलछण दोहरा॥ केसवदर्शनरूपनको सदाकुस्योहीहोइ कबऊप्रगटनदेषीइ इहजानेसबकोइ १३
अर्थः केसवदासकहेछेस्वप्नतुजेदर्शनतेसदाइगुप्तहोइ कदाइंप्रत्यक्षहोइनहीएमकऊयेजाणोछइ १३ अथराधिकाको
रूपनदर्शनकवित्तः॥ आतुरजोंउविदेरिआलिजनआतुरजोंगहियेसुगाहेलोंकहोमेरीरानीकहानयोनोकऊं
बुझतिकेसवबुझियेलोंदीवलगीकिधोंप्रेतलग्योकिलग्योउरप्रीतमुजाहिफरीयोंआननिसीकरसीकहियेध्रुक
सोवंततेअकुलाइउवीक्यों १४ अर्थः आतुरथईनइउवीनइंडोमीतस्य तिवारेंरापीइंउवीनइंआतुरनेंसालाइ
तिमसालीरापीकहेंछइकहोमाहरीराणीतुसनेंस्फपघ्क जेतुंउठीनेंअणबोलीडोमीतेस्फंत्रानेंपातलीपरइतेकेरावं
कहेंछइरापीइंपुछ्युंकेंमेतीनीदुष्टलागीकिकोईप्रेतलागोप्रीतमेंसालीतेहथकीबीहनीआननजेमुहसउतिहांपर
सेवानाकणआवीरसाछइअनेहीफंदगदगकरीआंसुछेइमउत्साहमूतीघकीआकलीघईनेंडोमीतेस्फं १४ अथ "इंद्राणी"
रूपमकोरूपनदर्शनसवैया॥ नथपदपदवीकोमावेपदडोपदीनएकोछिसोउरबसीउरमैंनआनवीलोमसीपुलोम
जातितिलसीतिलोकमानमेंनऊंसमानमनामेंनकानमांनबीजानीयेंनकोनजातिअवहीजगायेंजातिजानुंजानिछें
नूवहयोहीपहीचानवीबातकीसीबानीमहिलावसोंनवानीमांहिकेसोदासरतिमेंरतीकजोतिजाणवी १५ अर्थः एक
दाप्रस्तावनेंविषइप्रभुजीसूताहताितिवारेंस्फप्नमांहिंकोईनायकाइंआवीजगाभ्या तेहनावखाणकरेछइ एहवीस्त्री
तोअमेकांइदीठीनहीरूपदीतोएहनानथबराबरनावइअनेउर्वसीतोएकेविश्वासमनमांहिंआणीइंनहीपुलोमजा
जेइंद्राणीतोएहनारोमबराबरमणिनहींतिलोत्तमातोतिलामात्रएहनीबराबरीकोनकरेंअनेमेनकाजेअप्सरातेए १५
हनामेलसमाननावेंअनेंऊंजाणतोनथीजेकोणजातिनीछेंपुरुनेहमणांजगामीनेंजायेंछइअनेंऊंतोनेहनेंजाणं
कऊंजएहनइउलखइअनइंवातकरेंछइतजाणीइंसरस्वतीबाल्याअनेंहावनावजाणीइंनवानीसरषीकेसवरा
यकहेंछइकामिनीस्त्रीयेरतितेहनीएहमांएकरतीकज्योतिदीसेंछइ १५ अथश्रवणदर्शनराधिकाकोश्रवणदर्शन

प्रछन्नदोहरा॥ सवइंइनिश्चतिकरि पियगुनस्फनेंवषान श्रवणदरसताकोंकहत केसोरायसुजाति १६ नुषहोइजोया
बातकीचितुदेषेंताप्रिय रापीकनावेंगुनश्रवण अंगअंगसविजीय १७ अर्थः सर्जारनेंमनमांहिंमिल्यानीनुषहोइ
तेवेलासर्जारदीसेंछइनहीतिवारेंरापीनापुमथीगुणसांभलीनइंअंगनेविषेंजीवहर्षपामेंनेहनुंनामश्रवणदर्शन
कहीइं १७ अथश्रवणदर्शनप्रछन्नकवित्तः सोंहदिवाइदिवाइरापीहरिबारेककाननिआनवस्याए जानिकोकेस
वकाननितेंकितहेकबनेंननिमांझिसीधए लाजकेसाजधरेइरहेसबनेंननितेंमनहींसोंमिलाए केसेंकरोंअबकों
"हिं हरिं" निकसेंनूहरेहिंयमेहरिआए १८ अर्थः श्रीराधाजीनेंरापीकहेछेतेसमदेईदेईहरिनेंएकबारकानरूपीइंबारलेआ
लीछेमास्याकेसोदासकहेंछेकोईजालिछइकानरूपीइंबारलेघीकितहेकहतांकिहांसिधाव्याहरिनेत्ररूपीइंबारलेंछे
मास्याकहतांकाननेत्रनइमिलव्यातिहांलाजधरीनइंबेसीरस्यातिवारेंआंषिलेईनइंमननेमेलव्याहवेकिमकरुंकिम
नीकलेंहीयामांहेंथीहलवेरहरिहीयामांआव्या १८ अथराधकाकोप्रकाशप्रवणदरसनसवैयोकवित्तः कोलेंपीयोक
नरसरूपकीपुजेहिंप्याससोदासकेसेनोनेंननरमीजोइ बीरकीसोंमेरीबीरबारीहउबारूंआनिनेककरिहमिहेंब
बरसक लायतेरीलीजोइ छिनदर्समांफयहबेसअलबेलीबीनेदेहोंरूपबरापीनीकोअबहीनदीजोइ एरीलसबावरीअहीरअै
सोंबसतोहीनाहीसोंसनेहकीजेनाहसोनकीजोइ १९ अर्थः हवेरापीराधाजीनेंकहेछेंहवेंकिहांलगेकाननोरोसपामो
निरषेकांइरूपनीतिरसनाजेंकेसोरायकहेंछइ कईककनउआंष्योनरीपीजोइ माहरानाइनासमजोतुमाहरीबहिन
छइलगारेकहसीनइहायाफेतोऊंताहरीबलायल्यौअनइएकवरसेकमांबाल्यावस्थाजामेंतिवारेंरापीनइंस्फपदेस्योते
६ हवमांजकांदेतानथी अरेलासगहलीआहीरीतुसनेंएहनाइजमसछेजेहनेंसघानेतेहकरीसमतीमनाहस्फनकीजोइ १९
अथस्मपकोप्रछन्नश्रवणदर्शनसवियो॥ लंघतुहेंलोकलोकलीकनउलंघीजातिसबहीतुंसमझावइतोहीसमझावेंको
छोनकहततनतनकनबूटेलाजधनमीतुराधिदोउकोविदकहावेकोंसोवेंउसकोवऊकोपूरवपश्चिमपंथकेसोदासए
ककालएकजनुथ्रावेकोंउपस्फपहूरिस्हरऊनेंमेरेमनिजेसेरूनीतेसेतोहीआंषिनदिषावेकों २० अर्थः एकदाप्रस्ताव
नइविषइप्रभुजीरापीप्रतइंकहेंछइंहेसखीमाणसपिणलोकालोकपर्वतपिणउलंघेछइपणिएकमर्यादानीलीकउल
वें

MEMORIAL

घातीनथी अनेंस्वामीतुं तो सर्वसमझेछइ तुम्हनें कोण समझावइ अनें मनुष्य ना शरीर मुं कवुं कहवाइ छै पणि षोमी कलाज
मुं कानी नथी अनें स्वामी धनवीजी मित्राइ एवा नां स्वामीनें कोइ न लोक हवाये जे लोक न कीजीइं तो मित्राइ न रहें मित्राइ स्वामी
इं तो लोल न स्वामीइं एजे कह्या ते वे वानां स्वामीइं न इ ऊइं नहीं ते केहनी मथइ जिम एक जणो छै अनें विदेशाइ कामछइ तो
एके वेलाइं काइं विदेशाइ जवायें नहीं एकलो स्युं करइ ते माटे क्षमनइ इम: एवे वानां सजीनइं जेहवी मइ सांभली छइ
तेहवी कोमुझ नइ आलीनें आमइ दिषाडइ २० अथ कुसुमकोप्रकाशादरशन शावकवित्त:॥ निपट कपट हरि प्रेम को
प्रगट करू विस विसे वसी करूकें सेतरस्आनीयें काम नो प्रहरष नु कामना को वरषनु कान कों मकरषनों मब्रजगजा
नीयें किंषें के सोदासमहि मोहनी कोंल्लषनु हें किंषें ब्रजबालनि कों षनु वषानीयें क्रनतहीं ब्रू थे ध्रम बनिरमोलस्या
मुराधातेरे नाम केउचाटमंत्रमानीयें २१ अर्थ: स्वामी श्रीराधाजी प्रतइं कहे छै हे राधाना एकनामके हसु छइ निपट जेस
बल एहवुं जे कपट तेह नें हरइ अनें प्रेम नइ प्रगट करइ छइ एहवुं छइ अनें विसेविस्वासांभले तेह नइं वसकरइ एह
वुं छइ तो कि महीयां मां आलीइं अनें वली के हवो छै कामनो प्रहर्ष उपजावे कं० हर्ष उपजावे अनें कामनाजे मनोरथ
तेहनें रसें एहवुं छै वली केहवुं छइ श्रीकाह्नइं आकर्षण करइ छइ एहवुं छइ ते सीधें जूगजालणइं छइ तेके सोदास
कहइ छै एथवी रूपणी जे मोहनी तेह नु जाणीइं रूषणइ छइ एहवुं ते नाह कं नाम छै तो जाणीइं उचाटनो मंत्र नऊ इस्य २२
अथ दोहरा॥ दरसरसनरसनी तीके कहे परसरसनीय प्रगटनाप्रसप्रताव अव कहोंकंचुक मनीय २२ अर्थ: रमणी
जे नायकरमणीजे नायिका तेहना जे दर्शन जे मनोहर ते कस्या हवइं प्रगट प्रेमप्रताव कहे ते सांभलि २२ इति श्रीमन्महा
राजकुमार इंद्रजीत विरचितायां रसिकप्रीयायां प्रछन्नप्रकाशदर्शननाम चतुर्थः प्रभाव:॥४॥ अथ नायक नायिका वे
ग्रालच्छन दोहरा॥ कहें स्वामी स्युं प्रीत मइं आपुनतइं आकुलाइ तिनके चितकी जानिकें प्रिय स्युं कहें स्नाइ १ अर्थ: जे १६
हना चित्तनी स्वामी कुइं ते प्रीयु नइं संतलावें मींउवलउं स्वामी नें जइ नइ कहें अनें पोतें अऊलाइ १ अथ राधिकाकी स्वामी
को वचन कृस्न प्रतइं कवित्त: कालि की गुवालिनी आज कू जनम मारनी के सब के मेंऊं दे हैं मोरी छैजानि तउ डीकवऊं जरजी
उरसोकि रही नवि रेहें कोरि विचार विचातु हें उमवारनिकें वरसइं सषि मोहे काह्नवुरो जिन मानो ति

ती
हारी विलोकनमें वस्कवी सबिसें हें २ अर्थ: हवें ठाकुर प्रतें स्वामी कहे छै हे महाराजा कालि तमे जो इगयापछी गुवालिनी प
मी छै आजलगें हजी शरीरनइं संताले नथी शरीरनी शुद्ध नथी घनी कमा हें थी ताढीथइ जाये छइ घनी कमें वले वले का
रीनें उठे छइ काया मांजी वरस्यो छइ किंस चिरही छइ ऊकोदिकोनि विचार छउ अनें सषी स गली उपचार नाम हव
रसा वें छै कं० अनेक उपचार करे छइ अनें हे महाराज कस्या मारें काइ इष मां नस्यो मांन मारी निजर मां वीसे वि
स्वाविष छइ २ अथ कृस्नको राधिकाकी स्वामी प्रतइं कहे छै॥ कवित्त: प्यास छै रही उदास न लागी नूष गहे त्रास केसो द +केउनमी+
सनिंद ऊकी निंदा दिन वानी हैं मतिको मतो न लेई विद्या के विदाई देई सो ताम्ह केसे इरसवसें षिसानी हे वस्कसी
लुगनिगीति केलि कीन मरनी तिश्री तिउरमाऊ नी सीम छिप हिचानी हें तो बिन कहें कोगाथधीरतानता के साथ मोहि जब
कोमिलायें हाथलाज केबिकानी हें ३ अर्थ: श्री गाऊरनु वचनस्वास स्वामी प्रतइं कहे छै हे सषी असारी वां स्वाकऊं
ते सांभलि प्यायें स जे तरस ते तो उदास थइ रही छै अनें त्षते नागी छै अनें वीहकतो नासी गई छइ अनें के सव कहें
छै निद्रानी तो दीहासें निंदा कीजे छइ अनें मतिनी तो कोइ मतो न थी अनें विद्या वइ तो विदाय की धी कं० वीसरी गई छै
सो तातो म्रूकाइ गई अनें क्रिया नी ते वे तारीस घाइ छइ अनें गांन तो विस शारी मुं लागइ छइ ऊं मानी तो प्रतीत आव
ती नथी अनें प्रीत नो पुरोहणी थई छइ अनें मई चान जे उतषाण तो हारी रस्या छइ तो बिना गाथा समझावी नें को एक
हें अनें तेह नुं धीरज कातन थी ते तो लाज ने हाथइ वेचाणी छइ तो अस्तनइं कों लमेलावइं ३ दोहरा प्रिय सों प्रगट
न प्रीति कऊ जितने कियें उपाय तेसव के सवदास अव वरनों सव निस्कणाइ ४ अर्थ: प्रितने देषीनें जे तला उपाय
करें ते तला सिंध केसव कहें छै कहीदेषाडउं ४ दोहरा जब चितवे पिय अनतहीं तब चितवें निरसंक जालि विलोक
न आपनें अतिहि लगावे अंक ५ जिहावें पितनी दृष्टि अलगी ऊइं तिवारइं निसंक थकी ठाकुर साहमुं जोइं तिवारइं स्वा
मीनें आलिंगन करइं ५ कबहीं कृतिक न करइ आरस सोंएं दाइं के सव दास त्रिलास सों वारस्जनावाइ ६ अर्थ: त
गारे कवली कांन मंजवालइं अनें आलसमरदइं केसव कहें छइ विलास में जे रति ते सी होइं तिवारइं

बारें२ मन बगाई षाइबे ६ दोहरा॥ रूठे हो हम सिर उठे कहे सषी सें बात ऐसी मिसि ही मसि प्रिया प्रियहिं देषावे गात ७
अर्थ: अनें रूठे रूठे हम सो हसी उठे अनें बली रामी बानों करें एह बे मिसि करी नइं प्रिया प्रिउ नें पोताना सरीर देषाडइं।
७ यों हि प्रिय प्रिया निप्रीति प्रगटत अपनी प्रीति सो प्रछन्न प्रकास करि बल बुद्धि करें सु मीति ८ एणी परि नायका पोताना निप्री
ति करि प्रगट करें प्रछन्न इं प्रकास करी नइं पोताना बुद्धि करी तन देषाडइं ८ अथ राधिका को प्रकास चेष्टा लक्षण कवित्त:
चोरि२ चित चित बत मुहि मोरि२ कहि बात हसि हियें हरषु बढायो हैं केसोराय की सौं तुं जंनात कहा बार२ बीरी षाइ मिसरी बी
र आर स जो आयो हैं छिन मों ऐसी माति अति अचल उमात उरझ उघरि२ जाति गात बलि बायो हैं फूलि२ लेटति रहति उर फूलि
ऊरूलि२ कहत बात कछु आज पायो हैं ए अर्थ: हवें रामी श्री राधाजी नइं कहइं छइं जे तुं बारे बारे दृष्टें चोरी चोरी नइं मुह
मरडी नइं स्यें सोइं छइं अनें बारे२ हसे छे ते स्युं काइ कहइं आ मांहि हर्ष बाध्यो छइं केसवराय ना सम तुं बारे बार बगासा
षुषाइ छे माहरी बहिन आलस घातु होइं तो बीनी षात बारे२ बांकी घई नें मीलसु मरडइं छइं छे मो उमी जाइ छइं उरकहना
हि ऊरुउ षाइं छइं एह बीबा बीइं मील सर्व बाही मुक्यो छइं अनें फूली२ तइं मुरडनइं मुरडनइं हीआ माहि घालइं छइं अफाणी
आनी मतइं फूली रही छइं अनें काइ तु काइ ताबालइं छइं ते काइ अमल पाम्यो छइं ए अथ राधिका को प्रकास चेष्टा कवित्त: ग्रो
+ष्ट्र मेरो सूंचु मे तेरी पूरी साध वृन्दि बे की चाटें उम अमू कों सिरा तुष्यास मन्हिं हें छोटें२ कर कहा छूवति छबीली बानी छूते जाके
छाय बेकों अभिलाष बाढि हें मिल तु जो आई हें तो मेले जे से मिलीय उ केसोराय की सों ऐ ती कान्हु मेल का छेंहें फूलि२ लेटत
हिं मोहि कहा मेरी लट लेटति न उरझि जाय लेट बे कों गाडें हें १० अर्थ: एक दास सें नइं बिसइं राधाजी प्रजनी नें देषी नइं रामी प्रते
चेष्टा करइं छे ते सषी कहि देषाडे छइं हे राधा माहरु मुष चूबे काइ ताहरी इं बा पूरी थाइं नही तेह नी मतइं सो धाति रस्या होइं अ माश्त
नें कालूल इं सी नां त्रिणा बाटी इं तिणे कांइ ही मुबल तऊ इं तो ताहु षाइं अनें माहरइं नां क्रि हाथइं ताहरा बबीली बानी बेवराव
इं छइं तो तेणें मे कान थी ऊलावती जेह नें अत्यानो अभिलाष छइं अनें जो र मबा आबी तो माणसनी पबइं र मो केसवराय ना २७
सम तइं कों णरमति काटी छइं हे माहरी रामी फूली फूली नइं मुरडनइं स्यें मलइं छइं तेह नें जइं नइं मिल जै ओ मल बानइं
साह मात लाछे १० अथ दम्स की प्रछन्न चेष्टा सवैया॥ चोरि२ बा ...

॥ केसोदास घर घर नाचत फिरत गोप एक पर एक दिन मेरे ईंगुनियत है बाहू नीके बसबजत कुरते एसषा सब संगले कोजे जे जै कुंवर नंदु रस कनिय
नें से ही तो रि२ मारि उ ति गुवको उस कों न पस कों लके मर तुपाइ बाबरें जू ऐसे हों कबकू चुट कोंदि न चुटकि सुजात कें बमट नहें मोहि
कि ऐमानि जोरी ज्यों जलाति ते से हों बारि२ कों न परि देत मन मालामोह गावत कबु कों कबू आजू हरिके से हो ८ अर्थ: रामी श्री तोग यें ही
कृष्ण जो प्रत इं कहइं छइं हे नाथ बारे२ पाघ नी बेमी नइं बाधे छो अनें बारे२ आलसइं युक्त आरी सोले इं नइं जोउ छो अनेक नाति बनेरी हदी
आज काइ अ नइं मन मा दी सो छो अनें बारे२ तृणं तोडी नें के उ परि उ नारी नां बोछो पगें केहतें लागो छो काइ गहिला म्हरि पमाताषा
षा दीसो छो अनें बारे२ चिपटी बजाडो छो अनें बगासा षाउ छो अनें बारे२ केहनें काजइं मलिनी न षामो तीनी माला मुकी हगाइ नि
ने आपो छो अनें काइ तुं काइ गाउ छो आज काय्के हबा छो ८ अथ दम्स की प्रकास चेष्टा लक्षण कवित्त॥ योल तो ला चलू सवारि वै
गाई नदे दिन नाच न चाव तसांज प्रहा उ केसव मंत्र करो बस कार कहा रक जंत्र कहा लों गना उ हारि रहे हरि क्यों कुमि कौं विनुचु
लीन मिलाउ जो तो हिजू मां गो सो पाउ राही बे जाइ मिलें मिति बेक कु और कहा कहि आक रिजा उ १२ अर्थ: हवें रामी गाकृ नियत हिं
ष्ण ते कहें छइं हे महाराजा तमे अनेक उपायकी धलोक नें लां बो दे ई न इं षाका सबार घ की सांज लगें ति सजि ते नचाया जौन मिलो
ति मनाया अनें हे केसव बसकर बाना अनेक मंत्र साध्या अनें हरबाना मंत्र मंत्री आप्या मंत्र कि हां लगें गणुं हवें हास्या लोजनैं नि
कि मे मिलें तो न ही तेह नें मिलाबु तो मागु ते पामुं ते आपें तो मेलाबु उत्तली छइं जात मिलो मिल बान इं उती पइं र ही छइं +ले+ जैस
आ मस्य के मे करी ते नी आबुं ति बार रेगाकृर बोल्या जे हे सषी एह स्यें मिल्याप छी जेउ स्ते नें जोइ सें तेह मुह मे मांगी सते आ कामरहि
पस्य प छे इति चेष्टाः १२ अथ स्वयं दूतत्व दूहा ज्यों ज्यों कुन मिलें कछू केसव दोउ इठ त्यों त्यों अपने आपु ही बुध बल ठही सबधरि
लीवसीठ १३ केसवदास कहें छइं इष्ट पोतानी मतीन सकें तो पोतानी बुद्धि करी नइं पोतइं दूतत्व करें १२ अथ राधिका कमरें इ
को प्रकास स्वयं दूतत्व सवैयो॥ षइनही घरि दाह परी जूरी आई मिलाइ कि आमि बहा उ पोरि ओ आवइं र सों धरइ ते मर उ चो आजु पा
कने स महा दुःप पाउ का कुनि बेर कुत्या उन ओऊ ह अलि तिनि को ल गुऊं बहरा उ मो संगि एस बै सो बन आवे कि में इकके लीकानि
संग सो बन जा उं १४ अर्थ: एक दास मइं नइं बिसें राधाजी रामी साथइं जाइ छइं तिकारें कृष्णजी सामां मिल्या तिवारइं यतहें १॥
राधाजी इंगाकृर नें सन लावबा नइं कांजइं सषी स्यें बात मां म्हि हे रामी माहरी मावऋ आज घरि न थी अनें दाई ते ने स्यें इं आ
॥ ली तेह नें ताव चडे छइं अनें मेलबारनी आ मिहू म बा आबी छइं अनें पोली उ तो राति अंघो छइं अनेव

लो तुं चक्रनी तिणें करीने कृष्ण एकलो घरमांहुं षप्पा मत हुं एतलें वाक्र रमासें आमाति वारें राधा इंक स्फं अमारो एक न्या
य करता जाउ अमारे घरि एह वी अवस्था छइं ते मारइं एसषी योने कहीवारनी निहोराकरनं छउ एमें धीमा हरे घरि
म्रूवा आवें के कृष्ण एह नें घरें म्रूवा जाउ १४ अथ राधिका को प्रछन्न स्वयंदूतत्व कवित्त ॥ दूरितें देषि वें कों छैहैं दीनम
नाईकृती तिषाहे तिषी बीवी दृषि मिल्यो मतु कृष्ण छैमिलो अंबषे लिवे कृष्ण कों मिलो मति मीवी औसें मैं उर वलाई है के सवकेसं आगै जो
बांके क्रमा कृष्ण आनि उछाह देषी वी नोकैहैं बाल मृणाल कतो रलों दूरि हैं लालह में कमें ई वी १५ अर्थः एक दास मेन इंविषइं श्री राधा
२ हुं श्री कृष्णजी संघातइं बी वी लषीने संकेत की धेह तो ते मोतें संकेत उपरि जाइ छे अने मारग मां पलि सषी सं गोप संघातइं
रमें छे श्री कृष्ण एतलें वेग लाघ का वेऊ एक दृष्टि मिल्या तिवारें गकुर जी बोल्या गोवाली आने कहे छइं जेअमे तो आहीरम
कुनहीं अमारे वनमां काम छइं गाय का नइं संतला मउ तिवारे कोई कगोप कुमारइंदी तु तिवारइं वक्र राणीइंकस्फं
पस्ल २ नेअमारे षालल आवस्यो तो तमारें अमारें कूरमन स्ये १५ अथ लक्ष्मी को प्रच्छन्न स्वयं दूतत्व कवित्त: आपनें ही लाए कीए
२ मोहन मरीके संबंकेसोदास ज्यों चलत न चितु लीन हैं आपुहें उदाउ कें तुलें तु नां मुमेरो वेंतो बापु रे मिलाय के मलाय कहि हीने हैं
रा घिके संकनाइकें कहत ऐसें घन स्याम मुस्क बतु बोलें लैंना मुकाम नय नीने हैं माबलें म मानि अवजे बोबन कोंम्योह मषेल वेको
मंगा सषा आगा माम्रूगकीनें हैं १६ अर्थः एक समइनें विषइं श्री कृष्णजी इमन गामता श्रृंगारकीधा अनइं सर्व साथइं वातकरइं
छइं तमे अन्यायकरो अनेवटइं माह रइंमा जेतेह बोमिलाम करें ते नेह बोगणाइं एह बुराधाने संतला वीने कृष्ण प्रतइंक २६
हे छइं बलिया बलिया गोपनां नाम ल्यइं छइं जेबाला एह षका बोह ताररहीइं एघ मीकमांहि बुआरकर इंइमकहे छइं मलि
कामनें लयषकी बोहनां छइं बलीएम कहे छइं जे आजपछी अमेकेहनें सा षें तेमी नें वनमांहि जाबु में ल्युं छे अनें जासं
तो साथइं वान रालेइं जास्यं जेषकी काइं विकार न उपजें १६ कृष्णको प्रच्छन्न स्वयंदूतत्व वनिजें जें चलो को उगलिहिं केसवकुंउस २७
होउ अरी अरहो हिउ हें हियपेंकिछें नाहि नउहिउ नांहीं हिए नोजला ल रिहो हमसोंयह बूझिइं औसो कहो जू कहीऊं कहीं
चलो बकहा करिहो क बुधि लियें पेलिं आवत आजुहीं लूल्यो नलूल्यो गिरिधरिहो १७ अर्थः एकसमे नें विषे कृष्णजी राधाजी नइं
॥ हुं वेजनि हाथ सोहाथ हि यें पल ही पल नाठ ति नेम कला न जानि मेंजो मेंक हाव मिजाइं चले कुनिके सब कोंन चला नलें ही लतें निवहो जू नजी यह देषि रूकोइ
+ १ + जाकलता मिलैं मनु तो मिल तो ई कर मिलि दौन अजोक लिनें दलजा १

कहे छे सांभलवानें काजें कोई आवो बोनाईउ वनमांहिं जइइं तिवारें राधाजी बोल्यां कोई वाल्हो हसें तो तेआवस्यें तोकहें
तमें जन नहीं तो कहे आव्यो बोल्या तो अडग हीयामां हिंतुनषी तेमारे वि ठस्यो वली कृष्णजी नइं कहे छे अमने मूक्या मा टइं
एह बोकहो छो वली राधाइं कस्फं तो कस्फं तमे संकरस्यो रमवा आवो नेरमीइं रम्या तो रम्या नरम्या तो कांइ गलेपनस्यो
॥ दोहरा ॥ ॥ उदाकृ निह इहनांतिकरि बहुविधि हितहि जनाय आपुनहीं नेंलाज तजि प्रियहि मिलैं अकुलाय २० अ
र्थः उदा एणी नातिकरीने कहे छे प्रगुहेत जणावइं पोतानी लाज मुकी नें आकुली थाइं अने पतिनें मिलइं ॥ छोपंधन ॥ऊढामितन उपहरनम बैमाइकपलसा
५ कितम तुमनोरथ रथनिके केसोदास जगमगें जैसे गायें गीतनमें पवन विचारु चक्रचक्रमनि चितु चढि लतल अका
सत्त विषा भुजल सातमें कौतुक रामु धिरव पुवापी रूपम रिसि मह रिविउका ने बहु बासर विनीत में प्यान गिरिफोरितों
रिलाजनरूजाइ मिल्यो आपु ही तें श्याम गाज्यों आपुनि भिधी नमें ॥ २१ ॥ हवे ठकुराणी सषी प्रतें कहे छइं मनोरथरूपी ओजे
विचार ते हनें विषइं थाक तोन थी जगमगवा ल्यो जायें छइं केसव दास कहे छइं जेह बोगीतमां गायो छे पवन क० वायु
रूपी योजे विचार ते रूपी यांपई मांचित्त जे ते ते उपरिचढ्यो ते आकास तल जक० ए थीन ते विछोप्रत में छे तनकामां सातमें
ता ठषमें छे जल में तमें छे मषीसरीरनें थिर कि हां लगें रामु बावितषात ताव नांमां णीनी पछे हरिविना में अनेकदिवस
कुमनीगम्या हवे तो नदीनां पूरनी पछें ज्ञान रूपी यो गिरिफोरीनें लज्जा रूपी आत रुनें ताजी आप गाजे नदी अने आप
निधिजे समुद्र तेहनें जिम मिलें तिम कृष्ण मीत नें मनें मिली ॥ २१ ॥ ॥ जानिनई संगजाति लैं को रतिके सवहें कुलमोंहि
तुरूद्यो गर्व गयो गुन जोवन रूपको बुन्य स्नेह पलही पलतु ट्यो काकू तिहारिये आनिकिये कहुं लाज सों नीकोंछ्यो नांतो
ईद्यो बांध्यो संबें हमहे रितु सें तु सापें न तु को कपडो नहि बूट्यो ॥ २२ ॥ राधाजी कृष्णजीनें कहे छे अनें अमारी जाति
मे ल्यो साथें षकइंकोर तिजाति रही अनें कुलसंघाते हेतुह तु तेपणटल्यु अनें गुण नथा रूपन थायो वन नेहनो जेगर्व
हतो ते सें छेई गयो अनें पुन्य हतुं ते सें धपुं तु काकूत मारी आणबाही नइं कहुं तुं जे लाज सों नातोह तुं क० लाज साथें स

नो

गाई हती ते छूटी एनलां सगला इ वानां न मारा मुह साह मुजो इने जा तां मे त्यां पलतन मारा मन मांहे घीलगारे कते कम्पट गयुं
नही ।। दोहरा ।। अधिक अनुठा लाज ते प्रिय में जाइ न आज क्यों ही करि सकी इ कहे ताके जीय को ताप ।। २३ ।। अनुठा नायिका ।
लाज सों ता नी मुकी ने पीयु पासे जाइ नही अने कोई स्वामीनइ यिक सो जे तु गई हती ते हनी बीह के ही कनमई ।। २३ ।। अनुठा ऊदारउम
जा ने को के सब कौ लोक स्क कब का कहमारे ही मोलणकूले मांन न पाये न मान करइं नब ने नरिअषतिले न समुले जा वे बाईकनी
ऊ नही चलि वे गिब लायत्यो ले ऊ मके लिक हाइ हन्नले जान न हो वह काम कलीऊ मलाय गई बऊ स्यो फिरि फूले ।। २ सः।।
४ ।। एक समे ने विषई सषीये नायिका ने हसनांक स्क जिवारु आज का ऊ सा घई ही मोला षारे फूलतां हतां । तिवारे का
स्क जे कोण वहे छे असाली ही मो ले कोइ फूल्यां न थी अने इ मक ही रेवा मां तु कांइ पाये नही मान थाइ नही पाली मीये
नहीं तिवारे सषी जई नइ नायक नइ कह्युं जे महाराज तुं ना वलाउ छो बला इल्यु महाराज एहनइ आसना वासना क
रो कलेस सके लो असे तो बरां सइ एनतु कस्क न मे जाणो छो एकामनी कली फूलसरि षीको मल कर माली एन ले का
इ फिरि ने फूले ।। २४ ।। अथ प्रथम मिलन दोहरा ।। ।। सजनी सहेली धाइ घर सुनइ घर निशि बार अति नयउ छव व्याधि
मिसि त्यो ति विपन विहारि । २५ । एन ले स्थान के प्रथम मेलापक्रई जनी क ० दासी ने घरे १ सहेली ने घरे २ धावमाताने
घरि ३ अथवा सूना मंदिर मांध अथवा रातिर मनाहोइं तिहां ५ अति नये पले बणु होइं तिहां ६ अथवा उत्सव होइ तिहां ७
अथवा दूषनाने मिसि ८ अथवा जीमवार तुं तुं तरू होइ तिहां ९ अथवा वन वाग मां जा बु होइ तिहां १० एनलां स्थानक ।
प्रथम मिलाप ना जाणवा ।। २५ ।। इनही ठोर नि होतहे प्रथम मिलन संसार के सब रा जा रंक को रबि राधो किर ना । २६ जनी
के घर को मिलन तु षेलि तुअनि छारि रतिपति के लि कला कुसल बिलसति फगल कुमारि ।। २७ ।। जनी के घर मिलन सविया इके ता सा ।। २९
बेषु के कुमारि का को वृज की कुमारिकानि के सो दास मांझि सांझ ग्राम पराये तिके काम की लतामी लज प्रेम मासमी असन राधि
का के बुद्धि बलु कंवलुजसे तिके दोरि२डु रि२ पूरि२ अभिलाष लाष [illegible] ता तिको अनूप रूप के तिके जनी के अजिर आज रज
नी सजे नी में साचे की नि स्या मु चोर सिहचनी पेलि के ।। २८ ।। एक समे नइ विषइ श्री राधा जी संघाते जाली ने आषि मीचा मणी

रमे छे तिहां के सब रायपो ते कुमारिका बुरूप करी ने बोह कने मांघे पगदेई ने बृजनी कुमारिका मिरमवा लागा तिवारे कामा ।
नी कलीम रिषीनि र्मल एह थी जे हरिना कांहि ते बुद्धि बले करी राधा जी ना कंठ मांहि घाली मिली नइ कऊ जे ऊ इलो क्यां मे छि
प्यो तु तिहां तु मे झोधता ५ आ बछो इमक ही नई सोत छो भी गया पगु क बे गला गया राधा जी पलि झोधता अतिहां गया ति हां को
ता ना मनो रथ पूर्ण की धा अनेक ता तिनी झी मा की धा तिवारे षासी सोना नी सषी हती ते णीइ राधा जी नइ कऊ स्क सषी आज ज
नी ने आगली स्या मचोरे आवी आषि मीचा मणी की धी ।। २८ ।। सहेली घर मिलन सविया इकं ।। नैन नि के तारन में राषो प्यारे पूतरी
के मूरली ज्यों लाये राषो दसन वसन में राषो पुंऊज बोवि वनमाली वनमाला करि चंदन ज्यों चतुरा चमाइ राषो तनमें के
कवि सो रायक ल कंठि राषो करिकं बुलोगि कर मकर म क्यों ऊ आ नी हेन बनमें चंपक जीसी का फ सषि बंदि देवता ज्यों ले ऊ मे ।
रे लाल इकें मे छिराषो मन में । ३० । सषी कृ ऊ जी नइ क हे छइ हे महाराज आंषि ना ता रा माहि की कीर हीछइ इम रा षज्यो अ
धर मुरली जि म अधर नइ विषइ राषो ति म राषज्यो हे वनमाली बेक ज विचे ही या उपरि जिम वनमाली राषो छो तिम बा
ला रा षयो च तुर चंदन जिम शरीर चमावी राषो छो तिम राषयो हे केसव राय जिम कंठ नइ विषइ कंठी राषो छो तिम रा ।
षज्यो नमारा कर्म नइ योगे ऊ अने कर्म करी आही लगइ ले इ आवी छो हे का ऊ चंपक सी चंपक ली नी पव इंसषि इ एदेव
ता नी सिद्धनी पजे छइ ते हनी पूव इं मन मांहि मेली ने राषो ।। धाइ के घर मिलन सविया इकं ।। हसन षेसत षेलु मंदल ई चंदतु ति ।
कहन कहानी अरुकूज में नय हेली जाल के सोदामनी दब सआपलो २ घर हरे हैं सि उ बगए बाल का मकेल बाल घोर उ वग
गन सघन घन बिऊदि सि ज बचले का कंधाय उ छि बोली नहि काल आधी राति अधिक अंधार मांझि केसे जे हो राधिका की
आधि से ज सो इ रहो प्यार लाल ।। ३१ ।। एक समे नइ विषे अनेक गोवाली या ना बालिक बालि की यो राधा नी धाविनइ घर ४
रमतां हतां रमतां २ चंद्रमा नी कांति मंद थई कां हली उ कहि वामां मी मठे पेलि यो कहि वामां मी केस बदास कहे छे नि द्रा ने वसथ
या छइ आम आम लोघ रे हल वे उठी गया ते ह वे समे अकसमात मां मेघ अं धारी आ व्यो आरे दि सई अंधकार थई रह्यो छइ तिवा
रे कान्ह जी उठी चाल्या धाइ ति वारइ बोली हे महाराज आधी राति गइ अंधार घोर थयुं एह मां एकला किहां जास्यो राधि का नी ।
\\ आधी सद्याइ एके को रे सूई रहो ।। ३२ ।। दोहरा ।। अति उत्कंठा इहैं विछु इहों ऊल की अति लाज सुने मं ।

अतिनयमिलनु दोहरा सब जगमें अतिअगनितय थमें कहुनरहाय सब जगमें अतिसरतिरूप अगनमें जनहै जाय १९

दिरमेंमिलें कीनोसबैसमाज १ अनायरमिलनु उधारणमविया इस्तीमाया ॥ देमनहीं चित्रसूनी चित्रसाला आलाओं उसरू
+ नि + पकी सीमाला राधारूपकसहायेहैं नूपुर केरूमेंरेंके अनूपरूपतानेलेतियदनतिलतालिदेव अतिमन्निसायिहे औरसें मेदे
मायदीनी ओ चकदूबरकाजजेसेलेयेंगान नेमइं जोइन बनायेहैं के सोदासकहेंपरिअलजसलजसेनजलेंसेजोच + नै +
+ ए + नजलेंसे के आयेहैं॥२१॥ ॥एकसमेंनइविषइचित्रसालासूनी हती तिहांचित्रजोवेछइं तिहंराधीकाजी केहबांछइं
जालीइरूपनीजमालानक्रवइं अनेअनेकसृंगार कीधवे बलीपोतानुआपणमेंछइं बलीसगीतविद्याजाणेछइं ते
मोतें नृत्यआरंस्य जसरनाजसकार घायइछइं तेहवामां उचिताकाजजीइ देखोदेखामो के सोदासकहेंछे काजदीवा
पबीएहवुगात्रमधु नेकहिबाइनहींजलजकमल तेसरिषीआंषोहती तेजलदजेमेघनाबांटातेसरिषीथइनइआ
वीछे॥२१॥ निसिचारमिलन॥ एकसमैंसबदेषणगोकुलगोपीगुपालसमुहमिलाए रातिनइजूवलेघरकोदसकुदिसि
जानियै मेहमहामंदिआए कूसरिबोलतनींहीसमुजैजमेंकेसबयोंछिनमेंतमबाए औसेमेंस्यामसुजाणचितुरुविदाकेदियेमह
कियोमनलाए॥२२॥ ॥एकसमेनइविषइ गोपीगोपालसमस्तगोकुलजोबानइ आव्याछइ जोनइजोनइरात्रपनीति
बारेंदिसोदिसमेहचमीआव्योछइ जालीइएहवुअंधकारथयुंछइ तिहांबीजातिमिरबोलइछइ तेसांभलीनइसम
स्यानगकहतांसर्वसमस्या केसबदासकहइछइ छितिजेपृथवी तेहमांअंधकारव्यापीरह्युंछइ तेहवासमइंने
विषेमृष्णजीआवीराधाजीनेमिल्या पछेमोतानामनोरथपूर्णकीधा वियोगनेविदाकीधा पोतइंमनगमतुंकीधुं॥२
२॥ अतिनयमिलनसवैया॥ जानीआगिलागि वृषभानजूकेलोंतुदोरिब्रजबासीचडेचिडुंदिसिधायकें जहांतहांसोर
तारीतारिनरनारिनीकीसबहीकी तुटगइलाजहायवायकें औसेमेंमुकुंदमरकाउसारोसुकबाहिरेकेराधिकाजगा
ई औरजूवतीजगायकें लोचनविशालबालचिबुककपोलचूमैचंपेकीसीमालबाललीनी उरलायकें॥२३॥ एकस
मइनइविषेवृषभानानामकुतमइपासेहूकमीआगिलागी तजालीब्रजबासीसगंदोडीआव्यात्यारेदिसिंचम्या जिहां
तिहांबकोरथइरह्योछे नरतघानारिक अतीनीलीसघलीथइरहीछइ मझकोनीशखवलावनीगतिबूटीगईछइ व
सवानाघरमांहिंथी काढिबामांमा एहवासमइनइ विषइकाजकुंअरआवीनइ सुकजेपोपट
+ कहे + + जा +

६
सारिकाजेमेंनातेबाहिरकाढ्यां राधिकानेंजगामीबीजीजेस्त्रीयोंतीनेतेहनेंजगाडीकहसुं आगिलागीछे तिवारेंजेजिहांनेतिहां
नासीगयां तिवारेंविशालछेलोचननेजेहनां एहवुंजेमुरवतेहनेंविषेचोंबनकरीनइबांधानीमालासरिषीजेराधिकातेकं
ठनेंविषइराषीनइमनोरथपूराकीधा बलकीवरसुंगांठिनाकीरातिजागावेकोआ
ईब्रजसुंदरेंसमारितनुसोनोसो केसोदासनीरनईनंदजूकेमंदिरनिमध्यअधउरधबद्योनकहुंकोनेसो गावतिवजाव
तिनानारूपकरिजहांतहांउमगतआनंदसोंओनोसो स्यामलेकीसूनीसेजमोइरहीराधिकाजूसोइआएस्यामजैउमाहिम + लि + ले +
नगोलोसो एकदासमइंनेविषइवृषभाननीबेटीतेकिहांमिलइछे तेकहेछइ बलदेवजीनीवरसगांठिकउत्पत्ति
नोदिवसतेहनीरात्रिनंदजीइउत्सवकीधे तिवारेंब्रजनारीसघलीसृंगारकरीनइरात्रइजागबाआव्या केसवदासकहे
हेंछेनंदजीनाघरमांतीसथईउपरिहेठलीउपरिलीनइनीसघणी कोइसूणोषालीनरह्यो गामगामनाचेछेगावेछइ बजा
वइछे अनेकरूपइकरीजिहांतिहांआनंदनोओनोसोकहै तेथुनथीतेसमइनइविषइस्यामजीनीसब्यासूनीहतीतिहां
राधाजीसूतां पाछलिथकीकृष्णजीआव्या मनमांगिनोकहै कोदीनीमाहणापछे तेसमइनइविषइस्यामजीनेमनमानी
लिधी मोंछिनिदानिनिदानदिएउपचारबिचारिकिएनछिराणी वेदकीसासणिआ
छिविनासनहोमिकुंनासनकुंनिहिराणी केसवक्योंकुचलोचतिबोलतिदीनलईवृषभानकीरानी आएहिमेदि
मरूकरिकेबकुस्योंउनकेवहपीरपरानी एकदासमइनइविषइश्रीराधाजीनेपेटपीडथईछइ तिवारे
अनेकउपचारकीधा तिवारेंवृषभाननीस्त्रीनंदजीनेघरेंगया जइनइजसोदाजीआगलिवात्करवेवाछे तिहांकहे
छेजेराधिकानेसबलवेदनाछेजेहतुंदनिदानजोईनइवूझ्यालोकसालेदानदीधां बीजाअनेकउपचारकरतांकां
काइथीहतीनथी वलीवेदनाअज्ञायेरोगनामसबानेंअछेजेअर्चनकांईहोमकरीउनेघाकानहीं वलीकेशवतमतिकि
मेतिहांलगेंआवो तमउपरिघोलीजाउंएहबीदीनथईनइ वृषभाननीस्त्रीबोलेछे उमेलगारेकआव्याहनाकोइकउ
पचारिकीधेतिलोपीनसांसनीथईहती तमेमल्यापछीनिमनोतिथाइछे

DR BHAU DAJI

।।तो जतु के अपरि अकेली गई पांनि र्माति देखिवे कों केसो दास आनंदु विचारि कें।

सो ते के बुलाय कूं ती बेटी वृषभान जू की जे बे कें जसोदा रानी आनहि सिंगार कें सो जन के लवन विलोक बे को पान माति त
पर आकेली गई आनंदु विचार कें द्पषतु रहरिलाव ने कों देखि लागी दो रिगही आवतु औसी वेणी कैं कमाविकें लेटी लर +उर+
अकमन लायो करि बांध्यो मुह केस रि कों मांजि लई बेसर उतारि कें एक समई नंई विषई श्री राधा वृषभान नी
बेटी नंदजी नंई पर नु हनरी हती ते सिंगारी ने जसोदा जी जमते मी आया बई ते समें नंई विषई ठाकुर जी ई जमवा नाघ
रमां जई बैठा पान षाई बई राधा जी ने जोवा नई कां जे बेठा बई तिहां राधा जी एतलां लगी आनंद मांहतां माब लिषी ठाकु
र पलि मे मी इंच ढ्या देषी नई माडी लागी तिवारें कृष्ण जी ई होमी नई बोटलई जाली ते जाली ई सर्पजनी है पढे लेइ नई
आलिंगन दीधं मन गमतु करी मुक्र पढे केसर नी आक्रि करी नई नाक मांहि थी बेसर ऊतारी लीधं

री देख्यो कालि गई कहि दें न पसार ऊ ते लिन रो फुनि फेंटी. बोभो नहीं मगु बो मो जो बायें बो नावें ब +वो
तोक न लाज अैनपेटी वातन सखा रिकहो स्फ नि हे को ऊ जाणत हो यह कों नकी बेटी जानें हों वृषभानु की है पर तो हीन +न+
जानत कोंन की बेटी. एकदा प्रस्ताव ई राधा जी सघात वन मां गया हता तिहां ठाकुर साहमा मल्या तिवारें ठाकुर
कस्क ने काल आपवु कहीगया हता ते आयो नहीं तिवारे गलामिपट को घाली नई षोलोमाघरे नो जावाद्यो तिवारे राधा
जी ने पु घटो काढी नई उत्तर द्या तिवार ई सषी ई कह्यू जे अमारो मार्ग मुंको तिवारें ठाकुरे कह्युं जे मार्ग मुं कूं जो एंघ
टो लाज मुंक ई मनुहारि करई तिवारें सषी ई कह्युं जे संताली बोलो को इ आव तो जानो सांत लेन मे जाणो ... कहनी बे
टीछें एमारा मालसनी बेटी बई ठाकुरे कह्युं जाणुं वृषभाननी बेटी बई पणि तु मनेन थी जाणतो जे तु केहनी बे
+ता टी बई हरि राधिका मांसरो वर के तट ठाढे रिहा घांसो हाथ बढाई पिय के सिर मागि पिया मुग ताब रा जति मा लद ऊन हिं
ऐं कटि के सव का बनिसे तक सेंस बही तन चंदन चित्रु कीएं तिकसें भितबी रसमुद्र ऊ नैं संग श्री पति मानु ऊ श्री हि लिएं २८
एक दा समें नंई विषई श्री कृष्ण राधा जी मान सरोवर ने कांठें उत्तां छें बेलमी ईं बलगां छे कृष्णजी नई माछें मांघ मी वि
राजे छे कृष्ण जी ई स्वेत वस्त्र नो राधा जी नें माथई वालि पमो ती बास्या बई राधा जी नें कृष्ण ने कंठ बई बजू ... माला विराजे छें कृष्ण
जी ई स्वेत वस्त्र नी गात मीतो मी बई अंग ने विषई चंदन नां उगट णां कीधां बई ते केह वादी सई बई जाली ई समुद्र मांहि थी पर

+नि ।।जल बिहार कों मिलनुं कृतु ग्रीषम ह्व मकूं नकली कामु ... तिन हीं सदा समवेन १५

।।प्रथम मिल
न ... मैं कहै
अपनी मति
अनुसारि
सो हाव ना
बकवे वर्न
नककें ...
निअबबहो
न प्रकार १६

मे सरलषमी सहित ठ्लावे रितु ग्रीष्म की प्रतिवासर के सब मिलत हैं यमुनां जल में दू
त गोपस्क लाव हि मार गुपाल विराजिंगी बालि ... अति बूम नहिं गति मीन निको मिलिजाई उ वें अपने धरतुमें दूह लां
तिम नो रध्घ दूरि दीउ जणि हू रिव हें व बिके व लामे एकदा समई नंई विषई ग्रीषम गरति हती उ जालो नादि हाना
हता सकु गोपि ग्वालि मली मली नई जमुनां जल मांहि षेलवा जाय छें एक गोपी यों नां हूंद की लई बीजा गोपी मासि गोवाली या
सगलां भीजई वली गोपीयो मांहि थी कृष्ण की मारे मरई घकी प्रसन्न जी ... कीमारे ते मीन जेमाब लां ते हनी पढे बे जणां आ
वीनई एक ठां बच्यां तिहां पोता नां मनो रथ पूरण करी बिजणां पाछा व लई ते कृष्ण की मारी नई कृष्णजी गोवालीयां मां माधु
काढई राधा जी आवी गोपीयो मां मां ... काढई कोइ मन मांन जाणें जे कि हां हता इह विधि राधा रमन के बरनें मि
लन वियोग केसवदास विलास सकल बुद्धि बेलें ली जकूं ले षि १ केसवदास कहे छे इण प्रकार ई श्री कृष्ण राधा नां मिल
वा नां स्थानक वर्णव्यां बीजा बुद्धि वंत कवि ... ठवा मान यो २ और अनेक ... रसरी कीं बरन्यो इहदो
रि रस में विरस न वरणीए ... केसवदास कहे छे बई त्रीजी नायका जे सामान्या ते इहां ... वर्णि
वुं मोटा रूक बीश्व रमणि ... रस मां विरस वर्णवी ई नहीं ए सब जितनी नायिका बरनी मति अनुसारि केसवदा
स बआनि जकूं बुद्धिवंत आवश्प्रकार ३ जे एतली नायका मांहे रीमति सारु वर्णवी केसवदास कहे छे बई एकी की नाआ
व प्रकार जाणवा ३ इति श्री रसिकप्रियायां राधाकृष्ण वर्णन हाव भाव वर्णनो नाम प्रथम प्रभाव:।।५।। रघ ... जौवना ... सवैया।।
आनन लोचन वचन मग प्रगटति मन की बात ताही सों सब कहत हीं सात्विक विन के नात १ अर्थ: आनन कहतां मुख लो
चन जे नेत्र वचन जे बोलवुं एतले छाने मन नी वात कई ते प्रगट दीसे ते हनुं नाम भाव १ भाव ते पांच प्रकार के ... वि
भाव अनुभाव स्थायि सात्विक कहत हैं विभचारि कहि रात २ अर्थ: ते भाव पांच प्रकार ना बई एक विभाव बीजो अनुभा
व त्रीजो स्थाइभाव चोथो सात्विक भाव पांचमो विभचारी भाव २ जिन तें जगत अनेक रस प्रग
ट होत अनयास तिनसौं विमति विभाव कहि वरनत केसवदास ३ अर्थ: जे भाव थकी अनेक रस उपजें अनयासें प्र
गट थया केसवदास कहे छे बई मोटा कवी ते हने विभाव कहे छे ३ दुहरा सब विभाव दुं भांति के केसवराय बषानु आ
बत्तूप बबिऔ रस्मी ... मांहिं बहि कहे जितु ... नन संकु ... कोहें १ सवैया ... देसोज ...

जानिके ...
मनैं ...
बहोचिन ...
देरदन ...
बनक्र ...
गहो ...
मोहे ...

+तिकैं अनुअवलंबही ते अवलंबन जानु जिनतें दीपतु होत हैं ते उद्दीपन भानु ७ +३३
लंबन कहू सरो उद्दीपन ते सहुमानु ४ अर्थः ते विभाव वे भांति के हैं एक आलंबन बीजो उद्दीपन ४ जिनकों तनु अवलं
बे ते आलंबनु जानु जिनतें दीपन होत है उद्दीपनु मानु वखानु ५ अर्थः केसव कहै छै आलंबना ते हमें कहीइ जेहनइ
सरीर अवलंबा इ रहै अनेक जेह थकी रस उपजइ छइ तेहनें उद्दीपन कहीइ [+दंत+]
दंपति जोवन रूप जाति लक्षन जुत सखि जन कोकिल कलित वसंत फूल फूलैं अलि उपवन जलचर जल जुत अमल [मधुकर]
[कमल] कमलाकर चातक मोर सब्द तडित घनु अंबर मलयज दीप सौगंध गृह मान गान परिधान मनि नवनृत्य [+जु+]
भेद विनादि सब आलंबन केसव वरनि दंपति कहता स्त्री नर नार जोबन रूप जाति लक्षन सखि जन कोकिला नासब
द वसंत फूल्या फूल अलि भमर उपवन कहता वाडी जलचर कहता मीन निर्मल कमल मधुकर जे भमर ते लीयुक्त कमल
ना समूह चातक कहता बपीयो मोर ना सब्द तडित कहता बीजली घन ना मेघ अंबर आकास मलयसमीर सेज
दीवो सुगंध गृह सुंदर भावतें सुंदर महेल चांदनी वस्त्र पहेरवानां वस्त्र नव प्रकार नृत्य भेद वीणा आदि देईनइ वाजि
त्र केसव कहइ छइ एतला सगला आलंबन कहीइ अवलोकन आलाप प
रिरंभन नख रद दान चुंबनादि उद्दीपन हैं मरदन परस प्रमान एतले वानइं थकी कामनुं उद्दीपन थाय जोइवे थकी
बोले थके आलिंगन थके नखक्षत थके चुंबन थके स्तन मर्दन थके स्पर्श कीधइं थके एतलइं कामे उद्दीपन थाइ
आलंबन उद्दीपन के जे अनुकरन विभानु ते कहीजे अनुभाव सब दंपति प्रीति विधानु
आलंबन अथवा उद्दीपन तेह नुं जे अनुकरण कहता मानस प्रीति तेहनइं अनुभाव कहीइं दंपति जे स्त्री नर नारा तेह
[+सु+] नें प्रीति नु विधान छइ रति हासी अरु सोक पुनि क्रोध उछाह निदानु भय निंदा विस्मय स
सदा स्थाई भाव बखानु रति कहता प्रीति हास्य कहता हासी सोक क्रोध उछाह बीह कनिंदा विस्मय जाति एस्थाइ २२
भाव कहीइ स्तंभ स्वेद रोमांच सुर भंग कंप वैवर्ण अश्रु प्रलाप बखानिजै आठो नाम प्रवीन थं [न]
न कहता गुमान स्वेद कहता परसेवो रोमांचित कहता उकारो स्वर भंग जे गद गद वचन कंप जे लये धूजणी छूटे विवर्ण कि
वर्ण फिरी जाय अश्रु कहता आंसू पडे प्रलाप जे बाचा बावायइं ए आठ नाम साचिक भाव कहीइ

व +तथा+
भाव जु सब ही रसनि में उपजत केसव राय विभातिय मति नसं कहत विभचारी कविराय सगला रसमां जे भाव
उपजइ तेहनइं विभचारी कहीइ जेहनें कोइ नियम नथी निर्वेद ग्लानि संका आलस दिन्य अमोह स्मृति धृति
व्रीडा चपलता श्रम मदु चिंता काकु निर्वेद कहता उकले नही ग्लानि कहता गलि जावुं संका कहता आसका आलस
मोह कहता अग्यान दैन्य कहता दीनपणुं स्मृति कहता संभारवुं धृति कहता धैर्य वीडा कहता लज्जा चपलता कहता चंचलाई श्रम कहता श्रमे
करीनइं मद कहता मदोन्मत्तपणुं चिंता कहता उचाट कोह कहता अक्षमपणुं गर्व हर्ष आवेग युत निंदा नींद प्रमाद जम
ता उत्कंठा सहित स्वप्न प्रबोध विवाद गर्व कहता अहंकार हर्ष कहता रलीयातमणुं वेग कहता मस्तक नी वेदना निंदा कहता
बदगोई नींद कहता नीद्रा विषाद कहता दुभमाभणुं जडता कहता जड थईरहवुं उत्कंठा कहता इच्छा करवी स्वप्न कहता सहणुं बोध
कहता जागवुं विवाद कहता विवाद करावा अपस्मार मति उग्रता त्रास तर्क अधि व्याध उन्माद मरनु त्यआदि द विभ
चारी युत आधि अपस्मार कहता कस अतिउग्रता कहता मोटाइ त्रास कहता बीहक तर्क कहता विचार आधि कहता रोग पीडा
उन्माद कहता ग्रानेमान मरण कहता मृतावस्था आधि कहता मानसी व्यथा एआदि देईनइं विभचारी भाव जेतक सा
प्रेम राधिका हरि कौ है ताते सिंगार ताके भाव प्रभाव तें उपजत हाव विचार श्री राधा अने श्रीकृष्ण नो प्रेम
थकी सिंगार रस उपजे ते सिंगार ना भाव थकी हाव उपजे ते हाव कहे छइ हेला लीला ललित मद विभ्रम बिहृत ति वि
लास किलकिंचित विच्छित्ति अरु कहे विव्वोक प्रकाश मोटाई मन मांहिं धरतो नथी केसव कहे छइ हेला लीला ललि
त मद विभ्रम विहृत विलास किलिकिंचित विच्छित्ति अने विव्वोक ए हाव ना नाम प्रगट मोट्टाइत सुकुमित बो
धकादि बखानि हाव अनेक प्रकार केवल वरनत ताहि कविराय मोटायत कुट्टमित बोधक आदि देईनइं हाव मोताओ ता नी बु
द्धि करी वर्णवइं छइ प्रकट न प्रेम प्रताप ते जहँ तन लाज समाज सो हेला तिहि रतहीय राधा श्री
व्रजराज पूर्ण प्रेम प्रतापें करीनें लाज ने समाज भूली जाइ तेहनें हेला भाव कहीइं ते हेला भावें करीनइं श्री जी तुम नहर
ता हत्या अवलोकति अंकुरा औचि अनूप सुख संग मग मांस तले गल मेली महुहा सम वासउ माय मिलि वह जोकि
\\कीया मिनी मांझि अकेली अधरा में बम्या अकीयि व सिकेसव राय करी रसरी ति ना वली वनामें दूमता
भ

हरी

न रूता रूप हीं कौं हरि लें गई हे ल हि हेली — अवलोकन जे जोवतुं ते रूपी यो जे अंरूमते लिं अंचि कं० ताणी ने अनूपम
जे वेतु ह ने रूपीया वेपास ते गला मां घाली मृदु कं० कोमल जे हास्य ते रूपा वास रूप गंध रूप कता तिणि करी नइं अनूआली रात्र
इं एकली हरि ने मली ने अधरामृत पाइ नइं वस करया एह वी री नें करी नइं वनमां हे भला न रूना हरी नइं हे ल ला वइ क
रानइं लेइ गई — विनु रूना ई वु लाई लई न वालो न रूला यि कें सां ति लली कौ फू
ली गयो मनु फूल्यो विलोकत के सब कानन राम घली कौ रूप महा मधुपान करायु कि छै परिरंतनु काम कली कौ हे लहि
श्री हरि नागर आज हस्यो मनु श्री वृषभानु लली कौ — एक समने विषइं श्री हरजी इं मुरली मां राधाजी नइं
साद कीधे ते मुरली मां न त्यें घकइ मोह पाम्या घर मुकी विकल थई नइं वनने विषइं गया तली ताति करी ने ते मीला
धा केसव कवी कहे छइ रासस्थली नुं वन कुल्यां देषी नें राधाजी नुं मन फूलित थयो ठाकुर ना रूप रूपी यो जे मध
ते हूंष्ठइ करीनइं पीधं कं० जो पं तिणइं प्रेम इं मग्न थया पुरूजी इं परिरंनन ने कं० आलिंगन दीधे काम कली
जे राधा ते हना मनोरथ पूरा कीधा इसइ हेला हाव इं श्री हर इं वृषभानु कुंअरी नुं मन हरयुं
करत जहां लीला निकौ प्रीतम पीया बनाइ उपजत लीला हाव न हां बरनत केसव राय — केसव कहइ छइ
+ मत + नि — नायक नायका जिहां लीला करे तिहां लीला हाव करे — पायिनि कौं परिवो अपमानु
अनेक सों केसव मानु मनेवो सी ठोत बो रूप बाइ वो भेवो। विठ्ठो वि विकुं दिसिं वो कि चिते वो वीजु कुवी तु नि उप + हिलोकर +
रियो हवो मानु ही कें घर कें लगि एवो आषि नि मुदि कें सापनि राधिका कुंज नि नें प्रति कुंज निजें वो १६ अर्थः श्री
स्वामिनी जू कौं लीला हाव परस्पर इं ठाकुर व कुराणी ने पगे लागवुं पडइ कोइक टाणइं मनाविवो पडइ कोइक २२
टाणइं अनेक तंबोल पणि षावो पडे अनइ कोइक टाणें पवरावो पडइ अने विठ्ठो नइं धनीयें धनीयें भारे दिसें।
जोयवतुं पडइ अनइं विठ्ठो षइं किवारें करोइ जावु पडे किवारे कंरूमी जाय गाउ परि भूवें तुं पडे एक पान कुंप।
रे तिवार ना सा जाय वतुं पडे ते त लामा टे श्री राधाजी आषि मीचिनइं एक कुंज थकी बीजा कुंजमइं जाइ वतुं सी

बालक इं हम्मं के म

पेठइं ३२ अथ कृष्णजूकी लीला हाव सवियो जांपिं जरोषनि में चढि तुं चें आवास तु परि देपनि धावै नित गोपचरि।
त्रनि कौं कहिं केसव भ्रमतु केकिं गुन गावि विचित्र चित्र में आपुना पो अवलोकि तो आनंद सौं उरलावि आगन तें।
मैंसेही — घर में घर तें फिरि आगनि बामरा कौं विरमावि १७ एक समय नइं विषइं प्रभुजी में मी उपरि व ढी नइं घर मइं घर तें
फिरि जरोषइं जांषी जांषी नइं जोवइ छइ गोवालीयाना चरित्र नइं निदइ छइ केसव कहे छइ धन धरी राधाजी
ना गुण गावइं छइ चित्रामणमां पोतइं स्वरूप लषी आलेषी नइं पोतइं स्वरूप आलेषी नइं पोतइं हृदइं जोयिनइं
आणइं प्रकार इं दिवस गमा मन छइ आनंद पामी नें हीया साघइ चांपइ छइ आंगणें थी घर मांहि जाइ छइ घर मां
थी आंगणें आवइ छै इणि प्रकार इं दिवस गमामे छै ३४ अथ ललित हाव लक्षण दोहरा: बोलनि हसनि विलोक
नि चलनि मनोहर रूप जेसें तेसें वरनिजें ललित हाव अनूरूप ७ अर्थः बोलवतुं हसवतुं चालवतुं मनोहर + ति +
गतइं जिम तिम वर्णवीइं तेहनें ललित हाव कहीइं ३४ अथ राधिकाजूकौ ललित हाव लक्षण सवैया: को।
मल विमल मनु विमलासी सषी साथ कमलाछी लीनें हाथ कमल समाना लाकें नूपरकी धुनि रूनिनि सौरें कलहंसनी — नकमै मनोहर हमनइ
बमकी २ नें पया लला — कें बोलें पूपरे चास चेदु वामरा लाकें कंचन कें तार कुच नार निम कुच नार लच किंड जात कटि तटि बाल कें हरेंउ।
बोलनि विलोकनि हंसनि हरे हेरे हेरे वलनि हरनि मन लाल कें १८ अर्थः एक समइं ने विषें श्री राधाजी ललित हाव
करता हूया कोमल कं० कुंउं विमल कं० निर्मल एहवतुं मन छै का जेहनुं जेहना मनमां लगार मेल नथी एहवी सषी
साघइं लीधी छइ अनइं कमल जल षमीत हनी पवइं कमल नाल सहित लीधा छइ एम थका चाल्या जायइं छै तिवा
रें नापुर राज रूजर तेहनी धुनि मां लली नइं हंसना सरषी बोल जे। ईनइं मराल जेहं सते चेदु बाजें बालक नेणें जाणु।
जे केस पास तेहने तार कुच ने तार हीयाने विषइं हार ने तार एतलें तारें करी ने बाला जे राधा तेहनी लवके लटकें
चालतां जाइ हलवइ २ बोले छै हलवइ २ जूइ छइ हलवे २ हसे छै हलवे २ चाले छै अने लालनुं मन हरे छइ

म्मार — कीद्वे +

पीतांबर चपलावत — चपलापट्ट किरीटलसैं मघवाधनुसोलवढावतहैं मृदंगाजतम्रावतबेनुबजावतमित्रमयरनवावतहैं छवि देखतदृग।
रिलोचनचातककविजकोतापवुझावतहिं घनस्यामघनाघनवेषधरैंदेखनेबनतेबृजम्रावतहिं एकसमईनें
विषईब्रजजीवनमांघकाबुजेंम्रतईम्रावईछे तेमामघसरिमादीमईछई तेकहोईछई पीतांबरतेहुछे तेजाणीईबीजली
साकारकरैछई मोरपीछनोमुगटमस्तकनईविषईछे ईद्रधनुषनामरषीसोताधरईछई मेघाधामोरगाजईछईति
ममृदंगवाजईछई वलीवीणावजावईछई मेघनईदेषीनईमोरजिमनाचैं तिमम्राहीमित्रजेगोवालीयातेहनईनचा
वताम्रावछई हेसईकहताहेसषीलोचनलरीनईजोईछई विज्जरूपीयोजेचातकतेहनातापनइउलवईछई घनस्या
मव्रजजीतेघनाघनजिमेंघातसरषाथईनईवनमाहिथबाबुजमांम्रावईछई २६ अथमंदहावलक्षणदोहरा॥ पूरनप्रे
मप्रतापतेंगर्वबूटैबकुलाव तिनकैतसनविकारतें उपजतहिंमदहाव ८ पूर्णप्रेमकहतांघणोजप्रीतिथईतिवारे
परस्परेंगर्वउपजई तेहनाप्योवननाप्रतापथकीमदहावउपजई २७ अथराधिकाकोमदहावलक्षनसवैया॥
छविसौंछबिलीहरषतानुकीकुंम्ररिम्राजुरहीकुंनीरुपमदमानमदवकिकैं मादरूतेंसकुमारनंदकुमारताहि
सयानपजे बतुराईनेम्र नेकताविती करीकरीने — म्रापुरीमनावतसयीनसमदतकिकैं हसिमुसौंहेंकरिपाईपरिकेसोंरायकीसौंजबरहेंजियनकिवें तिहैंसमें
उवेघनघोरघोरिदामिनीसीलागीजोरिस्यामघनउरसौंलपकिकैं ए अर्थः सषीकहेबईसषीम्रागतिहेसषीम्रा
जरुषतानतीकुंम्ररिजेराधाजीतेम्राजरूपनईमदईयौवननेमदैंवाकीरसाहतांसुंदरतेपोतेमनावईछई
नवरहने — सयानपजेचतुराईनईम्रनेकजातिनीकरीकरीवीनवईछे हसीम्रनेकसमदीक्ष पगेपडीरकेरावरायनास
मकरीकंहुजीवनेंविषेंहारीरसाछे तिणेंसमेंघनजेमेघतेहनीजेघटाच्यारेदीसेंचडीम्रावीछई तेहवेसमें २३
घनस्यामतेष्ठजजीतेहनाकोटनेंविषईलीपीनेंविलगीजाणीईमेघनीघटामांहिविजलीजिमसोतईतिमसो
लतीहवी २८ अथकृष्णकोमदहावसवैया॥ मैंहमोहनीमोहिसकेनसषीचपलावलचित्तवषानतहिं

+कांति+ +न+

रतिकोरतिसौंकुनकैरैंडुतिवंदकलाधरिजानतहैं कहेकेसवम्रोरकीबातकहारमनीयरमांकुनमानतहैं रुषतानु
सुताहितमत्तमनोहरम्रोरसिंदिविनम्रानहैं १८ अर्थः सषीसषीम्रागतिबातकरईछई हेसषीश्रीव्रजजीम्राजश्रीराधा
नारूपनईजोईनेकेहनईनजरमांम्रावतानथी तेकहोईछई सषीजेरुषवीतेमाजेकोइमोहनीछई तेमणमोहतुपजा
वीसकेनही म्रनेचपलाजबीजलीतेहनईतोचंचलकहेछई म्रनईरतिजेकामनीस्त्रीतेहनईतोएकरतीएकानेक
रतानथीचंद्रमानीजेकलातेहनईउबीकरईमानईछई वलीकेसवकहेछे उरकीकहतांबीजानीसीवातरमाजेलक्ष्मी
तेषकीएसुंदरकरीमानईछई रुषतानुसुताजेराधिकातेहनीमनोहरताथईसुंदरतातिलंकरीबीजीस्त्रीयोकोईदृष्टि
मांम्रावीनथी वाकुविलषनप्रेमतेंजहांहोयिविपरीति दरसनरसतननमनिरसि
तेंमतविलसकेगीत ए वातकहतांवाणीम्रत्यंतप्रेमकरीनइविपरीतथायेकं म्रवलीघायेदीवईषकेंम्रथवासार
लईषकेतेहनेंविलसहावकहोई कटिकेतटिहासलपेटिलयोकलकिंकिनीलैउर।
सोउरमाईकरनूपुरसोंपगमोंविविनांम्रंगीम्रासुभिंम्रंचलकोविसराईकरिंम्रंजनरंजितबाससं करीसुपत +कपोल+
नयनसेंनिकाईसुनिम्रावेतश्रीव्रजलूंषनेंलबितहींदृविदेषनपेई एकसमईनईविषईस्वामिनी। +सुषन+
जीवेठाहताशृंगारकरतांहतातेहवईकिणईकसोजेव्रजलूषणम्रावईछई तिवारईउतावलाथयालूषणम्रव
पहिस्यातेकहेछेकोटनाहारहतातेलेईनईकेडेवांध्याकटिमेषलाहतीतेलेईकोटिमांघाली मांझरहतातेहाथेघाल्यापु
हवाहतीतेपगईबांध्यांम्रंगीयाहतीतम्रवलापहरी वलाम्रलमीनीसूंबिनहीम्रंजनहतुंतेकपोलनईविषईलेपन
कीधुंम्रलतोहतोतेम्रांषिम्रांज्यो इसवाकुरम्रावतादीठातेशृंगारकरतीउठीनईदोडी
नंदनंदनवेलतहैंवनगातबनीछबिचंदनकेजलकी रुषतानुकुमारिविलोकिजहांसैंचिचितमेंविलसकीफलकी
गिरिजातनजानतपानतिमानबीरीकरिपंकजकेदलकी विहसीसवगोपसुतांहरिलोचनमुदिम्रसेंचिंगंचलकी +हे+
एकसमईनईविषईव्रजजीमेलतहेकं०रमईछई वननईविषईम्रंगनईविषईम्रनेकचंदननीविछि।

+परायैकराय+

त्रबन्याहै तेहवामां राधकाजी आवी दृष्टि पन्यां तिवारे चित्तमें विभ्रम ऊपनो तिवारें पानती बीमीहती ते हाथमां थी पनी॥
तेजाणी नहीं पंकज करि कमल ते हनाद लनी पाषडी हाथमां हती ते हनी बीजी करेषाधी तिवारे गोपना हती तेहन देइ र
दासी कहं माहोमाहिं आषमचकाराकरी नइ हसी ३३ अथ विह्नत हावलक्षन दोहरा॥ बोलन के समें विषइ बोलन +य+
देई न लाज विह्नत हाव तासों कहत केशव कवि कविराय ८ अर्थः बोलवा ने समे लाजे बोलाइं नहीं केसवदास कहे
हेवइ मोटा कवि तेहने विह्नत हाव कहे छइ ३३ अथ स्वामिनीजी को हावलक्षन सवियो॥ मेरे कहे दहिं जे जूतनु ते फि॥
रि गुपम स्यों हवका वदहोंगी मेरि बी प्रेम समुद्र में री धिकै रोष कैं स्तुते क्यों तिव होंगी हों सी मरें अंजनी गिगरी कब +ग+
ऊं हरि सों हसी बात कहोंगी पी बित्त की चित्र सारी चढी चित्र की पूतरी नई कोलों रहोंगी ८ अर्थः एक समें नइ वे
षइ श्री राधकाजीने प्रकाजी बोलावी रहसा पिण ताजे बोलाणु नहीं तिवारइ सषीइ राधकाजीने कह्यु जे माहरो कह्यो आज
हीयामां-दांजे छे पिण पछे फिरी ने गोष्म कालना काष्टनी परइ पलेवलो दाझस्यो अने प्रेमरूपी यो समुद्र तरवो छइ अने
बीजाने कह्यो एव मोहवक रस्यो लाज करस्यो तो ने हकि मनि रहवेहस्यो प्रीतनो पूरी किम पामस्यो अने सषी सघली यो ह॥
स्येरमें छइ जो तमारी परे अमे हरी सघाते कोइ दिहाडइ हसी बात करस्यो अने चित्ररूपणी चित्रसालीइं चडी एह बीचि॥
त्रनी पूतली थई नइ किहा कलगे अण बोल्या रहस्यो ३४ अथ कुमाज को विह्नत हावलक्षन सवियो॥ केसवराय सो
आजू सषी वृषभानकुमारि तराह तो दीषे गारि दई अस मारदई अरविंदनि सों मृदुके हेत ही तो सीषदई स्मुषपाइ लई अ
७२ रुलाई स्मगंधवलाई नवीनो उनमद देई कोनंद कुमार कबु सिरानि वे तें उचोनकीनो ३५ अर्थः सषीसषी प्रतइ कहे छइ हे
सषी आज केसवरायनइ श्री राधकाजी इउराह नोदीषे गालि दीधी काइ मारि पणि दीधि तिकमल दडीइं जोइ हेतु मांहडइ
नकीधे सीषामणदी धी स्मषदी धुं वली उरनइ विषइ स्मगंधन वो चढायो पणतो हे कृष्णजीइ जोयुं नहीं नीचीज दृष्टि राषी॥
ने कांइ उत्तर दीधो नहीं मनमाहिं जाजी रह्या ३५ अथ विलास हावलक्षन दोहरा॥ बेलत हसत बोलत अस चितवत चल २५
त प्रकास जल थलके सवदास कहि उपजत विविध विलास ८ बेलत करि रमता बोलतां हसतां चीतारतां जोतां जल

+संकोचन+ +र+

नइ विषइ थलने विषे केसवदास कहे छइ इम विलास हाव उपजे ३६ अथ राधकाको विलास हावलक्षन ज्ञकनी सो॥ कित
कउ अलिकून तिलक चलक मिसि सिजों हति में सोन विभ्रम निमि तेद हीने है लोचन नि मोचन बावत हिंद मनच मक स्थि लि वकित+
तकी ने हैं मंद हास मुषवास अनया मदास करि लीने केसोराय जिय यद भिप्रवीने हैं मोहन के तन मन मोहि वे को मेरी सषी
तेरे मुष स्म षही अनंत बुंत लीने हैं ३५ अर्थः सषी राधका प्रतइ कहे छे हे सषी ताहरा मुष उपरि के सपास नी अलक बुटी
छे ते तिलक उपरि षमी छइ ते चंचलपकी अत्यंत सोमाय मान दीसे छइ अने तू हजे ल्टुटी ने हनु व्हाव बुंद तारवउ ते ज
णीइ कोइक विभ्रम ना भेद ते जाणीइ दे वतानानु षी लोचन जे नेत्र तिले करीनइ मोचव उकरि विचार व उते लेकरी जे सु
संकोचकरि लाजने मुकीने नचावि वउकरि कटाक्ष करी जो वउ अने दसन जे दांत ने हनी जे ज्योति ते जाणीइ वीजली जसषी
ते मुकीने तिले करीनइ प्रकाजी नु चित्त चकित करी लीधुं छइ अने ताहरू जे मंदहास्य ने मरकले तिलेमुष मांहि षोस्स षेइ
चालइ ति लिस्म गंधे करी नइ अनया से करि सहित स्वेइ करी ने दास की धा छइ तो जाणीइ छइ जे ताहरं मुष मोहनन इवि
षइ मनने विषइ मोह उपजाववा ने काजे ताहरे मुषे स्मषे अनेक बुंतली धं दीसइ छइ बुंत धंदी से छइ ३७ अथ कृष्णकी
वैन विलास हावलक्षन सवियो॥ जितें तन तिहे रि तें ति हाराबे कौ निहोरति काजूं न निहारे जिनके से जुनिहारे है स्मरनरनागनवंको॥
-मांत+ स्यों निके प्रानपति देवतानि ऊके हिय मैं ते निहारे है इह बिधि के सोराय राव रे अमे मक्र अंग ऊपमान उपजी बिरंची पचि हारे
हैं रूपमद मोचन मदन मद मोचन किंत्रिय तन मोचन बिलोचन तिहारे हैं ३८ अर्थः श्री प्रकाजी आगलि सषी कहे छे हे म्हरे
राजन माराएक अंगनी उपमान षांसो ना अमे कहीं सकुं नहीं अने तमारूं रूप जिले जोइ कन षी ते जोवा नइ अनेक उपाय क
रे छे अने कनिहूरा करे छइ पिण जोइ सकता न षी अन इलोक है छे जे घटे छे जे हने को मारी मइ जोइ सकता न षी ते हने किं
मजो वाय स्मरकरि देवता नरकरि मनुष्य नागकरि सर्प ते हनी जे योतन दन्यारे तेहना तु स्ते प्राणपति छो देवतानो मति जे इ
ते हनातुमे पति छो तेहने पिण तन मन ही या मां हे षी बी सरता न षी इलों प्रकारे राजतु मारं जे अमे अंग ते हने त्रमा दे इइ ते
ह वु कोइ नहीं विरंची जे ब्रह्मा ते मल जोइ ने हास्या जे प्रकाना सरषु केह तु रूप नषी अने रूपना मदनइ मुकाव इ अने मदना
जे कंदर्प ते हना मदने मुकावे अने स्त्रीना मदनइ मुकावइ करि पतिव्रता पणुं मुकावे एह वा न मारा

Dr. BHAU DAJI

लोचनते ३८ अथकिलकिंचितहावलछनदोहरा॥ श्रमअभिलाषसगर्वस्मित क्रोधहरषभयभाव उपजतएकहिबारज॰
हांतहांकिलकिंचितहाव ३९ अर्थः जिहांएतलाबानासामटाकुइ तेहनेंकिलकिंचितहावकहीइ तेकहेछे एकश्रमअभि॰
लाषगर्वविस्मितक्रोधहर्षभयभाव एतलाबानाएकठाकुइ तेहनइकिलकिंचितकहीइ ३९ अथराधाजीकोकिलकिंच
तहावलछनसवैया॥ कौनैंबसेंबिहसेंलषिकोंनहिकापरकोपिकेंजौंहचढाबइ ललुतिलाजनरकबभ्रुभ्रुपअवलोम
दाताय+ रेडुरावेंकोंनकीलेतिबलायल्योंतिरीदसायहमोहिनतावें ओसीतोउकबफुननइअबतोहिदईजिनबायलगावें. ४
४. अर्थः एकसमेनइविषइश्रीराधाजीनेकिलकिंचितहावउपनोछे तेवर्णवेछाकरेबइ अनेकेउपरिरीसकरीनइ॰ दोमइछे
सहचढाबोछो अनेघमीकमांलाजमुकीनेओरठणुउमामीनामीबो अनइघमीकमांघूघटोकाढानइमुहटाकीनइबेसो॰
छो अनेतुवारइ२कहेनइ हेबालाउमनेसंघफबइ फुबलायलु मुकआगलिउमाचउंकहि एताहरीदशामुफनेगम
तीनथी एहवीउतोकिवारइनफुतीथई अनेउमनइजिलेएदशाकोधीनेहनेउएदशाकरीसमांताहरीतोकनइराषि॰ म
जें ४० अथसुसज्जूकोकिलकिंचितप्रियकिलकिंचितहावलछनसवैया॥ ओसीहिगोकलकौंकुलकौजिहिंदबिनिन॰
करै अनुकूलेंरवजननसेंमनरजनकेसबहारविहारलताजगिफूलें बोलैंजकोफुकोअनाबातफिरोबिकुकेसेंहियेम
+सव- हिफूलें रूपगएसबकैंबिसकेओसैहैकाफकहोरसकोनकैतूलें ४५ अर्थः एकसमेइनइविषइश्रीजीनइकलकिंचित॰
हावऊपनोछे तेअवस्थाजोईनइसषीकहेबइ हेमहाराजाएहवीबइ गोकुलनीस्त्रियोजेणीइदत्तनेत्रक॰ नेअनुकूल
कीधंक॰ वेवलहतातपाधराकीधंहेकेसवतेनेत्रकेहवाबइ बजननजनाजपक्षीतसरषामनरजनप्रसन्नथाय तिहा
हारिमानीनेफूलीरह्याबइ बोलबोलीनइवलीपाबाफकइबइ अनेअणबोल्येफिरीनइवलीतमेमनमांआलोमरा॰
षायोछे अनेघमीकमांहियामांप्रसन्नथाउछो रूपेंकरीसर्वनइबराबईरह्याबो तेकांकजीतमेकहोतेकेहनइरसलू
लाछोक॰ कोलेंवासलाछो ४१ अथबिब्बोकहावलछनदोहरा॥ रूपप्रेमकेगर्वतें कपटअनादरहोइ तहांउपजनबि २५
बो ब्बोकरस यहजानसबकोय ४२ अर्थः रूपप्रेमरूपतेहनोजेगर्वथकेकेकपटेंकरीनेंअनादरकरेतिहांबिबोकहावउछे॰
जेछइतसभकोजाणोबइ ४२ अथराधाकोबिब्बोकहावलछनसवैया॥ आवनजानिकेंसोयरहीहरयैहरीबेठेनजा
उ

॥बमकीउठी॥ ॥फबकीउठी॥

तिजगाई साहसकैंउरमध्यंधसोंकरजागतिरोमकीरोंचिजगाई नीविविमोचनतंचौंकिउठीपहिचानिफकीबनीयां॰ ॥रोमांचितें॥
कहिआई बासरगायंगवारचरावतआवतहैनिसिसेजपराई ४७ अर्थः एकदासमेनेंविषेंठाकुरजीनइआ
वताजाणीनेकपटेंकरीनइतिद्राआणीनेकपाटमूईरह्या तिवारेंहलवेप्रभुजीरकथईनइपासेंबवापणजा॰
गतीफुइतिमरोमांचितथई तिमरोमांचितथईनइप्रभुजीनोहाथविछोडवामांम्यो तिवारेंचकितथईनइउठीवा॰
फुरनइउलषीनइपाछीबिठीमुषमांहिथीएहवीवातनीसरीगई जुउनइगोवालीयादीहेगायचरावताहोनइअ
नरातपनीएतलेपराईसेजेंआवीछेमइ ४३ अथप्रियबिब्बोकहावलछनसवैया॥ एकसमेंएकगोपिसोंकेस
वकेसीफुहासीकिबातकही जाकेहतातदईतजिताहिकहांहमसोंरसिरीतिनही सकोप्रतिकूतरदेईसषीदृगआ॰
सनकीअवलीउमही उरलायलईअकुलायतऊअधरातिकलौंहिलकीनरही ४३ अर्थः एकसमइनेंविषइं॰
श्रीकृष्णजीइएगोपीहास्यकरताएहवीवातकही एहवीलतकेहवीसषीतमारेंबापेंजेहनइसंपीतेहनेंतजीसहअ
मसाथिएवमीप्रीतिबांधी तिवारेंस्नेउत्तरआपें आंषिमांहिथीआंसूनीधारादडदडचाली तिवारेंप्रभुजीइआक
लाथईनइहीयामांघाल्या तोहइअधरातिलगेंहेमीकीनरहीक॰ हसुमसतीनरही ४४ अथविच्छितहावलछन
दोहरा॥ भूषनभूषितबिकौजहां होयअनादरआनि तहांविछितविचारजे केसवरायवषानि ४५ अर्थः भूषणपहि
रवानेंसमेंजिहांअनादरथाय तेहनइकेसवदासकहेंबइ विछित्तहावकहीइ ४५ अथप्रियविछित्तहावलछनस
-सिंगार+ वियो॥ तनआपुनेंनायेंसिंगारेंनहोयसिंगारसिंगारहृयाही बुजभूषननेंननिभूषिहियाकीसंनेपेसिंगारउता ॥ताहरेसुंणा रितेमोलाउ नारीनजाइ॥
रिनैंजाही सबहोतसुगंधनिहीनैंसुगंधसुगंधसुगंधमैंजातेंसुनाही सषितूषनहैसबतोहिहैंतूषितंभूषनतिं॰
तुमंतूषितनाही ४६ अर्थः एकदासमेनइविषइउामीठकुराणीतमवाआवइबइ तिवारइश्रीराधाजीनेकहें
बइहेउामीअमेतोश्रृंगारिउतारीनइसूवाउपरिथयां बलीकिरिनेंश्रृंगारिकुणकरस्यें तिवारइंसषीबोलीहेरा
धाजीसरीरनइविषइविधातायेंरूपरूपीयोश्रृंगारिआप्योछे तेमाचोवे कृतिमश्रृंगारिमहिरबो तेतोमिथ्याबइ

अनें व्रजनूषणएहवाजेकृस्नजीतेहनांजेनेत्रतेजेहतुंरूपजोवानेंनूष्योछें अनेंव्रजनूषणकृस्नतेमांनेंछें तेशृंगारिकां
इउतासोजायेछइ अनेंसषीताहराअंगनोजेसुगंध तेलेंसुगंधइकरीनइबीजाजेसुगंधमयथयाछें तोतुंअनइ
सुगंधवारीरइउ तुंसुवासमयीस अनइहेसषीलूषणछइ तेतोदेहिस्यामाटेंसदादीसेछइ पिणतुंलूषणमाटेंसर्मीदी
सतीनथी ४६ अथवित्रियालूकोविछितहावलछनसवियो॥ पांननबायनपागरचीपलटिपटचिनकाहाधरदें.
कंठसरीवनमालमनोहरहारउतारिधरिंग्ररिकें चंदनचित्रनिलोपिसुलोचनलोकछिलोकनसोंलरिकें आ
का गंसुलायसुवासप्रसांमतलोपिहिंकेसवकोंकरिकें ४२ अर्थः एकदासमेनेविषेंश्रीकृस्नइशृंगारउतारीसर्व
मेहल्याछें तिवारेसषीकहेछइ हेमहाराजतमेपाननषाधाता पाघनीनथीबांधतानेचित्रमांसूधरइछइ कंठसि
रीउतारीमेलीवनमालाउतारीमेलीमनोहरहारउतारीमेहल्योतेस्यामाटेंचंदनचित्रहतातेऊटीटाल्यातसुं
कोइकसुंगमाड्यो अनेहेकृस्नजीअंगनइविषइंसुगंधलगावेजसुगंधछइ तेकिमटलस्यइ ४३ अथवित्रियामुग्धाइत
हावलछनदोहरा॥ हेलालीलाकरिजहां प्रगटतसात्विकनाव बुधिवलेंसोंकिनमोतितें कहेंमोग्धाइतहाव ४४ अर्थः-से
हेलालीलाकरतांसात्विकनावउपजे अनइबुधिवलइकरीनइगुपतराषइ तेहनइमोग्धाइतहावकहीइ ४५ अथप्रौ
ढाइतमुग्धाहावसवियो॥ षेलतहैंहरिबागेंबनंजहांबेठीप्रियाप्रतितेंअतिलोनी केसवकेसोंकुपीवमइंसीठिपरी
कुचकुंकुमकीरुचिरौंनी मातसमीपदुराइनलेंतिननसात्विकनावनिकीगतिहोंनी घूंघटकपूरकीधूरिविलोचन गौर
षि सुछिमारासूहउदाउहोंनी ४७ अर्थः एकदासमेनइविषइंश्रीराधाजीनोमोग्धाइतहावएकसमेनेविषइंश्रीराधा
जासषीमांहेंबेठाछें तिहांकृस्नजीतोरमताइआव्यातेअनेककउजजावागासुगंधवनीआव्यातेराधाजीकेहवाछइर
तिजेकामनीस्त्रीतेहषकीसोंहनीछेकउसुंदरछइ तेपाडुवलीनूछेंछें तिहांश्रीकृस्नहष्टहपम्या एतलेविकलथयाति २६
वारेमातापासेंछिवाहतातआगलिसात्विकनावउपनोतिठांकतहवांकपूरनोलूकोतनेत्रमांहेंघालीनइसिरोसह
जेकेरापासतेठांकीनेंपाम्या माजीइकसूजेसुंघायछें तोकहेंआंषिमांजपसी ४८ अथप्रौयमोग्धाइतसवियो॥॥

तोजतुकेंरूपलालनसनामहिंबेवेहेंनंदसदांसुषकारी गोपघनेंबलवीरविराजितबालबनाइविरींगिरिधारी राधि
काकाकीजरोषेंछेंफोकसींलागीगिरिमुरझाइविहारी सोरलएसमुझेसकुचेंहरबाधिकसोंहरिलागीप्यसोप्यारी
४८ अर्थः एकदासमेनइविषइंसोजनकरीरूपलालनूकीमसाटेनंदजीबेठाछें तेनंदजीकहेवाछेंसदासुषका
रीछें बीजाअनेकमोटागोपबेठाछें बलतद्रपणिबेठाछइ पाननीबीरीआरोगइछेंराधाजीरूसइआवीनेजो
युतेकृस्नजीनइफोकोलागेंएमकाटकीपम्यातिवारेशोरथयो कृस्नजीइएमजाण्युंजेरषेकोयजाणउपजेंतिवारे
हलवेइकसुंहरेकसुंजेबाधानहीमाहरेगलेसोप्यारीवलगीछइ ५० अथकृत्रिमितहावलछनदोहरा॥ केलिक प्रेमकल ६
लहमेंसोतिजेंकेलकपटपटरूप उपजतहेंतहांकृत्रिमितहावकहतकविनूप ४९ अर्थः केलिकप्रेमकलं
हतेमांहिंजेकपटरूपदिस्योतेहांकृत्रिमितहावकहीइतेमोटाउकविछेतेकहेंछइ ५१ अथप्रीयाकृत्रिमितहावलछन
सवियो॥ पहिलैंहढिरूविचलीउठिपीवदेमेंहीलषीसषितेंनलषारी पुनिध्यायिधरीहरियूकीलूजजातेंबूटिबेंकों
बकुलातिजभारी कुचपीरनदंतनरवछिनदेजिनिबेंरीतिकीमरयादनभारी फिरिनाहिकोंपांनषवावतहें उल
टीकवुप्रीतिकीरीतिसभारी ५० अर्थः एकदासमेनेविषेंसषीराधाजीनेंकहेंछे हेसषीपहिलाउहठकरीतेरीसा
षेवात्यांबासोदइनेउठाथइ तेमुकनेदीठीपछेहरजीइदोमीनेबांहझालीनइतेछोडवाअनेकाजेतेअनेकउपा
यकीधापणिहरजीइलाषमांषीमुकीनहीपछइकुचमर्दनकीधुंनरवछतनदीधातिलोवेरीनीमर्यादानांषीवलीफि
रीनेतेहनेंजमाननीबीनीवालीनइषवरावेंछइ तोसषीजाणीइछेंकोयप्रीतिनीरीतिछइतेतोअवलीछइ ५२ अ
थप्रियकृत्रिमितहावलछनसवियो॥ देषनहींजिहिसोनगहींअरुमोननजीकहुबोलउचारइ सोहिकीयोंलूनसो
होकोयोमनुहारिकीयोंलूनसूधेंपेनिहारें हाहाकेंहारिरहेंनंदनंदनुपायपारजिहेंलालनिमारें मंदनहेंमुकुना
हीकोंअंकलेहेंकंवुप्रेमकेंपावनिम्हारें ५१ अर्थः हवेसषीसषीप्रतइकहेछे आजअमेतमासादीठा कृस्नजीने

आवतां दीगए तलें सुंन गूहीनें वेगावें प्रकासिइं अनेक निहोरा करीनें मुकाव्यो तें बोलवा मांभ्रं तो एक कंजु रहे र बोलवा
मांभ्रं अनेक समदीधा तो ही मुष समुंन कीधुं वली अनेक मनोहार करी पगराधाजीइं धारी पवइं सोहमुजो यंनघी
सषीनदतंनदन अनेक मनोहार करी करीनइं हारी रस्यां तिवारें पगें लागा तिवारें राधाजीइं पादुइं मास्यां तेहनें
वलीउ ठागे वेसारीनें मुषनें मिलगा वइं वइं केसर नधा कस्तूरी कपोलनें विषइं राधाजी आंगि करइं वइं तेजा
णीइं वइं जे प्रीतनो मोगावहतो नथी स्यारो वें कं॰ सर्वथकी अजगो वे ५२ अथ बोधकहाव लछन दोहरा॥ सूछंमा
व के बोध जहां केसव ओर ही होय। तासों बोधकहाव सब कहत सयानि लोय ५२ अर्थः जिहां गुमहाव कं॰ सावज
इं कं॰ समस्याइं समजाववउ तेहनें केसवदास कहे वे जे कोइ वाप्या नाडाहा कहता तेहनें बोधकहाव कहें वइं ५४ अथ ना
यकानो बोधकहाव लछन सवियो॥ वेंग कुंती हूमला नकुमारि सरवीनिकी मंडली मंडप्रबीनी तैं कुसुलानें सो कंजपरी
इक माइ निं आगिं गुवालिन बीनी वदन सों छिरक्यो वह वाके हैं मान दए कमना रस लीनी वदन चीत्र कपोलनि लोंपिकें
आजनु आजि छिदा करि दीनी ५३ अर्थः एकदा समेनें विषें राधाजी व्रजनारीनी जे मंडली तेमछे कं॰ विचें वें वांहतां ते
राधा केहवां वें प्रवीण वें वली केहवां वइं सकल विद्यानइं विषइं निपुण वें तिहां एक नवी ग्वालिनी आवीनें करमांगु
सरि सुकमल आणीनें राधाजीना मग उपरि मुक्युं तिवारइं श्रीराधाजीइं ते कमल लेईनें वदनमें छिरकाव कीधो बारी
नें कमल हाथमां झालीनइं घणुं करुणारसमां लीनी गया ते कमल लेईनइं सषीना हाथमां आप्युं अनें सषीयें कपोलन
इं विषइं वदनानां चित्र हतां तें मुष छेवराव्युं अनें सषीनी आंषि आंजनी छिदाय कीधी हवें तेहाना अर्थ कहें वें करमांगु
कमल आणी मुक्यौ ते स्युं कं॰ एम सूचव्युं जे प्रभुजीनो मुष न मारे विरहें करीनें आ कमलनी परें करमाइ रह्युं वइं अ
नें कमल न मारा पग उपरि मुक्युं नें जालज्यो जे तमनें पगें लागें वें तिवारें वकुराणी वदन छांटिउं कं॰ आसुना कासना
दीधी कस्युं जे कांइ डरव पामामां करुणा कीधी कं॰ झाजी दया कीधी सषीनइं कपोलितांत चंदन हातां तलिप्यो स्यामाटइं
तिकस्युं जे प्रभुजा बाध्यो आंजन आंज्यो ते कस्युं जे कृष्णपद आववाद्यो ५३ अथ प्रीयबो

कहतां कम
लानुं आली
नविग्याननी
इपगें मुकउं

२७

धकहाव लछन सवियाः॥ सषि मोहन गोपसभा माहिं गोविंद वे वेकुनें छतिकों धरकें जन केसव पूरन चंद लमें चित चार्न
चकोरनिकों हरकें तिनकों उलटो करि आनि दयो कंकुं नीरजू नीर नए लरकें कहि काहितेनें कुनिहारि मनोहर फेर
दयों कलिका करिकें ५५ अर्थः सषी कहे वे हे सषी महामोहनाज गोपसभात माहिं गोविंद ज्योति धरि कं॰ कांति धरी वे वाव
इं जाणीइं मोल ककला संपूर्ण चंद्र उग्यो वें ते सर्वना चित्तरूप चकोरनें हरता एहवा वइं ते हरिनें एक सषीइं एक कमल जे पा
णीइं नवीनइं प्रफुजीनें उलटउं कं॰ अवलुं आणी मुक्युं तिवारें ते माहिं थी धरानी कली कं॰ प्रगटी तिवारइं प्रभुजीइं
एहवउं कस्युं एम कहीनइं कमल जूहीनइं कमल बीम्फ कहतां कली कीधी ते सषीनइं आपिं हवें तेहनो अर्थ कहें वें
हे प्रभुजी एकमल मांहिं थकी पाणी नादडे डापणे वइं जिम तिम राधाजीना नेत्रकमल थकी आंसना दनेमापणें वइं ति
वारइं वाकुरजीइं आसनादीधी कली करी बीनीनइं पाछुं आप्युं तहनों संकार वण तमांहिं एम सूचव्युं जिवारइं कमल
बीडास्यें तिवारें रात्रि पडस्यें तिवारें आवस्युं ए अर्थः ५४ दूहाः राधा राधारमणकें कहि यथामति हाव दीवइं केस
वदासकी छिमजों कबि कबिराव ५६ इणें प्रकारइं केसव कहे वें राधाकृष्णना जे हाव ते महारी मति सारू वर्णमा
एह मांहिं थी कांइ वांकाइ होयें तो कविराय क्षमा करयो ५५ इति श्रीरसिकप्रियायां राधाकृष्णवर्णन हावभाववर्णनो
नाम षष्ठम प्रस्तावः ६ अथ अष्टनायका लछन जिष्यते अथ दूहा॥ स्वाधिनपतिका उत्का बासकशय्या नाम अभिसं
धिता बषानिजें ओर खंडिता बाम १ एक स्वाधिनपतिकाः १ बीजी उत्काः २ त्रीजी वासकसज्जा ३ चोथी अभिसंधिता धपा
चमी अभिसंधिता ५ छठी प्रोषितपतिका ६ सातमी विप्रलब्धा ७ आठमी अभिसारिका ८ १ दोहरा केसव प्रोषित
प्रेयसी लछ्या विप्रलब्ध आनि अष्टनायका एसबें अभिसारिका कुजान २ ए आठ नायका हतीत कही॥ अथ स्वा
धिनपतिका लछन दोहरा॥ केसव याकें गुन बध्यो सदा रहें पति संग स्वाधिनपतिका तासोंकों बरनत प्रेम प्रसंग
३ अर्थः केसवदास कहे वें जेहनइं गुणइं बांध्यो भर्तार सदाइं पासि रहें तेहनें स्वाधिनपतिका कहीइं ३ अथ
स्वाधीनपंथछन स्वाधिनपतिका सवियाः॥ केसव जीवतुं जोहनकों अरु जीवकुनें अति बाम हीनावें थामरदेव
...तंबन उदीपक हि नायहाव अतिगूढ अष्टनायका अब कहौं केसव मति आरूढ १

नीरजू कं॰
कमल उलटम
जलनिर्नेप
गें मुकउं सषी
इं उलटउं

हो नौ रही बखिहांसि नौ

अदेवकुमारिनिवारतमायिनवारलगावै। ताहरियेंउगवारकीबेटीमहावरपायिजेंवाइदेंबावैं मेंतोंबचीअवहांसी
॥५॥ तिहांअसेंअसरूदेषेंतोउतरआवि ४ अर्थः हवेसषीराधाजीप्रतइकहेछइ हे राधेजेप्रक्रबुजनुजीवनकहेंछइ
अनेपहनामाबापनइतोजीवथकीपणिअधिकछइ अनेजेउपरिदेवनाकुमारमनुष्यनाकुमारातसेंअमानाकहइ
छेमाहाराकुमलउमरिसघलाइवारिनांषु तिहांपाणीवललकवारनलागइ अनेतेहरियोतेगमारिनीबेटीपगछे
वरावीनेंअलतोदिवरावोंगो अनेंकुंतोहसीनइंगुदरीसपणाजोकोईबीजोदेषस्येंतोउत्तरदेवरास्यइंनहीं ४
अथप्रकासस्वाधीनपतिकालक्षनसवियाा बोलीकेंसोपांनतोहिकरतसंबारिबोईमुकरज्योंतोहिमहिमूरति तनकसु
समानीहेंकेसोदासमविलासनेरीरूपसंपदासदाउदारजीवनकीहजिसीवषानीहें तेरीमनोरथलागीरथरथ मीठिइछ
पीछिपीछिंनोतेगुपालमेरोनंदलालगंगाकोसोपानीहें असीबातनकोंनजोनमानीक्रनिमेरीरानीउनकेंतोते देवताके
रीबातीवेदकीसीबानीहें ५ अर्थः सषीराधाजीनइकहेंछइ बोलीकंठतबोलनीनापाननीपछइउक्तनइसला मानीहे
स्याकरेछइ केसवदासकहेछइ नाहरानेविलासनाहरूपसंपदाजनेताजाणीयेप्रक्रजीनोजीवबानीहुनिजनोहे
ताहरामनोरथरूपीयोरथतजाणीयतगीरथनोरथनोहें नेपाछलिजिमगंगाजीनुपाणीचालइछइ तिमइहांप्र
क्रजीताहरामनोरथकेमेंचालइछे अनेमुकरजेआरीसोतेमाहेजप्रतिबिंबसरीरनोउंगोहिउपडेछइ तिमताहरे ६
विषइप्रक्रजीनुमुरवआरीसवसीरक्रछइ एसीबातकुणेसांभलीनथीकोणेमानीयेनथी ताहरीजवाणीतेतोप्र
क्रनेंमनिवेदसीनीवाणीछइकंठउबोलीतेजाणीइवेदबोल्या ५ अथउत्काललक्षनदोहरा॥कोनकुहेतुनआइयो प्री
तमुयाकेधाम ताकोसोचतिसोचुहीय केसवउत्काबाम ६ अथउत्काप्रछन्नसवेया॥ किधोंगृहकाजकिंनजुटउसषा २९
समाजुकिधोंकबआजुबुतबासरबितातते धानोतेनमोधुकिधोंकाजसोनयोविरोधउमज्योंप्रबोधकिधोंगुरजवदान
तेंसरवमेंनदेकुंकिधोंमोहेसोकपटनेकुंकिधोदेषिमैंकुंअतिडरेअधरातितेंकिधोमेरीप्रीतिकीप्रतीतिलेतकेसोरा
यअजकुनआएमनमोधोंकौनबाततें ६ अर्थः एकदासमेंनेविषइउत्कानायिकानइनायकेआववउकस्कहउअ

नेआवीसकानतेपरबेठीविमासणकरेछे जेसकंताईकाईघरकायेंषोतराणाकेंमित्रनीमंडलीमाहिथकीउठीसक्यानहीं
जेआजकोईवुतनोदिहाडोछे केसषीइकाइसमाचारकह्यानथी केंकोईसाथेविरोधथयो केंकोईंहीयामांज्ञाननोप्रबो
धदीधेकेंसरीनइस्वथनहीकुवइ केंसौदिलसंघातइकपटनीप्रीतिछे केंअर्धरात्रिमेघनीघटाचमीछे तेहनीबीहके
बीहनाकेकेसोरायमाहरीप्रीतिनोप्रतीतजोयेछइ हजीलगेंनाव्यातेसकंथयुंकहस्ये ६ अथवंदनमनोहरछंदसवै
या॥ स्मधिन्नतिगईक्रलिऐंकिधोंकाकुकिनलेईमोलतनबाटनपाई नीतनऐंकिधोंकेसवकाकुसोंतेटलईकोउना
मिनीनाईं मगआवनतेंहैंकिधोंआईगऐंकिधोंआवगेहिंमजनीस्क्रवधाई अबआएनंनंदकुमारिबिवारिसोंकोउ
बिचारअवारलगाई ७ अर्थः प्रकासःनायकाकहेछेहेसषीप्रकृजीनेअहींआववानीसधिन्नलीगया केनाकेबा
टेकोणइरोलव्याछइ तिणइबीजीवाटेगयाहस्ये आवाटनहीकेनाआवतांइबीहनाहस्ये केवाटइकोइनामिनीस लीधी
नेटथइ तेहीजमनमांगमीतिणेंइहांनाव्याकेंनांवाटइआव्याछइ केनोमोहेराआवस्ये केंहेसषीस्वपदायकजेना
यकतेआवीनेंसंपाछावलीगयाहस्येहजीलगेनंदकुमारनाव्यातेस्योंविवारहस्येविवारइएवकुअमरकीअं
अथवासकसय्यालक्षणदोहरा॥ वासकसय्याहोयसोकहिकेसवस्वविलासचितवैरतिगृहद्वारसोंपीयआवनकीआस
८ अर्थः जेरतिस्थानकनेंविषइबेठीविलासिनीसामग्रीत्यारकरीपीउनइआववानीवाटजोये तेहनेवासकसय्याकही
इं ८ अथप्रसछन्नवासकसय्यासवेया॥ चंदनविटपवपुकोमलअमलदलविमलतलितनलतातपटीलबकाकीकेसो वलेन
दासनामेंकुरीदीपकीसीसिरवादिरिहूरावतिनीलबासकुतिअंगअंगकाधोनपांनपंछीपसुबासमकुजितजितहोयि लबकी
तितनितताबोंकिचाहेवोसंगकीनंदलालआगमविलोकेंकुंजजाललाललीनीगतिनिहिंकालपंजरपतंगकी १० वं
दननाजेवृक्षतेहनइविषइकुमललीअमलकंठनिर्मलललितकंठसुंदरएहजेलवंगनीलतातेआरेपासेलपटानीछे बी
केसवदासकहेछइ तेहविछैराधाजीबण्याछइ तेदेहनीकातिदीवानीसिषासरषीछे तेनीलांअबरपहिस्योतेहमां
बमानइछइतोहीतेजटाफकरइउनथी अनेपवनकंठवाक पांनकंठपानमांपंछीकंठपंषीपसूकंठोरतेहनोकु

२

हां संचार छे। कहां षमा षमर आवे छे तिवारे चकित थई ने च्यार दिसें जोए छे जाणे कमलना आ भमर वाट जोइ छे एम नंद
लालनु आववबते कुंजनी माला जाला जोई नइ बालाजे स्त्री तिणें पांजरा मांहि लोपतंग जे मोपट तेहनी गति लीधी छे
कहतां कमच्यार दिसें एम हेरी हेरी नइ जोए छइ १० अथ प्रकाश वासकसय्या लक्षन सवैया॥ लाषनहैं कमषबिन सा
खी सकुलारव हीयें नीला षनमोहे कोमल हास निलेन बिलास ननि अंग कबास निकें मन मोहैं मूरति वन किधौं तुल
सी बन मैं रति मूरतिकी है कुंज बिराजति गोपवधू कमलाजानी कुंज कुटी महि सोहै ११ अर्थः सखी सखी प्रतइ कहे
छे हे सखी आज श्री राधाजी कुंज कुटीमा बेठा छ कृष्णजीनी वाट जोइ छइ अनइ मोनइ ववनइ मधुर बोलइ छइ ते
सखी सकुनाम नमां छइ अनइ सखी ते जे अनेक साषामणने हीयानइ विषइ गहे छे अने सकोमल एहवउ मंद हास्य
इ करीने त्रविलासइ करी अंगनइ विषइ निरमल करी सर्वनां मन मोहे छइ अने ते केहवा दीसे छे जाणीइ तुलसी
नावन मांहि मूर्तिवंत तुलसी न होइ एहवी कुंजने विषइ राधाजी सोहइ छइ जाणीइ कुंज जनइ विषइ कमलाजे ल
ख्मी ते जाणीये कुंज कुटीमां बेठा जनो है ११ अथ अभिसंधिता लक्षन दोहरा॥ मान मनावत कुंकरै मानवको अपमा
नु दुःख तो दुरव तिन बिनु लहे अभिसंधिता बषानु १२ अर्थः मनावना र मान करे पणु मान करइ अने मान दे तेहनु अप
मान करइ अनइ मिल्या पाछइ तेहने अत्यंत दुःख पामइ १२ अथ प्रच्छन्नाभिसंधिता सवैया॥ बार बार बोलिन बौबाल्यो
न बालिसन वबालक ज्यों बोलबे कौ कीन बिनात है यों यों मरे पायनि त्यों मांहन नें पाननसों होतु कहा अब कीयें माषन सीं
गातहिं कैसो पास सब गाहि कीयो हह हीसो हेतु ताकु भानि जियजीए बिनु कहा जात है औसैं प्यारे मियकुकों मांन्यो न मना
म यौं न भ्र औसो तो हिं बुझीयें युपी छे पछितात हैं १३ अर्थः एक दासमेंने विषइ स्वामिनी जारी सावी बेठा छइ कृष्णजी मनावि
वा आव्या अनेक मनोहार कीधी पगे लागा पिण काइ मानी नहीं एहवी ताहरी बुद्धि छे जे मपबनता वेपमीस श्रीजी उठी गया ति
वारइ पछे पाछिलि त्रवाट करवा मांड्या तिवारइ सखीइ कहिउ हे सखी ए ताहरा स्वनाव स्यो छे जे मने निहोरा कीधा तिवार
इ बोल्या नहीं हवे उठी गया पछी बालकनी मवइ हो छ फरफरे छइ जिम रपणे लागे तिम रप मैं लामे पाहणसर मा कवि २२९

ण थयां अने हवे मांषणसर सुमन कीधई स्फष्टाइं अने सखी केसव कहे छे तिवारें सर्व मुकीने एक हव माघें ज प्रीति कीधी
हवे तेहव मुकीनइ केहमु प्रीति करीसि अने एहवो बाहलो पीक पगे लागीने मनावनो हतो तु माने नहीं तिवारें अनइ
हवइ एह बी ताहरी बुद्धि छइ जे पछतावइ १३ अथ प्रकाश अभिसंधिता लक्षन सविया॥ पाय परें कुंन प्रीतम त्यों क
हि केसव कोकुन में हृग दीनी तेरी सखी सिष सीखी न एक कुरो सही की सिख मा बिजुलीनी मैं उलटी जु करी बिधि मैं
कहं स्यायें नि हो उलटी बिधि कीनी चंदन चंद समीर सरोज जरे मुरक देह सई कर ख हीनी १४ अर्थः एक दासमइने
विषइ कृष्णजी स्वामिनीनइ मनावना हवा तोही पणि मान्यो नहीं तिवारें कृष्णजी माछा वली गया सखी कहइ छे तेह
अत्यंतनी मासमें हवा मांड्या अने दुःख करवा मांड्यो तिवारइ सखीये कहुं जे अमे इम करो छो ते स्या माटे तिवारइ स
खी प्रतइ बोल्या हे सखी मोने केसवराय मनावी आव्या हता पिण कु मानी नहीं मे कृष्णजीनी अवगण कीधी तिवार कृष्ण
जी पाछा फिस्या पाछा वली गया सखी ताहरी सीषामण लागी नहीं अने क्रोधनी सीषामण लागी अने हवइ सखी चंद
न चंद्रमा समीर कठ राहो वायनइ सरोज जे कमल ते मुझने अगनि सरिषा मण लागी छइ अने कमर लीनइ दुःख
दो अनइ सखी परे जे में अवली गति कीधी तो विधि जे विधाता ते ए मुझ साथइ अवली कीधी जे काम दायक वस्तु हती ते
दुःखदायक कीधी १४ अथ षंडिता लक्षन दोहरा॥ आवन कहे आवइ नहीं आवे प्रीतम प्रात याके घर सो षंडिता कहे स
ब कुबिधि बात १५ अर्थः जेहने घरइ नायिका आविवउं कही जाये अने वलता आवइ नहीं अन्य स्थानइ विहार क
रीनइ जेहने प्रातःकाले घरि आवइ तेहनु नाम षंडिता कहीइ १५ अथ प्रच्छन्न खंडिता लक्षन सवैया॥ आषनि जो
सूजत नकान नितो सुनियन केसोराय जे मैं तु सलोक महि माए हो बसकी छिसारी सखि काक ज्यों चुनति फिरो जू
छे साबि सीष सब ईव दी बे गए हो हरि हरि करतक दोरि दोरि गहो मद जानो न कुछोरि ठोर जानि जीय भाये हो काको
घर घालिबेकों कहां बसे घनस्याम सू घूघयो घुसत प्रात मेरे घर आए हो १६ अर्थः एक दासमेंने विषइ श्री वाकुर

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊ दाजी स्मारक

जोइए कनायिकासाथेंवायदोकर्योजेआज॰रात्रिंआवीस्युं तेहनेंघरवायदेंनोआव्यानहीं अन्यनायकानेंघरिंगा-
यातिवारेतिहांविलासकरीनेंप्रात:कालनेंविषइंआव्या तिवारइंसषीनायकप्रतइंबोलीतेकहेछेंहेकृष्णजीतमे-
नलोवायदोपाल्यो अनेंहेकृष्णतमेजेकरोछोतेअस्लेंआंषिदेषतानथीपणिकांनेंतोसांभलीइंछइं हेकेसवरायत
म्हारीकीर्त्तिजेहवीलोकमांगवाइछइं तेह●वीकांनइंसांभलीइंछइं तमेतमारावसनीकथिछोनीवीसारीमुकीका
कनीमरेंजूवत्रिंवाएहवाजेसीघकहंतांअन्ननातिरणानीवारामांहिंलाभुणताहीनोछो अनेंवाऊकानोग्रावतघाधी
वतेसरषादीसोछो अनेंछेगलाइकरुंछउतिमरहोमनेंमगेंलागोछो कूंजाणुंछुंजेतमेइमजाणोंजेवामिरनेंनाय
कासरषीमगलीजहस्यें अनेंघनस्यामकेंहनोपरिघालोछो अथवाकेहनोघरघालवानइंआव्या रात्रिंकिहांवस्या
हता अनेंघघजेघहुमनेंजिमघमें तेहनीपवेसवारनइंमुहरमाहरइंघरआव्याछइं २६ अथप्रकाराषढितासवि-
या॥ आजकछुंअंषियांहरिओरसीमानोंमहावरमांहिंरंगीहैं मोहनिंमोहिसीलागतिमोहइंतेंपरमोहनमोहिल -य-
गीहैं मेरीसोंमोकूसौंमानकूंवेगिहियेंरसरोसकीरीतिजगीहैं मेरेवियोगकेंतेजनवींकिधेंकेसवकाकूंकोपिं
मयगीहैं २७ अर्थ: एकदासमेंनेंविषइंकृष्णजीअन्यनायिकासंघातइंविलासकरीनइंराधाजीनइंघरिंआव्याति
वारइंराधाजीसषीसंघातइंकहलताकहेंछइंश्रीहरिनइंहेहरिआजतमारीआंषिनविनोसरषीदीसइं तोकहइंछइं आ-
नेंकूंजाणुंछुंमहावरजयोथीतेहमांजाणीइंरंगीछइं हेमोहनीसरषीमोहछपजावइं एहवीमोहनीमुकनइंपिण-
लागइंछइं अनेंमाहरइंसमजोमोहआगलिवहिलामानोमहाराजएरानेंरसरीनेंषइंनइंआंषोरातीषईछइं तुमा +करी+
राबियोगनइंतेजेंतथीछइं हेकेसवरायकेंकोईअन्यनायकानीरंगाणीछइं २७ अथप्रोषितप्रेयसीदोहरा॥ या
कौप्रीतमदेसअवधि गयोकोनकूंकाज ताकौंप्रोषितप्रेयसी कहिबरननकविराज २८ जेहनोप्रीतमअवधिदेईनें ३०
कोइकामेंगामेंगयोछेंकूइंतेहनइंमोटाकवीनायकराजातेहनइंप्रोषितनईकाकहेछइं २८ अथप्रोषितप्रेयसी
प्रछन्नसवियां॥ केसवकेसैकूंप्रवपुन्यमित्योमनलावतोंलागनस्योरी जानेंकोमाईकहानयोंक्योंकूंउन्नोंधि

२
कौंआधीकद्योसकइस्योरी ताककूनूनअजोंहसिछोजेजकूमेरोमोहनपायपस्योरी कावकूंनेंहवतेरोकछोरइनेंबिरहान-
लकूनजस्योरी २९ अर्थ: प्रकासप्रोषितप्रेयसीसवियां॥ औधिदेंआएउहाउनसों यहलोजनकेंअबहींहमलेहैं ताकें
हेंतोअबलौंबहराइकैंराषीबस्याईमरूकरिमेहैं बेबेकहाइनकीढीगकेसवजोकूनहींकोउजायेंजकेंहेंजान +उ+
तहीं उनिआंषिनितेंअस्कआउमगेंवकूस्योकुनिरेहैं २९ बेकवित्तनोअर्थसामटोलष्योछे॥ एकदासमइनइं-
विषइंश्रीराधाजीमननेंविषइंविमासणकरइंछेहेकृष्णकूणउत्यावतवछेनेमुणपेंकरीनेंकोईकलागयवेंतमनिं
तेगमतोस्वामीपाम्याहतोतेपिणकिहांइजातारह्योअनेंहेसषीकोईजाणेंएहनइंस्यंषपंहस्यें अवधितोअध-
लोदिहाडोतोवहीगयोतिवारइंसषीकहेंछेतुंहवइंइमउचाटकरइंछेंपिणतिवारइंतोतुंमारीपवइंबोलतीयेन
कूंतीअमेतेदिहाडेतुंतिहांमलगेंबोलीनहींजिहांलगेंमाहरामोहनजीपगेंलागोअनेंसषीनाहरोहवइंहवछइंते
काढघकीपिणअतिकठिणछेएतलेंविरहरूपीयेंअगअगनेंपिणबोल्योनथी २९ हवेंबीजाकवित्तनोअर्थ:॥
एकदासमेंनेंविषइंकृष्णजीनायकानेंकहीगयातेनोतिहांवाटजोइंछइं अनेंतेहनेंतोकूंमानमाननिहोराकरी
नेंवाहीनेंकूंहमणांआवीबउंतमेअनेकसषीस्पसंकवेसीरह्याछोतेहनीआंषिमांहिंथीआंसूपनेंस्लेतेरहिवान-
थी ३० अथविप्रलब्धालछनदोहरा॥ दूतीसोंसंकेतकहि लेंनमर्दईआप लब्धाविप्रलब्धाजानिजें अनआएसताप
३१ अर्थ: दूतीसंघातइंसंकेतकरीनेंनायकानेंतेडवामोकलें नायकानावेंतिहांलगेंजीवनइंविषेंसंतापथईरहे
तेनायकानइंविप्रलब्धाकहीइं॥३१ अथप्रछन्नविप्रलब्धालछनसवियां॥ दूतीसेंकूलंस्कबासकूकूसमीनाका-
सीमेंलएलोनस्कलागीं केसवबागमहा-बनसोंजुरसीचढिजोकूसवेंअगदागों नेकूलम्योउरनाहइमोंनिशिंना
कूंघरीकंककूंअनुरागें गारीसेंगीतुछिरीबिस्मीसिगरेइसिंगारअंगारसेंलागें ३२ अर्थ: एकदासमेंनइंवे
षइंनायकमरदेसगयाछेंतेआव्यानथीतिलेंविरहेंकरीनेंजेतलीरूमीवस्तछेंतेहनेंकंमीलागेंछेतेकहेंछइं

॥वइमाना जोतिनेकथं। हीरसरषा ८६॥

नहिं

सुंदर फूल्या थया छे ते फूलना सरषा लागे छे अने मो जे सुगंध तेहनो जे मो परिमल लागे छे अने सुंदर जे घर ते तो
नामसी सरषु लागे छे अने सुंदर घर सुकीनइं वासीमां जाये तो उजमड वन सरिषा लागे छइ जिम चंद्रमानो उद्योत
छे ते अंग अंगनइं दाझइ छे अने तेहना उरने विषइं नाहरविलागे छइ तिम वलगो अने निसाने विषइं नाहनो वि-
रह एक घडीनो तिणे करीनइं एतला वाना थया वलतु कहे छे ते सांतलि कोइ गीत गाये छइ ते जाणीइं गालि दे छइ
वीणा बाइ ते विषसरषी लागे छइ सगला श्रृंगार जाणीइं अंगारा सरषा लागइ छइ २२ अथ प्रकास विप्रलंभ लक्षण

[॥चंद्रमा॥ हार] वर्नन सवैया॥ देषति चंद धिजात देषि देषि निज गात चंपकके पात कवुलिष्यो है बनायकैं सकल सुगंध डारि-
दूतिकाको मारि फूलनि फूलमाला तोरि डारि बीरा वगरायकैं लै लै दीह सांस तजि विविध विलासि आस केसौदास [॥दीर्घ॥]
कै उदास चली अकुलायकैं सेइ कै संकेत सूनो काकजूको मानि कनौं सोसों कर जोरि दूनो दूनों दुष पायकैं २३. [सूनौं जो +ति+]
अर्थः एकदा समेनइं विषइं स्वामिनीजी संकेतस्थानकें गया तिहां प्रभुजी तो मिल्या नही तिवारे घणु दुष पाम्या
तिवारें चंद्रमा दीठो जो लागो तिवारें चंपाना टहहु पान तु हतु ते माहिं काइ कलषु ते नायकनइं जणाववानइं-
काजें जे अमे संकेतस्थानकें आवी गया सुगंध ज आणु हतु त होली नांष्यो दूतीना माथामां दुबो मास्यो वली फूल-
नी माला हती ते त्रोडी नांषी पाननी बीडी हती त कुसी नांषी अने मोटा नीसासा मुकवा मांड्या विविध प्रकारना वि-
लासनी आस्था हती ते तो सजी केसवदास कहे छे उदास थइने अकुलाइनें चाली सूनो संकेतस्थानकनइं सेवीनें
गइ दूती कहे छे मुज संघातें बिमणु जोर कीधुं पोतें पिण दुष पामीनइं गया २३ अथ अभिसारिका वर्नन दोह-
रा॥ हित तैं कै मद मदन तैं पीय सों मिलै जो जाय सो कहिजैं अभिसारिका बरनी त्रिविधि बनाय २४ अर्थः प्रेमनें जो- ३२
रें अथवा गर्वनइं अहंकारनें जोरें अथवा कामनें जोरें आकली थईनें पीउ कनइं चाली जाइ तेहनें अभिसारिका
कहीइं ते अभिसारिका त्रिण प्रकारनी छे २५ अथ स्वया अभिसारिका दोहरा॥ अतिमलत्त मग मगतरें चलति-

---

॥जति महेलीमो तिजें बंधु वधू संग वारु मगमैं देइ बिस्याइउग ऊलजाकौ अभिसारु १ चकित चित्त साहस सहित सीलव [मनजुत]
वधूनिके संग स्वयाको अभिसार यह भूषण भूषित अंग २४ अर्थः अतिलाजें मगमगनी हलवें डगलां भरती स- [गात कु-]
षीर संघातइं श्रृंगार करीनइं जाये तेहनइं स्वकीया अभिसारिका कहीइं २४ अथ प्रछन्न प्रेमाभिसारिका सवै- [लजा सं-]
या॥ लीनें हम सोल अनबोलें आई जान्यों सोह मोहि घनस्याम घनमाला बोलन्याइ है देख्यों कै है दुष जहां देह [भ्रम अभि-]
कन देषी परें देषी कें सें वाट कें सोहासैं मिती दरवाइ हैं ऊंचे नीचे बीच कीच कंटकनि पारें पग साहस गयंद- [सरै उप-]
गति अति सुषदाइ हैं नारी नयकारी निसि निपट अकेली तुम नाही प्राननाथ साथ प्रेम जु सहाइ हैं २५ [पति सुअ-]
अर्थः एकदा समइनइं विषइं श्रीराधाजी बेठां हतां ते समें वर्षा अंधारी आव्यो तिवारें मन मांहि इछा थई जे प्र- [धरात २]
भुजी पासें जईइं तो वारु एहवुं विचारीनें प्रभुजी प्रतें चाली गयां तिवारें प्रभुजी बोल्या आज तो अमनइं वेचा-
[+त+] तालीध जें अमे आणते स्थां आव्यां तेह जाणीनइं ठकुराणी बोल्यां हे घनस्याम कृअण तेमी नथी आवी मोनें मेघनी
माला नें तेडवा आवी छइ तो उमे वाटे दुष दीठुं हस्ये जिहां हाथ दीसतो नथी तिहां तमें वाट किम दीठी हे केसव-
राय वाट तो हाम नीइं देषामी उंची नीची भूमि वीचइ करी तिलें तमारा पग पीनाणा हसें क० दूष नाहस्ये नाम्वामी सा-
हसरूपीयो जे गयंद तेहनी जे गति ते अत्यंत सुषकारी छइ नारी क० सबल नयकारी कहतां बीहामणी एहवी अं-
धारी रात्रि तुं निपट एकली किम आवी ना प्राणनाथ साथइं प्रेम सहाय छे २५ अथ प्रकासा प्रेमाभिसारिका सवैया
॥नैननीकी अनुराई बैननीकी चतुराई गातनकी गुराई नंदुरति दुति वालिकीं आछेनि चरित्रनि कैं चित्रनि बिवि-
त्रि चित्र चित्रली ज्यों सोहें साथ पुत्रिका गुवालिकी चंदके समान वासवीउ सों चढी फीरति करि कैं निहार मृग-
नैननि की पातिकीं कीजें पय पान अरु षेजै पांन प्रानन प्यारें आई हैं जु आजु अलबेलीं ग्वालिका लिकी २६ अर्थः
एकदा प्रस्तावइ प्रेमाभिसारिका प्रभुजी प्रतइं बोली हे लाल तमे माहरी गायो हथवार कीधी लाज की नथा कजो
री एहवी गायो तमे हथवार करीनइं किहां थपी रस्या अने हे केसवराय किमे हाथ पालवा नथी मदनी वहिला-

[॥चंद्रमानी परें जिम चंद्रमाने मृगवाहन छे तिम तुमारा मृगनैननी पातिकी करीनें चाउ सों क० स्वेछाइ
॥चढी फिरइ छे॥]

आवीनेंजूउ उठो झंतमनें तेमवाआवी छे अनेंहे गोविंद गोकुलगाममां गायचरावीइं तिवारें सोलेकं वरसे गरूर
पणुंकीजें नहीं कं गुमानन कीजें २६ अथप्रछन्न गर्वास्तिमारिका छेदकमलसवैया॥ लाडिली लीली कलोरी लूरी
कहलाल कहें कहां अगलगायकें आजूतोकेसवकेंमेंजुलेरजुलागनदेतनदेमजुआईकें वेगिचलीउवीआ
ईलिबावनदेरिंअकेलीयेहों अकुलाथिकें लूलेकुगोकुलगावमें गोविंदकीजें गरूरनगायिंवराईकें २७ अर्थः
लाडली लीली कलोरी लूरी एहवेंनामेंकहीमेंनायकाबोली एमहारीगायोनइ हेलाल अगलगायकें कं तुमेपोतें
हथवारीकरीनइ किहांबपीरस्या तुम्हारेजहांथें दोहवाछे छइ अनेंआजतोकिमेलिरजुकं वाछरमानेपिणा
लागवानथीदेती आवीनइ जोउ वेगेंउठीचालोकुं तेमवाआवीछुंदोनीनें एकलीआकुलीथइनइ आवीहे गोविंदगो
कुलगांममांगायचरावीइं त्यारें लूलेकहतांवरांसइं गुमाननकीजइ २७ अथप्रकासगर्वास्तिमारिकासवैया॥ चंद
नचठाथिंचांदअंबरकेंउरहारस्रूमनसिंगारूसोहें आनंदकैकंदज्यों वारीकोरिंरूतिनाथबीनामेंबजावइ गाथ
मृगजमरालसाथबोनीजगवंदज्यों चोकिंरूचकई मांसोंतिनीकोहूतिचलीसोतिनेंईदीनअरविंदकुतिमंदज्यों"
सरस्वती जनहोइ तिमिरबियोगंलूलिलोचनचकोरस्रूलेंआईकुजचंदवंदावेतिचंदज्यों" २८ अर्थः एकदासमेंनइ विषइ चंद्रात चली
लीप्रत्ज्जीमृतइ शृंगारिकरीनइ चालीआवइ छइ तेसषीवषाणेछइ हे माहाराजवाक्रकं मनोहरचटामा
छे अनेंउरनें विषइ अंबरनी मालापहिरी छे अनें स्रूमनजेपुष्पतेहनो शृंगारिकस्यो छे तिलोंकरीनइ आनंद
जेकंदजेमूलतेसोलइ छइ अनेंहे नाथ उपरिकोकिर रतिउदानीनांथीइं अनेंयंत्रमांहिं गाथा वजावतीआवइ
छे तेजाणीइं बोलइ छइ तेजाणीइं सरस्वतीजनहोइं मृगनाबालकहंसनाबालकसाथेलीधछे चोकिचोकिनी
चकवाचकवीनइ मवइं सोकिनीजेकांतितेचकवीनेंरूमीलागइ तिमटआजरूमीदीसइ छइ अरविंदकमक ३२
मलस्रूर्यविकासीजिमचंद्रमानेंउदेंभांषाथाइं तिमसोकिनामुषभांषाथयाछे अनेंवियोगरूपीयोअंधकार जे

उज्जरमाथेंगशारस्तन तेदेषीनेंमार्गेथ्रुतनीमि लीनेंउछेछइ उरस्नतक्र सर्प

नेटलीगयो अनेंनेत्ररूपीयाजेचकोरतेस्रूल्या वलीहेनाथचंद्रावलीकुजनेंविषइंचंद्रमानीपरेंचालीआवी २८ अ
थप्रछन्नकामाभिसारिकासवैया॥ उरजतंउरगचंपतफनचरनतिंदिमतविविधतित्रिंचरदित्रिचीरकें" गना आरदिरा ना
भिसराना इ तिंनलगनमुसलधरिस्रूनतिंनभिंइत्रीगनघोषनिरघोषजलधरकें" जानतिनरूपनगिरनपटफारननकंट
कअटकिंउरंतरजंतजाविकें" छेतनिकीपूछेंनारिकोंनयेतेंसीष्योयहयोगकोसोसारअभिसारहैअभिसारकें"
२९ अर्थः एकदासमइंनें विषेकामाभिसारिकाभिसानेंविषइंनायकनइंमिलवानइं हेतइंचालीजाइं छइ एहवा
समेनेंविषेंपगेसर्पवलगो छइ अनेंसर्पनाफणकुमरिमगदेईचालेछेवांपतीचालेछे आरदिराने विषेजोतीका
माभिसारिकानिसानेविषेंचालीजाइंछे अनेकप्रकारनाराक्षनइ जोतीजाइं छइ वलीमुशलधाराथेमेघवरसेछे
तेहनेंपिणगणतीनथी जोहीकं तिमरांनामधे तेसांभलतीनथी वलीवरसातनानिर्घोषसांभलतीनथी वलीरू
पणनीकलीरपजेछे वलीमार्गनइं विषइंकांटाअटकेंछे तेतेंवस्त्रफाटइं छइ तेजाणतीनथी स्तनतथाशरीरकांट
इंउजरमाइं छइ तेदेषीनेंथेंथी मार्गनइं विषइ थ्रुतनीस्त्रीयोमलेतेमूछइं छइ हे केअभिसारिकायोगनोसारहे
यएहबोजेअभिसारतेतोकोणकनइं सीषी २९ अथप्रकासकामाभिसारिकासवैया॥ मषीवचननायकाप्रत
इं॥ जोपचमेवमेंछेअधाईतिकेसवकोरिमनांअवगाहीं रवेलनबालकेजालगलीनिमें बालविलोकिविलो
चकेछे किविकाहीं आवतिजातिकेगाइविकुदिसिंफपटमेंपहचानतिंबाहीं चंदमेंआननिकाहिकहांचलीसूजत चंद्रमानीपरि आननमुषकांहीनेंचाली
हैंकछुंतोहिकेंनाहीं" ३० अर्थः एकदासमेनेंविषइंकामाभिसारिकानायकप्रतइंमिलवानइं हेतइं चालीजाइं छइ
तिवारइं सषीइं दीठी तिवारेंसषीकहेछे हेवेहनमोटारगोपमार्गमांछेवाहतातेंएहबीकोमिसताउलधीनइंकेत
लाइकबालकसेरीइंसेरीइंरमेछे तेउजतेंजोईनइबकेछे आरदिसथकीलेगाइआवइ छइ तेफंघरामांउंचाइ
उउलयाइंछे हे सषीचंद्रमासरिषुंमुषकांहीनेंकिहांचालीजाइंछे कांइसूजेछे केंनोनेंकांइ सूजतुंनथी ३० अथ
दोहरा स्वकीयात्रिणप्रकारनीकही॥ हवेपरकीयाभेदातनीकहेछइ॥

केसवदासअरुतीनबिध बरनीस्वकीयानारि परकीयाद्वैभांतिकहि आठआठअनुहारि ३१ उत्तमामध्यमअ
धमा तीनतीनविधिजानि प्रगटतीनसोसाविनिय केसवदासबषानि ३२ केसवदासकहेछे स्वकीयात्रि
णप्रकारनीवर्णवीछे हवेवेभांतिनीपरकीयाछे बलीद्रकीकीनाआठप्रकारजाणवा एकउत्तमबी
जीमध्यमत्रीजीअधमसघलीयोनात्रिणप्रकारछे त्रिणरजाणवा केसवदासकहेछे प्रगटत्रिणसेनेसावि
रुद्रलेदनायकानाजाणवारउत्तमा॥३३॥ अथदोहरो॥ मानकरेंअपमानतें तजैमानतेंमान पीउदेषिंसुषपा
वही ताहिउत्तमजानि ३३ जिवारेअपमानथाइ तिवारेमानथाइ जिवारेमनावेइ तिवारेमानतजे पीउने
देषइएतलेसुषपामइ तेहनेउत्तमाकहीइ ३३ अथउत्तमामानवर्ननसवैया॥ होथिंकहाअबकेसमुझेंसमुझें
नैन वेजबहींसमझाये एकहिवंकविलोकनिमांहिअनेकअमोलबिवेकबहाये जानमनौंनजनावकअंजु
जनमावधिलोंउहिंजानिहिपाये बातेंबनायिबनायिकहाकहौंतेअमनाईमनाईयोंआये ३४ एकदाप्रस्तावन
इविषइउत्तमानायकामानकरीवेठांहती तिवारेप्रकजीमनाववाआव्या तिवारेउठीनेआदरतांवदीसेग
ऊरमनावीनेवातमांनी तिवारेप्रकजीनेकस्कजेएआजीवातउस्कंकानकेनमेइहांआव्या एनलेसगलांवातांथया
तमेएकवारपासइकमातृहइजोकं एटलेसगलाइविकलथया अनेआकुजाणपलोजणावासा एतोजमथकोमा
मीनेंतमेमोनेजालोगेकुंउकलनेजाणुउतं आजीवातोबनाआवुस्कंकामबइ तरसेआवाएटलेअलेमनाणा ३४
अथमध्यमामानवरनन॥ मानकरेंलघदोषतें छोटेबहुतप्रणाम केसवदासबषानियें ताहिमध्यमावाम ३५ थोडोए
॥समीबचन नायकाप्रते॥ कदोषहोइ तोहीआकूमानकरीबेसे अनेअनेकउपायकरेतोमानमुकेमाट केसवदासकहेछे तेहनाइकानेमध्य
माकहीइ॥ अथमध्यमामानवर्ननसवैया॥ लेजूंसूधेनहींचितयैंहहिकांकीयोलविलानछिकेंतौं हाहाकरिहारि ३३
रहेंकुतिकेसवपायपरेत्योंपरेइरहेतौहौतोपहेंतबकीहाबिचारतिहोतोगुमानक्योंयाहितौएनों जाबीलटेअरु
पातरीदेहजोनेकहुमीबिधिआमनदेनौ ३६ एकदासमेनइविषइमध्यमनायकारीसावीबेठांहता नायकमना

ववाआव्या पणकांइमानेनहीं नायकेंघणीलालचिकीधी पणिवरांसेसाहमुंजोकंनहीं बोलीनहीं हाहाकरीहारीरह्या
केसवरायपगेलागतोतिमिजयम्यारहिवादीभ पिलबांहेंआलीनेवेठाकीअनहींबोलीनहीं सषीकहेछेइकुंतोके
ईवारनीविचारुंछउं एवमोगोमांनएहनेस्यानोछे लगारेकलांबोबोटलोछे अनेपातलीदेहीछे लगारेकमोटीर
ओंथ्योछइ तेमाटेंएवमोगुमानकरेछइ ३६ अथअधमामानदोहरा॥ रूठेवारहीवारज्यों ३७ छेहीकेकाज
ताहीसोंअधमाकहें बरनतहेंकबिराय ३७ अर्थः बारेरहीसावे अनेकोईमनावेनहीं तोहिजमनावइ तेहनइ
कविअधमाकहीवर्णवइछे सगलाएकवी ३७ अथअधमामानवर्ननसवैया॥ काहेंकपटउकोंआसोंकीजिंधीबातुं वे
बोलऊंबोलकमाई फारोसीघूंघटओटअटेंमोहडीविफुरीअंधकोतुधमाई केसवऐसीसखीनिकोंमारो सि ॥नाबुंजोइने॥
॥हांसी॥ षेकेंकरेहीनकीजुहसाई बारहीबारकोंरूसनौंबारोबहाउसोबुधिवियोगबसाई ३८ एकदासमेनेविषइअ
धमानायकायेमानकीध तिवारेनायकतोमनावेनहीं तिहेंम्यातेंउठीआवी वातोकरवामांनीतेकपटकामी
तांमीइजेकाआसाषेकीजाइ अनेतेजीनवाढिइजेजीनइप्रकजीनइकरुबुबोलाइ तेफघटोम्यामीनांषीइजेह
ष्टिप्रकजीनेजोतांआनोपमें अनेतेहष्टिनेकोमांनांषीइ जेहनइजेहउपूरिचटषईनइवोनइ अनेकेसवरा
इएहवीसषीनेतोसूधीसीषामणदीजइ वांमिसारीयैजेनूंमीमतिमीषवीनेहानतीहाणिकरें अनेषनीरतुरीसा
वउंतेबालोघमं अनइतेबुद्धिनेइमलिनदीमांहिंवहतीमुंकेजेवियोगनइवेवातातेइनेआवइ ३८ अथदोहरा
द्वहीविधिनायकनायिका बरनकुंसहीतविवेक जातिकालवयभावतें केसोजानिअनेक ३९ एलेंप्रकारइके
सवदासकहेछेजेनायिकनायिकाकइतेइलेपरिवर्णवउंछउं विवेकसहितजातिवनसमयवेलाअवसरजो
ईनइवयस्वमानत्यिवनहावभावसहितएगुणजोइवर्णवीइ ३९ अथदोहरा ।जतितरुनीसंबंधकीजानिमि
त्रद्विजराज रामीलेइनिहूमत्तूमातें ताकात्रीयतेंजानि ४० मरिस्त्रीएटालीइतेकहेछे जेकोईरसीयाकुइनेए
॥कदुकमायतोबोलेंकाकसोनेंजीतमानएवाटुजेंप्रकनेजोतांआलोपम हुएहवेफघटकानीअनेप्रकउमरिवट
॥षटनेइहइजेहुनेदेतेकोडु॥

तनीस्त्री षकावेगलारहियो जेस्त्रीसंसगाईसंबंधहोइंते वलीमित्रनीस्त्री षकी अनेंजेब्राह्मणी अनेंराजवीनीस्त्री
अषवासगीअमुरवदुषल्पषकी जेरापेंकहतांजेहनाचाकरहोइं तेहनीस्त्री षकीवेगलारहीइं ४० अषदोहरा॥
अधिकवरनअरूअगम्यहि अतजिजनकीनारि तजविधवाअरूपूजिता रसिजरूरसीकविचारि ४१ अधिकव
णजेहनइंमीलइंगुबभांजेहनइंमीलइंगुबमांहोइं अषवाषाजरूइं तेहषकीवेगलारहीइं जेअंगइंहीणरूइंकदरु
बोटीनांतिरूइं कुष्टाकाणीनेत्रहीण गुंगीतषाबदिरहोइं एहवीषकीवेगलारहीइं तमानकटीरूइं ५ अनइंजे
षणुविलवारली वनटइंचली रूइं तेषकीवेगलारहीइं अनतजातिहुंपरकारनीकहीवइं तेषकीवेगलारही
इं विधवाजेरॉंमिवक्षतर्नारइं मेहलीतेषकीवेगलारहीइं वलीजेमुज्यस्थानकेरूइं तेषकीवेगलारहीइं ४१
अषदोहरा॥ यह संयोगसिंगारकी केसवबरनीरीति विप्रलंभसृंगारकी रीतिकहौंकरिप्रीति ४२ केसवा
दासकहेंछेसंयोगसृंगारनीरीतितोकही हवेंजोगसृंगारनीरीतिप्रीतिकरीनइंकहइंछेतेसांभलि ४२ इतिश्री
मन्महाराजकुमारइंद्रजितविरचितायांरसिकप्रियायांसृंगारवर्णनोनामससमः प्रभावसंपूर्णम्॥७॥॥
अषविप्रलंभसृंगारलक्षनदोहरा॥ बिछुरतप्रीतमप्रीतिमाँ होतजरूरसतिहिठौरि विप्रलंभसिंगारकहि
«मुगर» बरनतकविसिरमोर १ अर्थः स्त्रीभर्त्तारनइंविछोहथायइं तेहथायतेहनीकवियोनामुगटिमणिवइं तेहनें
वियोगसृंगारकहेंछे १ दोहरा॥ विप्रलंभसृंगारकोंचारप्रकारप्रकास प्रथमपूर्वानुरागपुनि करुनारमा
नरूप्रवास ४ २ अर्थः हवेंविप्रलंभनातेसृंगारच्यारप्रकारनाछइं तेहमाएकपूर्वानुराग बीजोकरुना त्रीजोमान
चोथोप्रवास २ अषपूर्वानुरागदोहरा॥ देषतहींदुतिदंपतिहीं उपजेपरतअनुराग बिनुदेषेदुषदेषीये सोपूर्वअ
नुराग ३ अर्थः दंपतीजेस्त्रीतेहनुंजेप्रथमदृष्टिमलनुं तिवारइंबिरूनामननांप्रीतिऊपजे कोइकेहनेंदेषेनही ३४
तिवारेंघणुंदुषपामइंतेहकंनामपूर्वानुरागकहीइं ३ अषश्रीयाप्रछन्नपूर्वानुरागसवियाः॥ फूलनदिषातेंसू «वामर»
«जफूलतुहिहरिबिनुदूरिकरिमालबालव्यालसीलगतिहिं चेवरूंचलातेजिनवीजनाहलावेंमति
«पूर्वानुरागविप्रलंभसृंगारि»

उगाय
केसवरूगंधबातबाईसीलगतिहें चंदनचढावेंतिनताषसीचढितनतुंकुंकुमसलातअंगआगिसीलगतिहें बारर
बरजतिबावरीहेंबारोंआनिविरीनषवातवारबिरूसीलगतिहें ४ अर्थः एकदासमइंनइंविषइंराधाजाप्ररू
जानेंविरहेंकरीनइंअसंतदुषपामेंछे तिवारइंसषीकहेंछेउपचारकरइंछइं तेएकोगमतोनथी तेसषीतेनें
कहेंछेसषीमुझनेंफूलदेषाडोमांमाहरइंसूलवाधइंछें हरिविनामालामुझनइंसर्पसरषीलागेंछइं अनइंचम
रहलावोमांवीजणोंवायनांषोमांसषीरूगंधवायरूआवइंछइं तेमुझनइंवाईसरषोलागेंछे तेमुझनेंवायसरषी
षोदीसेंछेचंदनचढावोछोतेजाणीइंनावचढतोआवइंछें कुंकुमकेसरइंतेजाणीइंआगिसरषीलागइंछइं वारिर
वारंछतेंगहलीयोछोआणीरीतंबोलोछो अनेंबीनीमनषवरावोमुझनइंविषसरषीलागेंछइं ४ अषप्रकाशपू «सषीप्रते
र्वानुरागसवियाः॥ एकसमेंवृषभानुसुतानांसजनीगननें जननीसंगबेसी जोतेंउरूचितयोजिहिरीतिरूप्रीति नायककहे
होएकहिजातनतेसीजादिनतेंजगकीरूवतीनिकीलागतिकेसवबातअनेंसीचाहेंकिसोविउचकुचरूनकी छे»
रूहूतिदेषीयेवामुरबकेसी ५ अर्थः एकदासमइंनइंविषइंवृषभानुरूतानासषीसजनमांहिंबेगहतां तिवारइंना
यकआगलिथईनइंनीकल्या तिवारइंनायकाइंप्रीतिदृष्टिजोईंते प्रीतिनीरीतिकांइंकहीजाइंनहीं तेदिहाडाथकी
जगतनीयुवतीहसिंजेस्त्रीयोतेहनिजांतिनेकेसवरायनइंमीठीलागेछे चित्तनेदिहाडाषकीतोवाकनेचरूछइं अनें «नायकसषी
कांइंगमतुंनथी नायककहेंछेमुषमेदीठतेहवतंकेहनुंदीसतोनथी ५ अषराधाकोप्रकाशपूर्वानुरागलक्ष प्रतेकहे छे»
«तेसी» सवियाः॥ केसवकेसेंकरूहठिनिंदुविषमेंरतिईवुंकलाई तादिनतेंमनमेरेकोंआनिनईरूनईकहींकीनेंजाई
«होतप्रवढा» होइंगीहासीजोआवेंकरूंकहिजातिहंतुहितुबुझनआई केमेमितुरीमितेंबिनुक्योंरूंनेतिहितुहियेनरूमा
ईं ६ हवेंनायकासषीवातकरइंछेंहेसषीमंकेसवरायकहीइंदीठानरूताजो चितामाहरेंदृष्टिपग्यातेदिहा
नाथकीमुझनेंमनमांहिएहवीवेदनाउपनीछेतेकिमेंजायेंनहीं अनेमिव्याविनाकिमरूनेत्रमांहिंतोछेवली
७ «हीयामाहरछइं ६ अषश्रीयप्रकाशपूर्वानुरागसवियाः॥ जातिरूतीवृषभानुतती
«दीठी» «सषीवचन»

DA

लयो व

जबतें अंषीयां अंषीयांनि सों जोरी तौं हचवाय कबुं मरवाय बुलायि कस्यों हसिकें हंसिं मोरी के सबं काकुल्यों ता दिनतें ॥कोईसाहमुं॥
स्यिकें न बिलोकति के तो निहोरी लीलति है सब ही के सिंगार अंगारि निज्यों बिधुवंदचकोरी" ७ अर्थः एकदा समें ने
विषइं नायक कुलाहतां तिहां नायक आव्या तिवारइं नायकाइं एकांत जाणी नइं करा ढुंकरीनइं नायक साहमुंजो
युं हसीनें मरकलो करीनइं स्नेह चढावीनइं सम मस्याइं करी वालाव्या मधुमानदी तेम षी सषी प्रतइं कहें छ
छइं हे सषी ते दिहाडा थकी के सब रायप्रीतइं करीनइं कोई साहमुं जोतां न थी मेंघणाइं निहोरा कीधा सहुनाम्हंगा
रएह बालागे छे जाणीइं अंगारनी परें जिम चकोर नें चंद्रमा विना अंगार लागइं ७ अथ दोहरा॥ अवलोकन आ
लापतें मिलवे कुल अकुलाइ होति दशा दश बिधु मिलें के सब क्यों कहि जाय ८ दशा लछन अभिलाष १ अरु चिंता २
गुनकथन ३ स्मृति ४ उद्वेग ५ प्रलाप ६ उन्माद ७ व्याधि ८ जडता ९ ए तयें होत मरन १० कुनि आय ८ जो बातनइं अर्थइं बो
लाविवानें अर्थइं मिलवानइं अर्थइं आकली थाइं ते प्रीतम मिलें नहीं तिवारें दशा दशा जीव नइं उपजइं ते कहें छइं
एकतो अभिलाष बीजी चिंता त्रीजो दशा तेहना गुण कहें छइं चोथो सांभरइं तिवारें पांचमो उद्वेग तेहकी प्रलाप उप
जें छठो सातमो उन्माद तेहकी व्याधि उपजइं ते आठमी दशा नवमी जडता नवेदिशा छे हलीमरणनी दशा दशमी छो
लीकें सबदास कहें एहतुं नाम दशा तेहको अभिलाष उपजे ९ अथ अभिलाष लछन दोहरा॥ नैन बैन मनु मिलि
रहें चाहें मिल्यो सरीर कहइं केसो अभिलाष यह बरनत हें मतिधीर १० नैनकं नेत्रे बैनकं वचने मनुकं मने
एतलें बानें मिल्या पिण अंगोअंगि मिल्यानी वांछना छइं तेहतुं नाम अभिलाष १० अथ मुग्धा प्रछन्ना अभिलाष लछन ॥चिंतार बाधती सरषी दीसे छे चाहक बालना॥
सविया॥ स्वधि बुद्धि घरी डुति देह मिटी दिनहीदिन बाहियें बाढितिसी कें बुके सब आमनें पेटकी पीर दुरावति पें
मुरवकाढितिसी बिसरयो सब ... सषी नितिनीदमरी चिंत चाहत आढितिसी रीगयौं कबु गांठिनें बूटिं बबीजी स्क ॥ताहरुं मुष पीमानिं काढी॥ २५
काहें नेमीलेति नाढितिसी" ११ अर्थः एकदा समें नें विषइं सषी नायका प्रतइं कहें छइं. हे राधा तो हरी स्क स्क छि
॥बुद्धि घरी दीसइं छइं अनें देहनी क्रांति जे कांति तेम लि घरी दीसइं छइं अनें दिहाडइं २ चिंता बाधती दीसइं छे॥
॥चिंतें अनगीत चिंता॥

॥केसव नैं नमों नें निनिलागों हीतल हहे मुखदइ दलाढावै क्यों बहर काम कला अबला बिसु नौं मनु मूढ उपावन पावै काजैं कपा बुधि दीजें बुधी मनु राधिका के उर मैं यह आवे
लागति ज्यौंक बकुरसुहबार क ज्यौं मुह कौं मुकला ते॥ काहिर
अनें के सब राय कहें छे एयोतानापेटनी पीसिमोतानापेटमां वधामीयलि माहि काढती न थी तेसुकं० केहनें कहती न
थी वली अनेक सषीयो विसारी नूष विसारी मेहलें छे तिसाइं निद्रा वीसारी मेली अनइं चिंत नइं विषइं कोइक अभि
लाषनी चिंता छइं ते आढि ताकं० दिहाडानो आधार करइं छइं तेहनी जिम तुं जीवाधइं दिनप्रतइं तिम साहराह दया
मांचिंता बाधती छइं तेसुहे छबीलाकां इताहरी गांठि थी छूटी पडके छे जेहमअधवजी सरषी वालइं छइं तेस्फछइं १ ॥हेसवानी इवा॥
१ अथ मुग्धा प्रकासा निलाष लछन सविया॥ जो कहूं देषे लगी दिषसाधं दिमावत हीं दिन हों दुषमें हों याही में के सब देषी
ये बोलतन देषि हों देषि सषी अब केहो" योंतु नकों दुरिं देषि हो देकुं यों आपनों देहनदेष नादहो" देषिवेकों बीहरावत
मोही सो हों बकहा कबा देषे हों लेहो" १२ अर्थः हवइं सषी नायका प्रतिं कहें छइं जो तुमनें देषा नी इं तो दुषलागस्यें दे ॥नायक वचनं॥
षाम स्फजीवारइं तिवारइं दिन प्रतइं दीठा पषइं दुषपामस्यो तेमाटइं केसव कहा छइं बोलिसमापिणजो देह छमा
मीनें जोयो पोतानुं घीज़ील जो वादेई समांएह बउे सषीइं कस्के तिवारें नायक बोल्या मुझने जो वादे स्यो मां कहो छो जो ते
स्फ कुं काइ जो वामांहिं षीहरी त्यं छ३ १२ कुस्म प्रतइं सषी वचन अथ प्रिया प्रछन्ना निलाष सविया॥ माइ मरो अंब ॥मेहनइ॥
॥आपसहूं सी॥ लिजाउं मनोहर आप नमीन करों अबनाकूं देषें अंघातनहीं दिन कैं फिरिं बारि कि थैं अनदेषें हा जाकूं" मोसो कहा ॥पातानमी॥
॥तेहनइं॥ स्फकहीं अबके सबकेसें कुं काकम त्याकुं ज्यौं काकूं" नाढकूं गी मुं कं कुकइ नीस चिंता तो हैनैं क सिराधि थैं रबाकूं" १ ॥विस्वासकराइं॥
३ एकदा समेंनइं विषइं सषीप्रतइं नायका कहें छइं तुं सूलीसषी छइं हे सषी मुझनइं एसंघातइं देषानो जोयानो ॥कोईनो॥
स्यालवें तेमाटें तेसंघातइं हस्यो हवे ते दोसें तिवारें फिरि नइं जाउं पीठा विना के हनइं जईनइं कहुं तेमाटेउ ताव ॥+कुंकुं+ते॥
लाया यो मां मुझ आगलि वात कही तेज कहीर षेकेह नो मृती आरो आण तो हूं तुं गोकुलनी स्त्रीयो जे छइं माणसने
मावइं अवजु करी वेसारि तेमाटइं बीजा के आगलि न मारो अभिलाष जणावस्यो तो तमे मनमांदुषपामस्यो कुल
ईनइं प्रमन्नपलोजईनइं अकहीस तमे स्यामाटइं मनमां दुषपामो तमारी जे एह बीक चिंतनइं एह बोदशा ते जईनइं क
हीसतिवारइं तमपण दुषपामस्यइं तेहने मणि हारी रमांहिं नमो धमस्यें १३ अथ मुग्धा प्रकासा निलाष सविया॥॥
हें हैं कोहेरी कोजैसें जानत भांही बिकालनहीं का के संदेसेक ॥ताउसो॥ ॥एतलीकचिंतसलें॥ हें हैं २ उलीए

॥ ६४ ॥

है कौ कुंमाई हिं नूं इकु कौं यह नायक है किहिं बांधि वहे है" ग्वायही के सब गोकुल की कुलरां कुलनारि तिनातें लहै है"
देषि दिदेषि लगाथि टगी इत में नैं मौं घाति जु नायक है है" कौ है री कौं जै में जानत नाहीं बकात्हिं ही का के संदेसे कहे।
है" १४ अर्थः एकदा समैं नइ बिषइ नायका नी समी प्रकृजी नइ जोइ नइ जाथै तिवारें प्रकृजी नी समी इंदोठी तिवा।
रें समी बोली कोएह वत्रहि तकारी बइ जेएह वत्र कहीइ थे ते हवत्र एह नइ जइ नइ कहै है अनेना थे के सब रायक
हे बइ जे गोकुल नी स्त्री थी कुलनी इतार इएहबी बइ कुलटा नाम ग्वायि कहि रवराइ बइ जो रइ जो इफिंलगामी रही
बे एकटा दो जो ईरही बइ सो नाम सरीष इगात्र इजगाइ नइ बिपी त्री बइ कोणबइ एह नइ हूं जाणतानसी का फ्लिके ह
नामंदे हसा कहे बइ १४ अथ चिंताल बन दोहरा॥ कैसे कें मिली ये मिलें हरि कें से बसि होय यह चिंता चित चेत कैर
हे निरंतर सोय १५ अर्थः दंपती जे स्त्री नर्त्तार ते परस्पर इंमन मांइ सजाणइ जे आप्त के हे दिहा सइ मिलस्स एह बो
दिवस मन मां बिचारइ ते चिंता ते के सव दास कहे बइ कवि एह ने चिंता कहवी १५ अथ राधा क्रकी प्रच्छन्न चिंता दोह
॥ आत्मनः ॥ रा॥ आपन के तनु औंपनो होत न नैंद में याहि औंपुन ही तो आपुनो क्यौं मन कहि हो ताहि १६ अर्थः बजी राधाजी कहे बे
॥ शरीर ॥ मन मां जे हनइ जा या पवी आपणु आपण प्रभु विसारी जायइ बे कठ स्फ हि बुद्धि जायि जो आपणु मन आपण इहा थइ
रहतुं न थी तो परतुं मन आपणि वसि कि मथाई, १६ अथ श्री स्वामिनी इकौं प्रकास चिंता सवैया॥ प्रेम लयन्तु परूम
॥ हस्तीप्रेरय नि ॥ सचिवं संकोच सोच बिरह बिनोद मीलेपे लियत पचिकें" तरल तुरंग अवलोकनि अनंत गति रथ मनोरथ रहे थ्या, ॥ चंचल ॥
दागु लंगदि कें" कुरू और मरी जोर घोर घनी के सोदास हो इजीतकौं न का कों हारें जीय ल चिकें" देषत तु स्तेगुपाल
ते ही काल ते हि बाल ते रसतर ज की सीं बाजी रा मी रचि कें" १७ राधाजी नी समी नायक प्रत इंकहे छे हे महाराज तमने।
दीवा तदीवसनी राधाजी ये हाथा ने विषइ प्रीतु जनी बाजी मांमी मुकी बइ एकप्रेम बी जोलयते बे राजा सोच संकोच एए २६
बे वजी रएक बिरह एक बिनोद ए बे नो फील हस्ती ते लेप लु मां क्रूपर्ई नइ बेलइ बइ तरल कठ चंचल ते ह नाये न र
गएह वत्रा जन्म वलोक वत्र तेतो जाणी इ प्रमान कृवे बली मनोरथ रूपी या रथ कठ ते हाथी नइ दामि वली अनेक

+त्रिय+ +कुषैं+ +त्री+

गुजे गुणते रूपी आप्यादा ते बिव मां मांस्त छे व्रिपासें जो मी मांमी बें अनेक सोर मांहिं था इंछे है के सब रायकुं णजाणे जीति
के हनी बासे वली को ण हीयइ जव की नइ हार स्ये १७ अथ कृष्ण सक की प्रच्छन्न चिंता सवैया॥ के सो दास सकल स्फ बा।
संकोनि वास तें तु कहि कबलें गुटी बिलास वास बोलाहे" केसो है स्फदित बहल लागी अनुरागी जिहि मेरी दूग वा कैस
गला गीर कोलिहि" असाक्षे है इसमु ति अपने कटाक्ष मृगमद घन सार समसे रे ठ रतु दिहै" दीपके समीपनासि दीप +बोली+
.. कथा+ ति बिलोकी वह चीत्र की सीं पूतरी स्फ क्यौं कुह सी बोलि है" १८ एकदा समैं नइ बिषइ नायक मन मां चिंता करइ बइ।
जे नायका तु तन ये सरीर तस्फ राधनो निवास बइ वलीएहनी त्रकुटी लक्ष्कर ते हनाजे बिलास त्रास कठ बी कतेमुंकी
नइ मुजसा सां कहिइ जेसी नाइ अने कहनाके हबोह स्ये मोटा सा पत्रीधणी आणी एह वी जे राधाजी ते अनुरागी कठ
प्रीतिकरी नें माहरी जे आंषो ते संघात इजो मीनइ चालस्यें ताइ अनें दीव निंषा सइ दीपति जे कांति ते जोई नइ चित्राम ॥ नायकवच
णनी पूतली नी परिंमुं न धरी नइ रही बइ ते कहीयें इसी बोलसे १८ अथ श्री प्रकृजी की प्रकास चिंता सवैया॥ राध नसमीप्रते ॥
का की जननी कौं जनी को ठ क्यौं स्फ स्वयंवर बात जनावे देव कुमार निमें गोपकुमार मातु दें देख मलातु बोलावें केस।
व के संकु बाल नूतीवरमाल स्फ मेरें हि येपहिरावें तो हिं समी समदें संगता के स्फ क्यों यह बात सबैं बनि आवें १९
अर्थः एकदा समैं ते बिषइ नायक सभी आगलि कहे बइ हे समी एहवी कोइ दहाडानी कोइ टमाही बइ जे राधाजी नंकिमा
नइ जइ नइ कहे जे राधा नो स्वयंवर राइ वरावे देवकुमार सषि धीजे गोप कुमार ते हनइ मान देई रनइ बुलावे के सव
रायक ह इबइ अनइ एवाल जे राधका जीत लताथई नइ माहरई गलामां वरमाला घाले ताइ अनइ तु जे सरषी सषीमा
सइ ते हनें राषइ तेसा था मणी छें बे एसघली बात किम बनि आवइ १९ अथ श्री याप्रच्छन्न गुन कथन दोहरा॥ जगुनु
॥ तेहने ॥ ण गणगति देह द्युति बरनन वचन बिसेष तो कहूं जानकुं गुनकथन मन मथ मथन सुभलेष २० अर्थः द्युतिजे
कांति अनें वली बीजा जे व तुराई ना गुणगली ने वषाण करइ कठ स्फ स्त्री पुरुष ना वषाण करइ ते हतु नाम गु।
॥ न कथन कहीइ २० अथ श्री या प्रच्छन्न गुण कथन सवैया॥ नायका नायक ना गुण वर्ण वइ छे

फूल   राजा चंद्र

कीरति सहित नित केसव कुंवर कान्ह केवल अकीरति नृपति सोम मानीऐं बुबत वंपक मात कुमिलान जात तनु अ
ति हरषित गात हरिष की जानीऐं कोमल कमल कुयुत प्यारे के परम पानि कंटक कलित नाल नलिन वषानिऐं लोचा
-द- न विलास वास मदनगोपाल जू के मदन संपूर्न दरसन रस हानिऐं २१ अर्थः नायका कहे छइ नायक का कूं सा
र छे ते नित्य की निर्वित छे अने सोम राजा जे चंद्रमा ते हनी आपकी निंद छइ कं० कलंकी छइ अनइ चंपा ना फूल नी जे
पांषडी लगार कहा छइ जाति इं तो करमाइ जाइ अनइ प्रभुजी नुं सरीर नित्य हर्ष फक्त छइ अने प्रभुजी ना जे हाथ ते
परम कोमल अने सुगंध छइ फक्त अनेक मलनो नाल ते कांटे फक्त छइ ते कांइ हाथनी बराबरि नावइ अने ५ मदन
मोटा गोपाल ना जे लोचन ते विसाल कं० मनोहर अने कामना जे बाण ते हनी उपमा दीजे तो रस निहाणि थाइ ते थकी अ   कूल
धिक छे २१ अथ प्रीया प्रकास गुण कथन सविया॥ खंजन हैं मनरंजन के सब रंजन तैं न किधौं मति जी की मीनी सुध   जावकी
कुसकी कैंधौं मधुर की द्युति दंतिन की किधौं दाडिम हीं की चंद लौं मुख चंद किधौं सखि सूरति काम की कान्ह की नीकी को
प्रिया मल पंकज कै पद पंकज प्रान पियार कि मूरति पी की २२ अर्थः हे सखी आज षंजन पंखी मन ने रंजे एह वा छइ केनाके   मीडकी
नायके ता के सब राय नाने अधिक छइ मोह रे मन ने तो कृष्ण मजा छे अनइ अमृत सीचे केना प्रभुनो अधराम्र
त मी छे अने दाडिम नो ते ज अधिको के ना प्रभुजी ना दांत नुं तेज अधिक छइ अने सषी उगो छे ते चंद्रमा सनो केना प्रभु
जी ना मुख सरूपी यो चंद्रमा सनो मूर्ति कामनी सारी केना काम नी फूटरी पंकजा जे कमल ते कूं लो केना प्रभुजी ना चर
ण कमल कूं लो प्राण बालो कीजे केना प्रभुजी नी मूर्ति वाली कीजे तिवारे सषी कहे प्रभु ने जे उपमा दीजे ते थाजे २२
अथ हरि कौ प्रकास गुण कथन सविया॥ लोक कूं के सब सोम सरोज सु धामैं के रंग नि देह द्युति है दाडिम के फल श्रीफल   रुउ
विद्रुम हाटक कोटिक कष्ट सहे है कोक कपोत कहि अहि के हरि कोकिल कीर कुचील कहें है अग अनूपम वा त्रिया
के तन की उपमा कहि बेहि रहे है २३ अर्थः हवइ नायक नायका ना गुण वषाणे छे लोक कूं सोम कं० चंद्रमा ते हंस
॥ री प्रभु राधाजी नुं मुष छइ ते तो देवता थि अमृत पाई नइ एकाग्रका

री मु क्यो छे जो कमल सरीषो मुख कहीइं तो भमर इं परिमल लेइ नइ मुक्यो छे जे दाडिम ना फल ते राधाजी ना दांत जोइ ने
आफणीइं फाटी गये छइ अनइ श्रीफल कं० बीलां ते तो नीरस छइ स्तन मांहे तो रस छे अने विद्रुम जे प्रवाल ते तो क
ठिन छे अने अधर कोमल छइ वली हाटक जे सुवर्ण ते हनो अनेक सो टी घसइ छइ ते तो कोमल थातो नथी वली ना
क नुं सरीर देह सदाइ सकोमल छइ वली कोक जे चक्रवाक ते हनइ तो वियोग छइ कपोत होलो करी जेह स्त्री अहि जे
सर्प कोकिला जे कोयल कीर जे पोपट ते तो सगला इम लिन छइ पिण राधाजी नो अंग अनोपम सुंदर छइ ए तो जीव एह
एहनी उपमा तिल मात्र कहिवा ने रही छे २३ अथ प्रभु प्रकास गुण कथन सविया॥ लोचन बीच हुं नी सुबिराध   उमिकाति
की केशव क्यों कूं सुजातन काढी मान कूं मेरे गही अनुराग नि कुंकुम पंक कलंकित गाढी मेरी यों लागी रही तनु ताजा
नी यों द्युति नील निचोल की बाढी मेरे ही मानौं ही ये कं कुसुपति यों अरविंद दीपे मुख ठाढी २४ अर्थः हवे नायक सषी
आगल कहे छे हे सषी माहरी राधाजी नी छति जे कांति ति सीर ही छइ ते केसवराय कहे छइ किस ही काढी जायन ही वली
कुंकुम ना जे तिलक अनइ मीयल की धी छइ ते जाणीइं माहरो अनुराग जे प्रीति सु पिणी जेरा तमि तिलइं इम गाढी करी
नइ ग्रही नइ कुं वेसुं वली नील अंबर पहिस्यो छइ ते हनी जे कांति ते माहरा हीया नइ विलगी रही छइ ते जाणीइं महारा
हृदय कमल नै ग्रहणी जन कुं वे परिमल नइं भमर से करी ने २४ अथ स्मृति लक्षण दोहरा॥ और कछु न सुहाय जहां तु
ल जाय सब काम मति मिलिव की कामना ताहि को स्मृति नाम २५ अर्थः जीहां कांइ बीजो गमे नहीं वली बीजो काम
सगलो वीसारी मुके जाय मन मांहि मिल्यो तेह जकाम करइ ते हनु नाम स्मृति कहीइं २५ अथ राधाजी की प्रछन्न स्मृ
ति यथा सविया॥ बोल्यो सुहाय न बैठ्यो रहे स्यो अरु देख्यो सुहाइ न कुंज बन्यो सो नीकी ये बात सुने सुमुझे न मनो
मन काहु के मोह मठ्यो सो केसव दुंठन यो उर मैं मति मूठन यो गुन गूठ पठ्यो सो को करि साजु बजाविको बीन हि
वा को कवुचितु बक्र चढ्यो सो २६ अर्थः हवे सषी सषी प्रते कहइ छइ आज राधाजी नो मन चाक मे चढी रह्यो

पासें छे केहनो बोल्यो गमतो न थी किणही सौं रम्यो गमतो न थी किणही साथें जो योगमतो न थी ह्यां मांहिं षेतूं हूं जे एह
नी मूरमति थई छइ के कोइ गुणनास मुहनणी छे मंत्र तो सा जकुणकरे बली कुणवजामइं एहनो चित्त तो जाणी एवा
केचटी छइ २६ अथ राधा सखी प्रकाश स्मृति लक्षण सवैया॥ मेरे मिलाप हि मैं मिलिहों मनमोहन सौं मनमोहन
दी जें मौनहिं मौन बनैं नक हु अब क्यौं मनु मानद केंरमनीजें औसेहि के सब के से जियें अहो मानन षाक्षओ पानी नथी + नौ+
जें जानि हैं को ऊकहा कविहान बसो कुन सो तो संको कुतो कीजें २७ अर्थः हवे सषी सषी प्रतइं कहे छइ एकदा समें
नें विषइं नायकाने स्मृति उपनी छे तिवारें कोइ बोल्युं गमतुं न थी तिवारइं कहे छइ हे राधा जी कि बारें हुं मिलाबीस
तिवारें मिलस्यो ते पाछ्ह मुणाइ जमन मोहननें मोह उपजावीनइं मो ताने मनआमी नइं मिली हुं नहीं अनेह समीआ
बो दिहा नो मौन धरीनें छे वीकि मर्चलि कांइ कषीतीं मानतो देणारो जे मी उजाते हनारसमांहिं तीजीइं अनेको लाजा णस्ये
तोक राम जो हा या मांहिं सोच छे कहि तु विचइं रहइं छइं रहे छे स्यामाटें संकोचन कीजइं २७ अथ कृष्ण की प्रछन्न स्मृ
ति सवैया॥ घो घिघनें घनसार घस्यो घनस्याम स्फचंदन औतनु रूल्यो केसव कुंजको कूलचितें प्रति कूलन ए स्फल फू
लनि फूल्यौं ऋलिसें तौलन बोल तकूउत जात कितें मनुसंत मन भूल्यौ जानति हों यह का हूं कें आजु मनोहर हा विहिनी
रनि फूल्यौ २८ अर्थः एकदा समें नें विषें नायक नाही या मांहिं स्मृति अवस्था उपनी छइं तिवारें कांइ बोल्युं गमतुं न थी
ते सषा सषी आगलि कहें छे पहिली उडीनें घनसार जे कपूर ते घस्यो बली मांहिं चंदन ते लीनइं शरीरनइं विषइं वि
लेपन कीधो अनें केसव राय जे ते कुंज जि लता गृह ते हनें पासें जई जोईनइं पाछा वल्या ते स्या माटें तिहां अनेक लांति
ना फूल फूली रह्या छे ते जोइनइं मनें सास्फ कुषपाम्या वनने विषइं कुलाषम्या कइं तिम फिरता दीसइं छइं अनें जेम २६
न मां आवे ते बोलइं छइं चित्त नइं विषइं लम बयो अइंइ मलूलइं तमे छे जाणुं छउं आज हरि नो मन कोइ स्फंदरीनाम
नोहरहार स्फ मांइ हीबोलइं ही बोल्यो दीसइं छइं २८ अथ कृष्ण को प्रकाश स्मृति॥ बासर बसर ए षिस्क के सब डासन हो

नु +म+

+कांइ+

सन की गति लानें चंदन चांदनि स्यौं चित वाहै न चंद कचंद चितारस लीनैं पानन पानन पानु करें कबहास विलास विदाक
विदीनें औसे हैं गोकुल के कुल की जिहिं गोकुल नाथ है एदंग कीनें २९ अर्थः एकदा समइं नइं विषइं नायक नें वासक
उजमयरि सतने स्फ मीला गइ छइं बली आलजे विहाणा तेनो मस्कर दरियाना मोटा माथा ते हनी षवे लागइ छइं बली
बाबनां चंदन ते तो बली चांदनी रात्रि जोइं घकें चंद्र कजे चकवा कते जिम दुषपामें तिम दुषपामइं छइं विरहर सइं एम
लीजें छे पानन कर पानन षाइ पाणीन पीइ षाइं नहीं हासकर हास विलास नइं विदायकरी मुंक्यो सषी कहइं छइं गोकल
नी स्त्री यो एहवी छइं जे तें गोकलनाथ एह बाकरी मुक्या छे २९ अथ उद्वेग लक्षण दोहरा॥ दुषदायक है जात जहां स्फष
दायक अनयास सो उद्वेग दसा दुसह जानत केसवदास ३० अर्थः जेतली एक स्फष दायक वस्तु हती तेतली सघली दुषदा
यक अनयासें थई जाइ तेहनें उद्वेग अवस्था कहीइं ते के सव दास कहें छइं ३० अथ राधिका को प्रछन्न उद्वेग सवैया॥ बडु
नहीं विषकंद हे केसवराज यहे गुनलीलि तलीनो कुंतल पावन जानि अपावन लोरि पीयो सषि जानन दीनो यासों स्फश
धर से सवि सौं धरु ना सुधस्यो विधि हिं बुधि हीनो सूरसों माई कहा कहि यें यह पाप स्फ आप बराबर कीनों ३१ अर्थः एकदा
समइं नइं विषइं नायका नइं उद्वेग अवस्था व्यापी छे ते माटें जेतली स्फमीते स्फमीलागइ छइं चंद्रमानां किरण छइं ते तो अ
ग्नि तीपट इं बालइं छइं ते माटइं चंद्रमानी निंदा करइ छे हे सषी एचंद्रमानइं तुं चंद्रम जाणीस ए विषनो कंद छइं कं
मूल छे कर विषतुं तेहनो हुं तांत जाणइं राहें गलीनइं पाछो मेल्हो अनइं बली कुंतल जे अगस्ति ते णे समुद्र पीधो जिवा
रे लूल तेर पीवा लुं पलि अगस्त तो महापवित्र तिणे जो स्फ जे एम हा अपवित्र छइं तमाटें पेट मांहिं थी काढी नांष्यो बांध्ये
समुद्र काढ्यो ते एचंद्रमा माटें पेट मांहिं रूपच वानदी से अनें हे सषी बुद्धा जाणे बुद्धि कांइ दीसती नथी जे शेष नाग
एह बीनो सार उपामीर स्यो छे जेहनें आधारइं चोरासी लाष जीव रह्या छइं ते हाताना मति विषधर मास्ये स्फर्यदे
वनइं स्फ कहीइं जो एपापीनइं चंद्रमानइं बराबर कीधो ३१ अथ प्रीया प्रकाश उद्वेग सवैया॥ केशव का त्हिं बि
लोकितजी बह आज बिलोकें बिनां स्फ मरेंस्र बासर बीस बिसें बिस्फ मीजि एरातिय न्हाइ की योति॥

जरैंद्र पालिकतेंक्रअन्तमितेंपालिकआलिकरोरिकलोलिकरैंय नूषनदेऊकवुवुजनूमनवुमनदेहिकोहेरिहरैंय
३२ अर्थः एकदासमेनइंविमइनायकानइंउद्वेगअवस्याआवीछइ तेसमीनायकेंआगलिकहेंछइ प्रज्ञजीकालिजेता
मेजेवस्तआमीहती तेसारीपवेंजोइनेंकमपामीहसिंतेंआजजोवानइकाजेंवारइरसंतारछइ वासरजेदिहातेंतेविसे
विस्याजिमयामेंऊइ तेपनीदीमेंइमसरडीनामीछइ अनइंउजवालीजेरातितेंलोवलइछइ अनइंवलीपलिंगउपरि
बीनूइआणीछइ अनेंकइथीपलंगेंआलेंछे एमकोमेकसमीउपचारकरेछइ हेवुजनूषणकाइकनूषणआपोजेक
जोइनइंवुषदेह तुंवीसारे ३२ अथसीप्रज्ञपकोप्रछन्नउद्वेगलछनसवैया॥मेमनिमोंहसिंहंसनहेरतहंसनियोंम
॥मधीविकामा नरूमनमीविकंजनिमींविउवेदनवाहलवेदयोंकंजनिकेंज्ञनछीवें तालतेवागनिवागतेंतालनितालतमाल।
कमलकांइच कीजाततमीविंकेंसेंहिहेंकेमवाविकवतीक्रनिक्रेसींदसापीयकीपतुजीवें ३३ अर्थः एकदाप्रस्तावनइंविमइंना
हमानेंनहिवा यकनेंउद्वेगअवस्यातपनी तेसमीसमीआगलिकहेंछइ हेसमीआजप्रज्ञजीनइंकांइगमतुंनथी तेकहेंछइ मेम
हि– नीघटाउकांइहसदीछइप्रसन्नथाइनही तिमप्रज्ञजीकांइहंसदीठइप्रसन्नथातानथी अनइंहंसजिममेघनीघ
टावउमरिजोतानथी तिमनायकमेघउपरिजोतानथी अनेंकमलतेजिमचंद्रमानेंवांछतानथी तिमकमलनीपरि
प्रज्ञजीपणिचंद्रमानइंवांछतानथी चंद्रमाजिमकमलनइंसांविरतोनथी तिमचंद्रमानीपरिप्रज्ञजीकमलनइंसां
+ला+ विरतानथी अनेंतंबथीकामीनेंवामीघकीतलावमांआवेछइ अनेंतालतमालनायेहुन्तीजातिछइ तेहनइंतोआ
ळमतानथी अनेंसमीकेसवकहेंछे तेथवतीकेहवीहस्मेंजेतर्जोरनीएहवीदशादेषीनइंजीवइंछइ ३३ अथप्रज्ञप
कोप्रकासउद्वेगलछनसवैया॥सोविसरवीलरिलेतविलोचनकांपतदेमतफूलितमालिहिंफूलेसेंमोलतबोलतितां
हिंनवागगयेकिछेंतेरेहिताजहिं देंषोजोचाहतिदेमनआवतिक्रमेमेंहोनदिषावतंरिलातहिं आजकहादिपसाधल ३४
गीजवदेषोकवनफहायगुफालहिं ३४ अर्थः एकदासमइंनइंविमेंनायकनइंउद्वेगउपनोछइ तेसमीराधजीआग
लिकहेंछइ हेसमीप्रज्ञजीनइंआजपरुंदोहिलउदीसइछइ तमालनाहक्षफूल्याजाइनइंआषेयाणीइंनरइंछेक॰

रोइछे अनेंघरघरभ्रूजेछे अनेंकलामरषानमइं अनेंकांइमुहमइंथकीबोलतानथी अनेंहवमांवामीमांगयाछे तेमकें।
तोहविन॰लवेगयाछइ तुम्हनेंजोवाहीनेंछे पिणजोइमकतानथी तिवारेंनायकाजीबोल्यां हेसमीमुजनेंएहवामांलालदेषा
मे तिवारेंसमीइंकसूंतुम्हनेंनलीजोवानीमनसाथइ जेहवामांगोमालजीनेंकांइदीवउंगमतुंनथी ३४ प्रलापवर्णनंदोह
रा॥तमतुरहेंमनमोराषोहेतनमनपरिताप वचनकहेंप्रियपक्षसोंतासोंकहतप्रलाप ३५ अर्थः मनजेतेतमराहीमछे
तमतुंहामइं मनतेविषइंहेतअनेताप छेवानाकुइं मीउनीसमीकुइतआगलिरावकहे तेहनेंप्रलापकहीइं ३५ अथश्री
राधिकापकोप्रछन्नप्रलापसवैया॥ वैलतहांसानवोरिकेंभांउनाहेतुनवेरुहियोकंपिरोसोंलेंनोनदेंनोहलाउनेंमांतान तजानहो
गैनोकहाकाहींतोसोंआनिदयोंकरवमेंवुपकेमवकेसेंसहोंरीकहाकहींकोसों नेनतविलरिग्यालिकहिओरीदेषोतेका
कहाकस्योमोसो ३६ अर्थः हवेंएकदासमइंनइंविमइंनायकनायकाहसतांमांनलतांकांइककस्तु तेनायकानेंवुष
लागुतेहनुंवुषधरइंछइ अनइंसमीआगलिकहेंछइ हेसमीएसंघातइंकांइररमीइंनहो हसीइंनहीएहनीसेरीएजा
इइंनहीएआगलिकाइवाऊवालीइंनही आऊहेतएकंकरीइंनही कांइवेरकरीइंनही एहवोमाहराहोयातोसतावछइ
तेवोनहीदेवोनही हिलवउंनही मिलवउंनही सगाईनही कांइगोत्रनही तुम्हनइंसमीकंकऊकेमवरायेकमपमाहिं
आवीनइंमहाडुषदीधं किमयमुनेंकेहनेंकऊंनैंनतरीनइंग्वालिकहेंछइ समीतेंदीवोकाकेमुनेंककस्य ३६ अथरा
धिकाकोपकोप्रकाशप्रलापसवैया॥ आतिकेंमांकिमिलीक्रतीघलतिजानेंकोकांक्रमेंआएकहातेंधीवहिंमोविपसोंतो +मुती+
ही– कवसाठिधीठीविगइहविपीठिकीयातेंगईगमीलाजनिहीहियहोतेंतेउवीजरीकेसवकोमनिमातेंइतीविसमेंनसहीकवऊमे
रहीबचिहोंअंमिआतिकेतातें ३७ अर्थः एकदासमइंनइंविमइंसमीनायकाप्रतइंकहेंछइ हेसमीआजकुंसमीसमानइं
रमवागइंहती तिहांकुंपलजालेंउविताकाक्रकिहांथकीआव्या तेउवितादृष्टिंपमाआवीनइंधीठीनीपठिकस्यआवीनइं
जेवेवाकंवालोपाडिलिआवीनइंजालीघातकीधंसमीकुंनेलाजमांहिंवूमीरहीबलीरनेइंऊठीअनइंरीसइंकुंजीरही
॥एहवीरीसमइंकइंयइथानीनऊंतीपलिलगारेकनेत्रनाग्लामटमाटेसमी ३७ अथप्रज्ञपकोप्रछन्नप्र

लाप सविया॥ नित निचोल दुराई कपोल विलोकति हिं कीयें बोलि किं तोही जांन परी हंसि बोलत नीतर लागि गई अवलोकन मो
ही बूझिबे की जक लागी है कांन्हहिं के सब के रूप विरूप लिलोही गोरस की सौं बबा की सौं तोहि किं बार लगी कहे मेरी सौं कौं कही ॥ ३८
अर्थः एक दास में नें विषइ सषी नायका प्रतें कहें छइ हे सषी नीलांबर ना घुंघटा मांहिं कपोल तां कीनें जोतो हतो वइ बोलती मो
सामुं जोई नइ तीतर ना सी गई ते का न्हइ उलभावा ना रषबा लागी छें अनइ केसव राय नें ना हरा रूप नीं रूचि कः प्रीति बा
धी छइ अनें मुझ नें कहे जे गोरस ना सम मा हरा सम जो कहें ते हनैं केहनी कें अरी ॥ ३८ अथ श्री प्रच्छन्न को प्रलाप प्रकास स
विया॥ मोहन मरीचिका सो हास घनसार को सो बास मुख रूप की सी रेषा अवदात हैं के सौदास बेनी नो त्रिबेनी सी बनाई
गुही या में मेरे मनोरथ यमुनि से अन्हात हैं नेह उरजे सैतने नदि षिबे को विरूजे से बिरूढ की सी सोहैं व्रज के से तुरजात हैं दे
वी सी बनाई विधकों नकी हैं जइ सेय हते रेघर आई आजु कहि कैसी बातु हैं ॥ ३९ अर्थः एक दास में नइ विषइ श्री राधाजी सषी
नइं मंदिर आव्या छइ तिवारइं प्रच्छ जोइ दीठी प्रच्छ जी सषी आगलि वषाण करे छइ हे सषी एह तुं हास्य के जालिये मोहनी नी
जिम रिचिकी कः पद दोजन कुवे स्थ अनें मुख नो जोस्वास तेजाणीइ घनसार जे कर्पूर ते हजनकु वे स्थ वली जाणीइ रूपनी
रेषा न कुइ तिम मा हरा उरनइ विषइ च कुटारही छे अनें केसोराय कहें छइ वेणी गुंथी छइ ते त्रिवेनी सरषी बनावी छइ
त्रिवेणी कहतां जे स्थ कहीइ गंगा यमुना सरस्वती केस काला छें ते तो जाणीइ यमुना जी ना जल छे लां फूल मुंकी केस गूंथ्या
छें ते तो जाणीइ गंगा राति दोर में गुंथ्या छें ते तो जाणीइ सरस्वती नां जल ते त्रिवेणी तिर्थ नइ विषइ महारा मनोरथ रूपीई
याजे मुनीस ते मांहिं मजन करे छइ नाहें छें अनें जो बानइ काजिं श्रीवं की रला छइ कः जोबानइ काजिं तनावला थया छइ
एह वातिन छे अनइ लगुटी की सी छे कः फर कीरही छें अनइ उरजे स्तनात उ कीरला छइ कः उइ उघाड़ा दीसइ छइ
अनें विधजे ब्रह्मा तिणें दवी सरषी बनावी छइ कइं सिरजी छइ एके हनी बेटी छइ अनें सषी ताहरइं घर आवी छइ ते आ
ज केहनी वात छइ ॥ ४० अथ उन्माद लक्षन दोहरा॥ तरकित बेकुतित उ विलजें वितिरहें सुख देषि सो उन्माद जनावही रो
विह संविधोम ॥ ४० रटकी उठी चली उठी नें चाले बली कैहनां सुषमा सुं जोई रहें घरी एक मां रोए घरी घरी एक हस्ये ते हनइं

उन्माद कहीइं ॥ ४० अथ राधाजू को प्रच्छन्न उन्माद सविया॥ केसव चौंकति सी चितवै छति आंध रकैं तरकैं नकि छाही छूजि
ए ओस कहे मुसैकु ओसस्य ओर की ओर लई पल माहीं झी विलगी कि षें वाह थिलगी मनुहूलिय सो कि क सौ कछु काही
घूंघट की घट की पट की हि हरि आजु कछू स्थ षि राधा किनां ही ॥ ४१ एक दास मइं नइं विषइ नायका ने उन्माद उपनो छइ ते
णे कांइ स्थ षि बुद्धि नथी ते सषी कृष्ण आगलि कहें छें हे केसव राय आज राधा जी ति गति अनें मति दीसइ छें जो एतिवारइं च
कित थई नइ जोइ छें बातिजे ही उनघर करीनइं रह्या छे कः कृष्ण जी रह्या छइ अनें पोताना उछाही यो देषी पोतें जनमके
अनें महाराज एक घरी मांहिं कांइ घर रही छइ केहनी दृष्टि लागी छें केनां त्रम थयो छइ केनां किहां मन लू लउ पस्थ छें अनें सही
राज एक घरी क मांहि कोणे कांइ कामण कस्थ छइ स्थ घटानी शरीर नी बस्तु नाहें महाराज आज राधा नइ कांइ सू षि नथी ॥
अथ राधाजू को प्रकास उन्माद सविया॥ केसव बुद्धि स्थ छि हरि उस नि उ व्यथा अगाध राधि कहें बाढी बुद्धि लहें लटकति कठु
तरि लोबि तव तिनी ठि मीठि करि गाढी तरकति तकि तोर तित उत लफ ति अति अपार उपचार निनाढी सकस कोतिले साहु
अवेत स्थ चेत कु प्रेम प्रेत लगाहि गाढी ॥ ४२ एक दास में नइं विषइं सषी नायक प्रतइं कहइ छइ हे महाराज तम विनाराधा नें
अनंत अथा वेदना बाधि छइ केसपास छूटा छइ एम फलीया मांहिं फरती हींडइ छइ अनें बारे दिसइ जोइ छइ घणो उपच
करे छइ सषी तिणें घणो रुंधलइ छइ अनइ कस कसति कः करगरइ छइ घरीक मां अचेत थाये घरीक मां सचेत थाइ घ
रीक मांहिं आणीइ प्रेमरूपी ये प्रेतइ स्थ षे ग्रही छइ ॥ ४२ अथ श्री प्रच्छन्न उन्माद लक्षन सविया॥ गूढ अगूढ प्रकासत के
तनि लोक अलोक की बात मरी सी रोवत है कब हूं हसि गावत नाचत लाज की छांडि हरी सी काहू की सो कुसको वनकेस
व देषत आवत देह मरी सी बाम कि कायकि काम कि बाम कि है हरि की मति काहू हरी सी ॥ ४३ अर्थः एक दास में नइ विष
इ नायक नइं उन्माद उपज्यो छइ ते सषी सषी आगलि कहें छइ हे सषी प्रच्छजी ने आज अने सी दीसे छइ जे कांइ कांइ गु
ह्य वार्त्ता कुइ ते पण प्रगट करे ते हनक है अनें लोक कहतां लोका चार अनि अलोक कहतां निंदा ते बेसर षा जाणि छइ घरी
क मां रोए घरीक मांह से किवारें ग्यान करइं वली नावतां लाज रूपणी जे छमी तेतो उनामी नांषी केहनो विचार न केह नोसं

Dr. BHAU DAJI

कोवक० वीहक तेलगारे मन मां आणें नहीं अनें देषतां काटकी पडें ते जाणीइं मिरची सी कहतां ऊमस जन ऊहूं सरूं जाणीइं वात क०
मूर्छा के नां कोइ कामना बाणवा जे छइ के नां हरी नी मति हरी ली धी छें ४३ अथ कलस सकी प्रकास उन्माद सविया॥ सजल वकित
चित चित वत नवऊं दिठि वाहि वाहि रहे मुष वपलता अइ अइ सो वत सो मन मन कं पत रहत तन के सोर इरो वत हसत उ
छें गाइ गाई वलहि दिषाउं तोहि देषत हिं लयो मोहि लयो सकह नआइ तो सो आलि अऊ जाई जे सें क हू आक वाक वकत हैं।
आजु हरि ते सें जिन नां सु सुऊं काऊ कोनिक भिजाई ४४ अर्थः एकदा समें नें विषइं ब्रजजी ने उन्मद उपजें छइ ते सषी राधि
जी आगलि कहें छें हे सषी आज के सवरायजी नें मन कांइ वा मनषी सजल क० जल इं नरांणी एह वीजी आंषि ते हनी पछइ
वकित क० गहली नी परइं आरे दिसइं जोए छइं मन मां वाह क० वाछ ना करता षका आर दिसे वपल होय ति मउ ताव ला अ
ये छइं क० रोम इं छइं मन मां सो वक० विचार स्यो इ करइ छइं को ण जाणें अन इं मन मांज ऊजइ छइं अमे मन नां मन मांज अ
अ वाज इं छइं अनें घरी क मां रोइं घरी क मां हसें छइ घरी क मां गाइं छें सषी वालि उनें देषा म उ दीठ इं ब कां इ मोन इं तय उ मनो
छइं ते केहनइं कहि वाइं नथी हे सषी घणुं आऊला था इं छइं अनें मुह मांहि थी अगबग बोलें छइं क० जोतलव इं छइं नेह मांहिं रषे
के केहनुं नाम लेवाइ जाइ ४४ अथ व्याधिलछन दोहरा अंग वरन विवरन जहां अति उच्छ्वास तेन नीर परितापवऊ।
व्याधि सकें सवदास ४५ अर्थः जिहां अंगनो वर्णफिरइ अनइं लांबा रनिसासा मुके वली नेत्र मांहिं थी आंसु परे सीलें त पति ष्या
प के स०व दास कहें छइं ते हनइं व्याधि कहीइं ४५ राधकाजी की व्याधि लछन सविया॥ बिनु त्यजो उनि वें न तें बोलेन विन विलो
के नां बुद्धि लागी हें विन सकति समुझें न हू वात न हि प्रेउल ग्यो कि सें प्रीति जगी हें के सवबि तो हितो हि रटें रट नोहि इ नें उनही।
की लगी हें बिसराव प्रातु न प्रास्यो न हूं सक ति काऊ वगांकि उ काऊ वगीहें ४६ अर्थः एकदा समें नइं विषइं नायकानइं व्याधि
उपजी छइं ते सषी कहें छइं हे राधजीनें तां आहार बोलवउं मुकयउं अनें ब्रजजी पणि बोलता नथी जाणीइं विऊनी बुद्धि लागी ग ४८
ई छइं समस्या कांइ हीकहीइं ते मांन लइं नहीं अनें उ कांइ कही वात कहीइं ते समझ नी नथी ते सकं बेऊ नइं प्रत छलगो छइं।
के नां प्रीति जागी छइं अनें के सवरायत तो नाह रइं नाम लेइ रमें छइं कहतां नाह रूं नाम लेइ जपे छइं अनें उ पण वार इं र तो।

हनुं नाम लेई नइं जपइं छें अनें ते पिण षातां पीतां नथी वलीउं पण षातीपीतीनथी हे सषी ऊं क ऊं ते सांभलि तें काऊनें वष्या
छें कइं उ ऊनें कांऊ इं वगी छइं ४६ अथ स्वामी पद को व्याधि सविया॥ उहां उ न कें तन ताप तें ताप त्यो स्यां इ नके अंस आनि।
अ हैं त्यि उहां उ नाकें उ मिजें यें उसास निसास इ नके उप वास ज्का मिल्यें केसव विनंद ता ल उ एहू षतां उलली पें नि दान उ न पे
यें कें सें कें अकहि वेर उ ऊ नि कहा लयो माई री देषि न रैंत्ये ४७ अर्थः एकदा स मे नइं विषइं नायक न इं व्याधि उपनी छें
ते सषी कहें छइं सषी आगलि परइं तो राधजी नें मा सें तांम इ वेसी स की ये नहीं कहता दाझीइं अनें आंही तो ब्रजजी ना।
आंसु मांहिं आंघोलाइ परें तो राधजी ने पा सें नी सासें उ मी जाइं छइं अन इं आहिं तो ब्रजजी ना उपचार मांहें षूवी रही छे
अनें के सवरायत तो ब्रजजी ना लाल अनें राधजी तो हूष तान नी ऊं अरी एव ऊ नो नही न तो ला थउ न थी क० उ षजणाउं
नथी तो स्यो उपचार करीइ एक वेलाइं वे हूनें स्यं थयुं सषी वालो उ ठी नइं ग्रहज ई इं देषानइं बीहा जें छइं ४७ अथ ज।
डता लछन दोहरा॥ नूति जाइं सुद्धि बुद्धि जहां सुष दुष होइ समानु तासों जडता कहत हें के सोदास सुजानु ४८ अर्थः
जिहां सुद्धि बुद्धि वीसरी जाइं सुष दुष समान लागें केसवदास कहें छें ते हनइं जडता कहीइं ४८ अथ राधका की प्रछ।
न जडता लछन सविया॥ घरे उपचार घरी सि अरा सि अरें नें घरी इ घरी न तु बीजें अेसें में ओर कहीये नेक कुउपजें तो।
स के लिकहा हम लीजें देषत हीं यह काम कली ऊ मिलांनि अे जाति कहा अब कीजें कान पिजा उं कहा करों के सव के सें जी
यें वह क्यों हम जीजें ४९ अर्थः एकदा समें नइं विषइं राधजी नें जडता उपनी छइं ते सषी राधजी आगलि कहें छइं हे
+ जी + ब्रजजी आज राधजीनें घरा घरी छें में अनेक र उपचार कीधा पणि तो घरी अनी र ही छे उ जिम २ ऊं करिइ लउं सम सं छे उं ति
म २ घणुं जमी जा बाध इं छइं ते हवा मां घरी उपचार करता मां न वुं रघ्या ये तो अमारें मांहिं सकले वउ अमनइं षो टि वे सो जा
नां जो तां एकाम कली फली फल मर मी को मल कर माती जाइ छइ हवे स्यं की जी इं को मन इं जा उं अनें स्यं कर सं केसवरा
य पछि मजा व तीर हें अनें अमें किम जीवाइं ४९ अथ राधिका की प्रकास जडता सविया॥ अषि आं मिली सषी आनें मिली + न +
॥ पतियां व तियां नि मिली सजि मोनें अंन वि अंन मिली मन हीं मन यों मिलें रां ऊ मनो मन सो नें केसव

केसैंकुंवेगिमिलौंतनकैहैंवहैहरियौकहुंहीनैं पूरनप्रेमसमाधिमिलेमिलिजेहैंतुझेमिलिहैंतवकौनैं ५० अर्थः एकदास
मैंनइंविमइंराधाजीनइंजनतावपनीछइं तेप्रकृजीआगलिकहेंछइं हेमहाराजआजस्वामीनीजीतुंकांइमीलवानंनथीकं०
मीलताथइंनथीतिकहीयेछइं अनेकसमीयोमिलीअनेकउपचारकीधा पिणएहलोंपालीवलएकआयिमिलीनहीकं०
हनीवातमांनतीनहीं केहसंबातकरेनहीं कोइकागलकहीयवाचोतोमनमुकीवावेनहीं अनेंध्यानधरीमननीमनमांवि
चारीरहीछइं केहनीपवइंकोइकरांकजिमहोइं तेहनइंमनमांरीसचरइं पछइंमनमांविचारीरहैंकेहनइंकहेनहींति
ममनमांविचारकरइं हेकेसवरायवहिलाआवीनइंमिलो करवतेहोइंतोकरोजिहांलगइंसरीरमांजीवछइं पछेपूर्ण
प्रेमनीसमाधिमलीकं० संके जिमयोगीस्वरनालीनगामीजिमसबवनथायछइं तिमथासइंनइंयोकेहनेंमिलस्यो ५० +तिवारे+
अथकृसप्रकोप्रछन्नजनतासवैया।। पलहीपलसीतलहोतुसरीरछिवारिसवेउपचारनिदानें जोकरिऐतेनतुमा
मनरवंमनचिंतकबूभमतुमनआनें केसवकानकनेसमुझेनहिंबूझिएकोनहिंकोयहमानें योगुलीयोकिवियोगहिं
काकुंकोलेगकहाइनरोगनिजानें ५१ अर्थः एकदासमेनइंविमइं प्रकृजीनइंगुप्तजनतावपनीछइं तेसखीसखीआ
गलिकहेंछइं हेसखीआजप्रकृजीनइसरीरकांइकमथनथी पणकांइरखेंइसरीरतापथाइंछइं अनइंउपचारजेचिकि
त्सातेतोनिदानसगलीइंकीधा अनेंजेसरीरनइंविमइंकांइमंननकीजेकं० त्राहूनहूंगावीइं मनजकीजइंकं०उपमा
नकीजेकं० कथरेमरमीछे तोनिहतुंकांइकमथतुंमचिंतनेंविमइंआलोनहीं अनइंसखीकेसवरायनइंसादकरीएतो
मांनलइंनहींवातकहीइंतोसमजइंनहीं केआगलिकहीइं एवातकोलमानइं योगलीमेकोनावियोगकेहनीलोकए
रोगनइंसकजालाइं ५१ अथप्रकृजीकीप्रकासजनतासवैया।। कान्हकेंआसनबासनहींनंदनासनमीतकोप्रासनकी ~वाक~
जें केसवइंद्रियसोधिंसाधिमनुंसाधिसमाधिनकेंरसलीजें जोलौंतायेंहरिसिद्धप्रसीद्धनतौजोविजोकिंअलोकनकीजे
देवाकरेतप्रतौंलगिंविवरदातुनजौंजीयदांतुतोदीजें ५२ अर्थः एकदासमइंनइंविमइंप्रकृजीनइंप्रकासजनतावपा ४२
नीछें तेसखीसखीआगलिकहेंछइं हेसखीआजप्रकृजीनोकृनासजअग्निनेहनोमित्रवाकतेहनइंतहाकरतानथीकं०
~~मसचकेवेंथाइंसीपायमोलीआमा~~ +सदयपकै+

केसवरायकेवेसेंधाइंप्रियाछाहीयामांआणीनें मनएकगमिकरीनेंसमाधिकं० ध्यानधरीनेंवैवाछें तोतरसमांहिलीना
छइंसखीज्याहांलगिंहरिप्रसीद्धथयानथीतांलगेंआवीनइंजोतामरीअलोयेअपयशनेंनलीजइं अनइंसखीजिमकोइदे०
वीउपरितपकरइंछइं तिमउत्तउपरितपकरइंछइं देवानीपरइंजोवरदाननआपइं तोजोवितदाननोदीजइंकं० जीवा
तारहेंतेउपायकीजेइं ५२ अथमिलनुदोहरा।। बनैनकौंकुमिलनजहां छलबलकेसोदास पूरनप्रेमप्रतापतें मरतु
होयिंअनयास ५३ अर्थः बलइंकरीछलइंकरीनइंकिहांइमिलीनमके तिवारइंपूर्णजेप्रेमतेहनोजेप्रतापतिणइं०
करीनइंअनयासकं० सहजइंमरणउपजइं ५३ मरनुकेसवदासपै वरण्योजायनमित आजकअमरजासकाहें +जूं+
कहुंकेसेंइप्रेतिचरित्र ५४ अर्थः केसवदासकहेंछइं पूर्णप्रेमथीऊपजेश्रीकृष्णजीतेहनीमरणावस्था तेकांइमेंवर्णवा
यनहीतेस्यामाटेजोएहनेंवेदअजरअमरकहेंछइं तेहनेंहुंप्रतचरित्रकिमवर्णवउं ५४ रतिउपजेंरमनीनकेंमहिलें०
केसवदासतिनकुंअगिनदेषिसखीकरतजोप्रेमप्रकाश ५५ अर्थः केसवदासकहेंछइं रमनीजेस्त्रीतेहनेंमहिलीं०
प्रीतिउपजेतिवारइंतेहनइंजेअंगीसंगतीथकीछिनवचलभाय ५५ अतिआदरअतिजोरतें अतिसंगतितेंमित्र
साधुनितकुंकेहोतहैं केसवचंचलचित्त ५६ रुनगइंआदसमैंकहौ उपजेपूरनुराग जिहिछिथिउपजेंमानुमन बरनु
रुनोरुराग ५७ अर्थः केसवदासकहेंछइं रमनीजेस्त्रीतेहनेंपहिलीप्रीतिउपजेंतिवारइंतेहनीजेअंगासंगतीथकी
चित्तचंचलथाय ५६ रुकेसवदासकहेंछइं रुनगकं० कंदरकामनीजेदसाकं० दशाअवस्थातमेंप्रथमेंकेक
रीवर्णवीहवेंजिणेंप्रकारेंमनमांमानउपजेंछे तेकहुंछुंरुजालकृतेसांभलो ५७ इतिश्रीमन्महाराजकुमारइंद्रजी
तविरचितायांरसिकप्रियायांविप्रलंभसृंगारवर्णनोनामअष्टमप्रभावः संपूर्णम्।। पूर्वानुराग।। अथमानलक्षनदो
हरा।। पूरनप्रेमप्रतापतें उपजेंपरतुअभिमान ताकोछबिकेसोदसो केसोकहिजेंअनुमान १ अर्थः पूर्णप्रेमनें०
प्रतापेंकरीनें मननेंविषेंअभिमानउपजें तेअभिमाननीछायाथकीरीसावेंतेहनेंमानकहीइं १ प्रगटहिप्रेमप्रति

मानती गुरु लघु मध्यम मांनि प्रगट तपीय प्रिया नप्रति केसौदास सुजानु २ अर्थः मानती जे स्त्री ते पीयु सुं कीरी सा वहुं
ते हेतु नाम मान ते मान त्रिविध प्रकार नो छे एक उत्तम एक मध्यम एक अधम तत्त्वारि री सा विते मान त्रिविध प्रकार नो छे २ अथ
गुरु मान लक्षन दोहरा॥ आंन नारि कौ चिन्ह लषि अरु सुनि श्रवणनि नाउं उपजतु है गुरु मांन तहां केसवदास सुजानु
३ केसवदास कहे छे अन्य नारि सु तत्त्वारि न इ विहार कयो ते हेतु चिन्ह देषे तिवार इ ते हन इ रीस चढ़ इ ते हेतु नाम केद्रा॥ +बरां से+
चितु लिवाये तिवार इ पिण रीस चढे ते हन इ गुरु मांन कहीइ ३ अथ श्रीय प्रछन्न विरुद्ध दर्शन गुरु मान सवैया॥ आजु॥
मिलें वृषभान कुमारि हिते नंद कुमार सुविरोग विते के रूप की रासि रस्यो रसके सब हास विलास निरोस रिते के बागे केली
तरदे विहि चैन ष नैन न बाघि रही सु इ ते के फूल हि में मनु तूलि मनौं सकुचे सरसी सुह चंद दिवे ते के ४ अर्थः हवे एक
दास मेन इ विषइ वृषभान कुमार जे राधा जी ते संघात इ कि सब राय जी वस्त्र इ रह्या छे हास विलास विनोद करइ छइ
री स राग विसारी मुक्यो छे ते हवे समे श्रीकृसन जी इं पीण बागो पहिर्यो छे ते हनें नीतरि कं माहिं ती कोरे अन्य नायकाइ नमा
स्ते तहीया उपविदी गा तिवारे मन मांमान उपनो तिवारे दृष्टि फेरवी उपरांत थइ बेवा ते के हनी पर मरसी सुह कंवल
कल ते जिम सूर्य न इ देषी न इ प्रफुलित थइ रह्या छइ अने उचितां चंद्रमा ने दीठो एतले जिम संकोच पामी नें बीहाई जाइ
तिम राधा जी नी दृष्टि पमीक मां आनंद मोह नीते री सम आवे गई ४ अथ श्री या प्रकास गुरु मान सवैया॥ कूकति हों वा
ह गोपि गुमान हि आज कहूं हरि केंगुन गावहिं ऐसें मैं काहू कौं नां उं सरवीक हि के से भों आइ गयो ब्रजनाथ हि मांन भवा
वति ही जु वीरी सारही मुष की मुषहाथ की हाथहिं आतुर है उन आंषनि तें अंसु आनि क से अविरा न के साथहि ५
अर्थः एक दास मेन इ विषइ गोपी ग्वाल राधा कृसन सहू को आनंद मां बेठां हता गाहा गाथा कहता हता हसता हता एहवा ४२
मांकोइक सषी नुं नाम बरासैंनी सरी गयो ते राधा जी इं सांभल्यु तिवारे वीसी पान हता ते मुह ति मुह मांहि पीना मना अहु
रनी सस्या ति संघाते राधा जी नी आंषि मांहिं थी आंसूनी सस्या ५ अथ श्री य प्रकाश गुरु मान लघुमान सवैया॥ ऐसें मीऐं सा॥

रति राखे सौं हनि के सांचे स्याम दे यो आनि बाचि कहो कौन की एवी ठी हैं सुन कुसकुलागर पाई रावरी ही पाग मांही काग द कें रूप
का रूपमा ही की अंगी ठी हैं जानति हों ठई मग पायो है जनम जग लोक में अलोकनि को बीथी तुम मींठी हैं का हे कों कहा वतिक
दूक काल कूट सी एक स्यो हरि हरि हा हा हा हा सि हम सु कों तो मीठी हैं ६ अर्थः एक दास मेन इं विषइ श्रीकृसन जी नी पाघ मांहिं थी
वी ठी पडी ते राधा जी नइ लाधी ते वीठी कोइक नायका नी लिषित हती ते श्रीकृसन जी नें आणी देषाडी कहे छे जे वृज श्री वीठी के
ह नी छे अने हे स्याम जी तमे एह वी रीति राषो छो अने सम तें खारे सांचा दी सो छो आ वीठी लगार ने बाचो तो के हनी लषी छे
+ग+ हे सुंदर तमारी पाघ मां हि थी अमनें लाधी छइ कालने रूप छइ पिण जाणीइ आगली अंगी ठी छइ अने कुं जाणुं छु उपज्या
इ लोक मां रागे जगते जनम पाम्या छइ पिण लोक मांहिं अलोक जे जावे नते हनी जे वाट ते तमे दीठी छइ अने इ काल कूटने
विष ते सरषी कहवी एहवी वीठी ते कोलें लषी छइ तिवार पछे हवे हलवे कसुं हसी नें कसुं अमनइ तो मीठी लागी छइ ६
अथ प्रिय प्रकास गुरुमान दोहरा॥ लोक लीक उलंघि कइ प्रिया कहे जब वैन उपजि परत गुरु मान तहां श्रीत मा के॥
उरऐन ७ जिवार इ स्त्री लोक मर्यादानु कीन इ उल्लंघ न इ कें कि विलाववचन कहे छइ तिवार इ तत्त्वारि न इ रीस चढ इ ते हन इ गु
रु मान कहीइ ७ सवैया॥ आपु नै मौं आपु ते ही आगे कहिय तिकि मैं तो रिकें मजानि यो विही में मो लियति है मी ठी कुंतो रा॥
कि अति जो सूक रूंजाय के सौं औरु कहा तिन लेवरी सौं बोलियत है वेई पद पुस्या मुजि तु वितु पना पसनानि पति कमइ पनेथ
न सार औलियत हैं बोलति हों के से एसे बोलो जैसे बोलियत मूल लहे सौं ते से बोलि बोलियत हैं ८ अर्थः एक दास मइ नइ
विषइ कृसन जीनी सषी राधा जीन इ कहे छइ सीषाम ण घे छे हे सषी घोता ना जे बाल्हा कुं इ ते हनो जे काइ बाक होइ तो आपणो
एकांत बेसारी नें कहीइ पणि पोटि ना जे पजाना कुं इ ते काइ किहां बाट मां बोली देषाडे जो किहां जाताँ देषीये तो जालीइ जो इकि
हां जइ सके अने तेन जे आंषो ते कांइ पाली लेइ नइ बोली इ किहां जो तां कुंइ तो वारी इ अने कए ते हि जपन स्याम जे विना पमी
कन इ वियोग इ ते मे एह वउं जड़ पपां मोछो जे पणी कपरणी कहतां स्त्री यो ते मा मठी मिलीन इ मन सार जे कर्पूर ने पसीन इ
मील इ चोपड़े छे तो हीस म पामता न थी तो ते ह नें जीतें कुम कि मम ता वी इ एह वउं किम बोली इ के हनें सी

पवे करी अने कही थिं वेचातानी ध्रुकइ ते न पणि एह वत्तं बोलवोली इं नहीं तो आप आपणा किम एह वत्तं बोली इं ८ अथ प्रिया।
प्रबन्न लघु मान दोहरा॥ देषत कान्ह नारि त्यौं देषे अपने नैन तहां उपज्यो लघु मान के सन्मे सबाघे वैन ९ सवैयो॥ कान्ह
तिहारी विधान प्रिया के सयान सयान सबै मन मांही मान कियें अयमान आवे यह मान समै अनुमानि न जांहीं सुरव दुरव
न के सब जानि परै समुझै रिस हांसि न औरु तु नांही यौं बिन हीं सियरी बिन तानी छ यौं बदलै बदरा नी की छांही ९ अर्थः
जिहां नायक ने पोताने हृदे कोइ अन्य स्त्री ने सषी कृष्णजी आगलि कहे छइ हे महाराज तमारी व्हाल प्यारी जे राधाजी ते हनइ
सयान कहतां अज्ञाण पणुं स पणुं इ मन मांहे तथा उपमान एस वे एह ने एहवे जाण्युं पडे छै ते मान सब की समझे छै कहतां
कहेवा लागे छै अने सुष दे षे छै दुष देषे छै तेह ने जाण्युं पडे छै अने रीस हस बंने तह पिण न जाण्युं मडे छै आउर कइउना
वतीन थी अने पनी कमासीनी पनी क मां ताती जिम बादलनी छांहि पनी कमांतन को पनी क मां छांहि ९ अथ प्रिया प्रका
स लघु मान सवैया॥ कुंजन कुंज विजै री इठ वसौं इतो कहा वने कमी बदे नइ व कौन के नाये अली काल्हि के तो नंदलाल मो
सौं पालि लाल करे काल्हि जन आई ग्वालि जो मैं तूं रूती लली आज हीं जु बीच परी की विपारि वै कौ मांई आन रंग आन जीय
ज्यौं कनेर की कली तेरे हाक हेकी कोऊ साषि है जु बुझि ये री दे षि थे जुआं षि सापि बुझावे की काचली ११ अर्थः एकदा समे
नइ वि षइ राधाजी ने प्रकास लघु मान उपनुं छइ तिम सषी राधाजी ने कहे छइ हे सषी जे आपणा वाल्हा ते सघाते जूठो मिसे
पनी पेरीसा वी इ नहीं अने एक लगार इ षा ज मित्र ते लोलगार के मां वासोदी धे ते के ह ना मित्र अने हे सषी काल्हि नानंद
लाल मुझ ने घणा निहोरा कीधा जे तुझ नइ सिषामण घो तिवारे राधाजी बोल्या हे ग्वालि जो तुं एह बीलली हती तो काल्हि कांना
वी जे आज अवे बीच कहतां आंतर पाडवा न इ काजे आवी अने माव मीन मारो मुष नो रंग जुत्त ते केहनी पठे जिम कणय ४४
रनी कलीत्र पडि राती अने मोहें थेली तिवारे सषी बोली हे राधाजी तम्हारा कल्यानी को इ साष पूरे तेह ने पुछी इ तिवारे
राधाजी बोल्या सषी आंषि देषी इ तो प्रतवासी दज इ यें ११ अथ कृष्ण को प्रबन्न लघु मान सवैया॥ बोलि जो आए त्यो
बोल तं नां हिं न सो तें कहा कछु कुकति हारी के सब के से जु दे षें सुने वितु जानें कहां को उंजी कि पिहारी पारंसि राईन जा

न तं पाई नई यह नृप की बात निहारी का चहीं दपहीं बाहतं दाम्यो सं अनंत तउं तुं मकुंजविहारी १२ अर्थः एकदा समे नेंवि षइ
प्रकृजी नइ लघु मान उपनुं छै ते सषी सांभलण थे छइ हे महाराज तुं बोलावबा नइ काजे आवी छै अने बोलता न थी ते सुं मु
षप की कांइ वृकुपमी छइ कहतां कांइ मेंत मारु वल सांप्छ छइ अने केसव राय दी वा विना कांइ मांनत्या विना तुं लपीयारा
मन नी जाणे अने महाराज तमे पीरता ही करी ने पीर पाई जाणता न थी अने तमारी न्म नी रीति न दीठी अने हे प्रकृजी तु
मे कांवी शाष वाष वा नइ आकलाप थाओ माके तिहां लगे पषी सकता न थी ते जु जाण्युं छत्रं अने तुं सो कुंजविहारी केहवा उ ते न
माटे तेह वीज सतिजइ १२ अथ कृष्ण को प्रकास लघु मान दोहरा॥ पीय को कसो करे नहीं माया कौन रूलाज उपजत है ल
घु मान तहां वरनत है कविराज १३ अर्थः जिहां स्त्री लाज थकी तनार तु कस्क करे नहीं तिवारइं नत्रीर न इ मन मांरी सघु
छै ते ह ने कवि कहे छै लघु मान कही इ १३ सवैयो॥ आगि कहा करि हो अबही तें इतो इ पदी नो कसो वितु की ने केसब को
न जु लाज कि लाज नै नूलि गई तो लई हित ही नैं जे टोनही तरी अकलता न रिसा जी न न बोले जु बोलन बी नैं दे मैं न ही कव
जु न रि ग्रामनि आज हीं के से वलैं मतु लीनें १४ अर्थः एकदा समेन इ विषइ राधाजी ने राज्यां ने समयप्रकृजी नो कसो न
कीधे लाज माटे न कीधे ते माटे प्रकृजी नेरी सचढी कहतां लघु मान उपनो ते माटइ प्रकृजी मीज्यो तिवारइं मन मां पणुं इ
षला गौ ते वारी सषी प्रकृजी नइ कही समझावे छइ हे महाराज तम्हे आगलि राधाजी ने सुष दे स्यो जो तुम्हे आज लगारे कंक सो की
धे न हीं ते माटे एव नो ड पदी धे अने केसवराय को इक लाज ना लाज थकी एहली गई जो नो सु हीत ही ण थयो अने हे लाल तम
नेही या मांहि पाली ने मिली नहीं अने मधुर वचन बोली नहीं ते लाज माटे अने महाराज कहीं इ तम सामु मारी पव इ जो थो
नहीं तो आजत मारा मन उमरि किम वालइ १५ अथ राधिका को प्रबन्न मध्यम मान दोहरा॥ बात कहत त्रिय और सों देषि
के सो दास उपजत मध्यम मान तहं मानि नि कुसविलास १५ अर्थः अन्य स्त्री संघाते बात करता देषे तिवारे राधाजी ने मध्यम
मान उपजे ते केसवदास कहे छइ १५ सवैयो॥ कहो कांन्ह कहां सिगरी निसि सिं तासिं सुं तो तुम्हीं कजु चाहत हीं तन में न तु रे षि
लि मीं कि यं केसव कंटक कान न गाहत हीं कतु राती सां आंषि कहा नई नाती तिहारे वियोग के दाहत हीं हियं व चकं राति।

॥ नेरा तितुमा रे आंत में ॥

हीमानमनातेजमा

रचीजबरंचकलाईलईउरनोहतही १६ अर्थः एकदासमेंनेंविषैनायकप्रातसमेनइंविषइंराधाजीनीमांआवि तिः
वारइंराधाजीइंआगनांविषक्रजोइतेंमूलइंलइ तेनामकानइंउत्तरनायकदेताजायेछे कहोकान्हजी आजसघलीराततीग
मी तिवारेंनायकजीकहेंछइंकुंजमांनमारीबाटजोतांवहीगई तोमहाराजाशरीरमांघोसीघोसीनमनीरेमालागीछइं तेकि
हांघकी तेतोवनमांतुमनेंसोधतांकांटेंउजरनाणा हेमहाराजएहबोरानीबोलिआछोकिहांघई तिवारेंनायकआगलिका
हेंछे तमारोजेवियोगतेहनीजेदाझितेलेकरीनमीनेमारेंरातीघई एहवेंवचननेंवाहीनइंरीसउतारी गलामांबांहघालीने
आलिंगनलीधुं १६ अथराधिकाकोप्रकासमध्यममतुसविया॥ जोंउनकोंनूबकाबतिमोहिलोआईबकावनछिगरु
ई अबयाहितेंतोसकुंबातकचूकहिबेकोक्रुतीनकहीमरई कहिकेसव॰आपुनिजघरघरकेंआपुहीलाजनिकोमरई
इकतेंसबातेंहरएहरकैंअबहोंकुकाहाहरितेंहरई १७ अर्थः एकदासमेनइंविषइंनायकानेंसध्यममानउपनोछइं तिवा
रेंसषीसीषामणदेवाआवीछे तेहनइंराधाजीकहेछे हेसषीउजिमनायकनेंदिहाजीबकावेछे तिमआजमुझनेंबकावबा ए
आवीछे पिणकुंकांइएहवीनथीजेबोलुं अनेंहेसषीएकजानीवाततेकांइकहीजाइनही केतलीककुं अनेकेसवक
हेंछे मोतानीजाघकेरसाघलतेउघानीकोजीइतोमोतेंईजलजलाजीइ तेकोणकरे अनेसषीहरितेजेजानेबोलीतेसकुंघा
कीइजवापस्याछे अनेंबलीकुंबोलीनेंघहहरिषीहलविघातुं १७ अथप्रकासरूकोप्रछन्नमध्यममानदोहरा॥ जहांनमांनेमांनिनी
हारेंपीयहिमनाई उपजतमध्यममानतहां प्रीतकेंउरआई १८ अर्थः जिहांललनारमनाबीरूनइंहारेंस्त्रीमानेंनही तिवारइंलल्ला
रमै रनामनमांहिरीसउपजे तिवारइंमध्यममानउपनो तमध्यममानजाणीइं अनेउरनइंविषइं हितनीहालिघाये १८ सवैयासध्यमा
मारसकठ कमल मानप्रछन्न॥ बारबारबरजीमैंसौंरसरसमुषआरसीलैदेषिमुषआरसमइंबोरिहै सोलाकेंनिहोरिलोनिहारिरितिनछेनेककुं
तुहारीहैनिहोरिसबकाकुकहाबोरिहै रूपकोनिहोराजनमांस्योसलीकरीअबकेसोराघकीसोंतोहिलोपेमतुमोरहै नाह ५५
कोनिहोरीकिंनमानहिनिहोरतिहोनेहकेंनिहोरेकुनिमोहीजनिहोरिहैं १९ अर्थः हेसषीमेंतुजनेंवारेंवारीहती हेमारसमु
षीआरीसोलेईनेंमुषजोइरीसनारसमेबोलुं मुषकेहवउंदीसेंछे वलीसोलानेंनोहोरेउं+लगारसाहमुजोयोनही सोषीसषी
॥इंतुजनेंनिहोराकीधातेरूस्त्रीनीकाइंसोटवइं तसघनानि

होरामास्यानही तेतलोकीधे पिणकेसवरायनासमजोतुंसंघाते केसवरायनेंमनतोमोसोछे कहतांनागुंछे वलीनाहकहतांप्र
कतिजेनिहोराकीधापिणतुंनमनानी अनइंकुंपिणनिहोराकरुंछउं तिवारेंफरीनेतुंमुझनइंनिहोराकरवाआवीसजेसषीकहि
स्यप्रकरूजीरीसाणाछइं १९ त्रियाप्रकासमध्यममानसविया॥ मानहीमानतेमाननिकेसवमांनिसतिकहामानटरेगो मानुरहेस
जमानौनहीपरिमानुनषेअतिमानुतरेगो कैहोसहेलीसमानतोबेजबमोतिनमेअपुमानकरेगो आपुमनावतमानिहरीब
कुस्योजमनावनतोहिपरेगो २० अर्थः एकदासमइंनइंविषइंराधाजीनेंसषीछबकोदेछइं हेसषीमानमनावतामांनीयेतिवारूं
इकेसवरायकहेछइं मास्यामाटेकांइतमारुमांनमरीजातुंनथी अनेमानस्योतोमानरहेस्यइं पहरहस्ये अनेमानजेरीसात
जोसुंकस्योतोप्रकूजीतुमारोअतिमानकहितासनमानवधस्ये अनेजोनहीमानोतोप्रभुमनमांरीस्येलरास्येजिवारेतिवारेतम
रूसघलीसोकोमांहिअपमानकरस्यैहेसषीघोतेमनावेछइं मानतहीनहीतोनेंफिरीनइंमनावबापडस्ये २० दोहरा राधाराध
रमनकेंबरनेमांनसमांन तिनकौमानमनाइबो कहिजतुमनोमजान २१ श्रीराधाजीनइंराधारमणजेश्रीकृष्णतेहतुंजेमान
अनेमनतेबर्णवस्युंकहितांवर्णवुं छविते हतुजेमनावबउंतेकहीइंजाहाहोयोतेमांनलो २१ इतिश्रीमन्महाराजकुमारइंद्रजि
तविरचितायांरसिकप्रियायाविषयलनसृंगारमानविरहवर्णनोनामनवमप्रभावः ९ अथमानमोचनदोहरा मांनतजहि
प्रीतमप्रीया कहिकेसवकरिप्रीति बरनतसषजनातउनकुसबमेंजनकीपरिरीति १ जिहांस्त्रीलल्नारजिहोप्रकारेंमानमुकेअ
नेंपरस्परेंप्रीतिबाधेतेहनीजेरीतितेकेसवदासकहेछइं जेहवीमेंसांभलीछइं तेहवीवर्णवघीसलगावउंतेमांनलो २ सामदा
मसनिदेदिपुनि प्रनतिउपेक्षामानि प्रसंगविध्वंसमानि ईनहोईरसहानि २ अर्थः तेउप्रकारनीछइं तेकहीइंछे उप्रकार
तेकेहा एकतोसामदामरनेदउप्रणतिपांचमोउपेक्षाषठोप्रसंगविध्वंस अनेमानमोदनउपायछइं तिलेरसनीहालिघा
य २ अथसामलछनदोहरा ज्योकेंत्योंकुंमतुमोहीये छूटेजाइजियमानु सोइसामउपायकवि केसोदासवषानु ३ जिमतिमसमु
हारकीधइंमनमांहिसोहघामीनेंमानछूटीजायि तेहनइंसामउपायकहीइं केसवदासकहेछइं ३ स्वामिनोपकोमासलछनस
विया केसवदाससदाकिपैआसरहैरूपकीकुमतहिनदीजैं ताकुंसोरोसनमानीयेमाननिलाजिकुंआपुनेमांनिकलीजै होंतुम
हातुंमहोसनिसंदरिमूरतिछिजियएकहीजीजे मानुहैंनेहकोमूलमहाअपनेसकुमोंसपानंकुनकोजे ४ अर्थः एकदासमें

MEMORIAL

नैंविषइं श्रीराधाजीनैंमानकुमतुंछे तेसषीसामत्रपायकरीनैंमनावेंछे हैसषीकेसवरायजीसदाईताहरासुषनीआसजक
रेछे नेहनेंरीसेकरीनेंदुषदीजेंनहीं अनेंहेमाननितेसंघातेंरोसमानीमेंनही एकिहांइल्लेतोआपणसांतीलीजें अनेंकहींइश्र
क्रजीकुंतेंत्र अनेंतमेतकुं अनेंश्रक्रजीआपणवेएकजीवेजीवीयेंछइं अनेंमानछेतेजूआपघातुमूलछे तेथोतानावात्हासाषे।
कोइकरें ४ प्रियसामससवैया॥ कहिआवतिहैंजोकहावतहोंतुमनांहितोंताकिसकेंदुससोंही तिहिपिमेंकहाचलीयेंकवकुं
जिहिकांटोलगेंपगपीरदुवोंही प्रीतिकुंसेंमेंकिजिहेंजईसमहोनितुल्लेअगुरीससकोंही कीजेकछुयहजानिकेंरकेसवहोत्र
महाभ्रमतोहरिहोंही ५ अर्थः एकदासमेनइंविषइंश्रक्रजीनइंमानउपनतुंछे तेराधाजीयोतेंसामत्रपायकरीनइंमनावु
इंछइं हेश्रक्रजीकहिवाइजाइछइं अनेंतमेंकहिवरावोछोतोकहोहुंछइं तोनहीतोसघलुसहीरहुंछत्र अनइंहेमहाराजते
तोंवाटेंकिमचालीइं जिणिवाटइंकांटोलागोअनइंपीसघायअनइंदुषाये अनइंप्रीतिनइंकाइंासनीकहताकसीअनइंआ।
लगाकिहांजईएतिवारेंतोआगलिवाधणुघईयइं अनेंकेसवरायाजकांइकीजें एहवउंजाणीनइंकीजइंजेकुंतमेअनेंतमे
नेइंकुं ५ अथदासलछनदोहरा॥ केसवकौनहुंमानकछूदेखोमावइंमानु वचनरसनमोहिमनहि तासोंकहिजुदानु
६ अर्थः केसवदासकहेंछइं कोइकामेंकछूकहतांकोईआपानइंमाननइंमुकावइंतेहनइंदासमत्रपायकहेंछइं दु जहांलोत
नेंदाननि बांझिमाननिसान बारवछकेंलछणहें माचतिहीश्रमान ७ जेस्त्रीलोनेंकरीअनइंदुस्हइंकरीमानमुकेतेहनइंबा
रवधुकहतांगणिकानालछणकहीइं ७ राधिकाप्रकोदानलछनसवैया॥ कोमलअमलदलदीनेहैंकमललवुअरुनग्र
एकोसुषदाईयों केसोदाससोताधरसधरसुषकेधरमधरअधरउममानोइनपाइयों उरजमलयाद्रोलसीलेससुमा।
निदेषिअलकवलितमालउरअेसोंआईयों निकटनिगांधयहहारवंश्रक्रजीवकोसुवाहतुसुगंध्रलयोंनेंग्रीवालाईयों ८
अर्थः एकदासमेंनइंविषइंनायकामानकरीवेठाछइं तिहांश्रक्रजीयेबपोरीयानांफूलनीमालागुथीनेंसषीसाथेंमोकलीते
सषीआवीनइंराधाजीनइंकहेंछे हेसषीअमलकहतांनिर्मलकमललवजेलगवांननितिलेंदेइमोकलीछइं अरुणकहतांरातीरा
तापूलनीतेश्रक्रजीनइंसुषआपेछइंएहवीछइं केसोदासकहेंछइं अनेकसोनानइंधरइछइं सधरकहतांसुरसोघाटसुषाधरकहतां
सीतांएहवांजेतमाराअधरतेहनीउपमातेतोइणेपामीछइं अनेंतमारांउरजेस्तनतेरूपीयोमलयाचलपर्वततेहनोजेसुगंध

नेहनेंजिमसर्पवींटाणछें तिमताहराअलकस्तननेंविषेएहवीमोनाधरेछे आजवपोरीयानीमालामालाछे नेघणुंफूटरीकोमल
यातीलालछइं नेपिणमांहिलुंगारेसुगंधनषीनेएमजाणइंछइंराधाजीनास्तनउपरिरहुंसुगंधयुक्तथाउं तेतलामाटइंलगारेककी
टनामेनोकोटमांघालीइं ८ प्रुवनदूतउपायसवैयो॥ मत्तगयंदनिसाघमदाइहिथावरजंगमजंतुविहासों नादिनतेंकहिकेसवा।
विधुनवंधनकेंवकुंभविधिमासोंसोअपराधसुधारणकारणसोधियहेदुहिसाकविचासों मावनपुंजतिहारेहियेंअबचाह
तुहैंयहहारविहासों ८ अर्थः एकदासमेंनइंविषइंसषीराधाजीप्रतेंनइंजातिकहसिनामाषाषीमुक्ताफलनीमालालावीछइं
तेकसेमोकलीछइं तेसषीराधाजीनेइमकहेंछइं हेसषीआहारछइंतेअपराधीछइं महेन्मत्तहसीसिघातेंइरहतांतिवारेघावा।
रकहतांवृद्धाइकजंगमकहतांचालतांजीवछातारोजइस्यादिकनेंमारतोतेसाथेंघकांएमुक्ताफलपिणपांपिलराण धर्मसास्त्रेक
स्कुछे पापीसघातेंरहितोआपणपापेलगाइये तेमाटेंएमोतीनेंतेदिहासाथकी केसवदासकहेंछे विधिजेवृद्धानिलोंदिहाना
नीहियामांहिंसारतीमुकीछइं तिवारेदोरनेंबांधेतेअपराधजाणीनइंएकसाधनेइलोंविचासुछे महाएकएहवउंताहरूं ही
युतिहांएहारलगारेकरहिवाहीनइंछइंइसकहीनइंकोटिमेंघाल्यो ८ अथश्रीश्रक्रकुकोदानसवैया॥ हसतिहसतिआईआयिए
कगाघागाईकहहुकहाईयाको, लातसमुजायकेंपीवेकैसोंअधरमधुदंपतिएकहिंबारदेदनकरजथलदीजेंहिवताइकें यह
परिरंभतुकहाविकेंतुकेसोराइमेरीसोंजामेंमोंतुमरावोहोतुराइकें राधिकाकीअधिकाईकहाकहोंतीनोआजआपनोपिया
रोपियआपहीमनाइकें १० अर्थः एकदासमेंनइंविषइंश्रक्रजीमांनमांवेठाछइं तिहांराधाजीआव्यांनेहसतारआव्याआवीनें
एकगाथागाईकांन्हजीएगाथानोअर्थअमनेंलावेंकहीसंभलावोदंपतीजेस्त्रीभरतारनइंएकेवारेंवेजणाअधरामृतिकिसमा।
मीइंअनेंरदनजेदांतकरजजेनषतेहनाजेघलकहतांस्थानकतेअमनेंवतावीआपोअनइंहेकेसवरायएकोणपरिरंभक
हिवायकहितोएकिमतेंआमनकहोहुंमाहारासमजोमुजघकीकाइवातुरायोतोतेसषीसषीआगलिकहेंछइंराधाजीनीचतुरा।
उराईजोनहीयोतानोप्यारोकहतांवा.ल्होतेआफणीइंमकरीमनावीलीधो १० अथदलछनदोहरा॥ सुषदेकेसवसषिनकुंआ।
पुनश्रीइंअपनाइ तबसुषउपावेनमांनकोवरन्योनेंदवनाई ११ अर्थः केसवदासकहेंछइं सषीनेंसुषदेईनइंपोतानीकरइंपा।
॥छेनेंसेवीमनावेतेनेदकहीइं ११ अथराधिकाप्रकोनेदसवैया॥ केसवधायिपवासिनितोहिहेसषीसकुंचे

॥है॥ ॥कहांण॥ ॥केनापिकमीत॥ ॥नमनीनथी॥

॥उपायकरीनें॥ सब आपु निघाते मोहि तु माई कहै हों बनें अब बांधि दई बिधि तो कहनाते नै कहरे हरे बोलि बलाइ ल्यों हौं दरमो गाढि अजाहि न जा ॥कहबीजब नई॥
नैं मांषन सों मेरे मोहनाकों मतु का वसीनेरी केंवेंठीएं बातें १२ अर्थः एकदासमें नंदविषई वनमांवेठा तिवारे सषी आवीनइ कह
हे वे हे राधका जी थ्रव तिनमारी जेवें वाजीतमारी षवासणि छे जीजातारी सषी वे ते सगलीतमारी भांतषकी वी हें तेमाटे कांइ बोले
नही अनें माहरे तो कस्याधावेनवालें ताहरे बापें मुरुने ताहरी बांह आपी वें तेमाटें माहरे कस्याधावेनचालइ उनताहरी बलाइ
ल्यु लगारेक मुंहें बोलइ मुषषकी जबी जबे माहरा मोहन जी तुं मनमांषणसरषु कोमलवइ अनें ताहरी वातो लाकमास
रमी कठिणने रषे मांहिं मुची जाए १२ अथरु स्मकोनेदउमायकषनसविया॥ कौनकस्योह रिरूठि रहे तबतें बजुबुधि बितर्कौ ॥तिवारथी॥
बढावें सो खिसवें अपनो सोरहो धन मीनरहें सु उपायन मावें उहांयह रीतिहु हांयह केसव ज्यों तुम जोरजोर क्योंजरावें ॥जीवबिनर फना॥
॥हे॥ सूब निहौं पियप्यारी तुस्यारी सु मातु करे किमनावन आवें १३ अर्थः एकदासमइं नइं विषइं पाषु षजी नेमानउपनुं वछइ
+जी+ ते राधका जीइं सरूजी सषी हती तेपोतानी सषी हती ते पोतानी कीधी करीनइं सरूजी पासे मोकली सरूजी नें कहे छइ हे महारा
जश्ग्रा राधका जी नइं कोणेक आवीनइं कस्यु जे सरूजी री सावी रस्या छइ तिवारइं मनने विषइं आनक बुधि विचार करइ छइ
अनइं जे कांइ पोतानइं उकलें तिहवु विचारी जोयु पिण पोतानामानरूपी योधनरहें अनें मित्रमिणमानें ते उपाय लाधतो
नथी अनें हे केसवराय मरें तो ते रीतव्वें अनें आं हि तो आरीतछइ कहे महाराजबातसामग्री कि मषई आवे अनें तु मने तु
छते छते नमारी प्यारी कठिवाली एहवी जी राधका जी ने पोतें मानकरइ छइ तमनइं मनावा आवें तिवारें सरूजीइं कस्युं आ
वीएत तें अमे तो मनाणा १३ प्रणतिज्वनंदोहरा॥ अति अहितनें अतिकातरतं आइति अपराधकोजानि पाइपरप्रीतम
प्रीयातिकों प्रणत बषानि १४ अर्थः अतिहीतें करीनें अथवा कामनइंवसें करीनें अथवा अपराधनी बीहकें करी बोलें नायकना
यकाने पगें लागें अथवा नायका नायकने पगे लागें तेहनें प्रणतकहीइ १४ राधिकाकी प्रणतिजबनंसवैया॥ हितनें बितयो ज
॥प्रेमकरवा॥ नस्कधेतक जो कपैमैं कैकें पियपाउगस्योहै मोहि बिलोकि बिलोकि अलीन अलीकअलीक सबा हवस्योहै सूबतिहौं सषी मासूं ॥नंदाकलंक॥
दजैतिनओर समुझे हियहेतु रस्योहें कौनहि आएमनावन तोसों मेमांनु किधों अपमानु कस्यो हें १५ अर्थः एकदासमेंनइं विषइं ४७
राधका जी वनमां बेठा छइ ते सषी आवी ने राधका जीने कहें छे जे तुमनें सरूजीइं अनेकवातां कीध अनेकप्रातें करीपगेलागा नोहोते

॥बकावीनें॥

हीया मांहि हे न जाणीनें सरूजी साह मु जो यो नहीं अनें मुरुनें जो तां जो तां सरूजी ताहरा मुषसाहमुं जोई रहें छे अनें बीजी सषी यो जो
इ जो इ नें ताहरी निंदा करइ हे हनो प्रबाह वहें छइ अनइं सषी उत्तु उने सूब तुं ताहरें पगइ माथु मेल्युं तो ईहजी कांइ मानु रस्यु छइ
कांइ जी पोतें तुमने मनावा आव्या छइ ते हनुं स्युं अपमान करवउं बोल्युं छे १५ राधिकाकोप्रणतिअपराधकतिकामानसविया॥
॥नथीबोलती॥ नैं बोलतिआयुबोलाइ त्रिउ बोलिकहां लगि मोहि बकावै हौंमारन सौं पस्योमाइसमुझि सषीसब देतहैं ज्यों फबतानि हिकार
॥पोतानामेलें॥ नहेतुबालि किकंकउर गाइलगाउ कहां लगि त्रिटि अकारनि हारन कौन तेंएतो हंहं दिनएदिनतुं ही लगीकवुअलरमारन
१६ अर्थः एकदासमइं नइं विषइं राधका जी मानमांबेठाछे सरूजी पोतें मनावइ छइ तोहे बोलतीनथी तिवारें सषी राधकाजीनें
कहें छे हे राधका जी आपो आप मनावा आव्या छइ अनें तोहे तुं बोलतीनथी ते बोलें मुरुनें किहां एक लगें बकावी मारी सकुं के
नलीकवार कउ अनें जे कांइ करवउं घटे ते तो सरूजीइं कीधुं पगेपणि लागा हे सषी तु हीया मांहिं विचारज्यो अनें हे सषी
बीजी युवति जे सषी ते जेहनइं मलवानें काजें सेंकडा नां आमइ छइ तें संघातें तुं हठ बांसी कठी हे या मांहिं घाली मेल्यो अति
मानकरीनइं आकाश सामुं सुं जोइ छइ डि अनेदि हामाल्यो वनरूप स कुपने कुइंछइ पिण आ अवली रीति तुं हि जपान बाल
गीदीसइ छइ १६ अपराधका प्रकोप्रणतिअमराधिसविया॥ केसवदासी उदासी रहई दरसाई द मा उ मुझ्यौं सुनतस्योरीरा ॥दीवस॥
॥विनय॥ तिरई अधिराति कउं जौं वितु बउ बंधबंध निकस्योरी धाइ रहीसमुझायक बुनसषी निकुंक हि सिषत्ये तो सुस्योरी का
हैतें मास्योवमानतितोलगुजोलगु पाईनपीयपस्योरी १७ अर्थः एकदासमेंनइं विषइं नायका मानकरी बेठा छइ तिवारें ना
यक मनावबा आव्या छइ तमानतानथी हे सरूजी आषो दिहाडो घणु दिलगीर थया उदास थया आषोदिहाडो इमषणुंउमनीद
ग्रामाम्या रातिपनी अनें केविनोद करतां अधली रातिगई अनें बंधवजे मित्र ते हनी स्त्री पोतेली इ अनेकनहोराकी धसषी
नी सिषामणे कांइ सरे नहीं केहने कहे मान नी थि मान्युं नहीं तिहां लगें जिहां लगें पीउ कजी पगें लागा तिवारइं मान्यु १७ दोह
रा॥ प्रियहि मनावें पायपरि प्रियापर सहितमांनि ताअपराधनकों मतें बरनन हीरसहानि १८ अर्थः पीउ करी सावे बे सें
अनें प्रीया जे स्त्री ते पगें लागी मनावें एकामनेमाबें अपराध अनें वर्णव णारनारसनी हानि थाय १८ अथ कस्मकोप्रणति

\\ पाणीनेंनो \\ नेहनें \\

सवैया॥ नीरहितें बिनु मीन मरे बहु मीन कें नीर हि कें जीय जीजे जाबिनु ओरु कहा इनकें सब ताहि कहा इन तें सब की की।
जें पालगें सोय गलागत हैं कल गीय गअकलगाई नलीजें हो सिम वें अपनें सपनें कुं तो आवन लछि किवार नदीजें १८ अर्थ
एक दास मैं नइ विषइ प्रभूजी मान धरीन इ बेठा बइ नायका मनाबइ बइ तोही प्रभूजी मान नतानमी तिवारें सखी प्रभूजी
नें कहे छे हे महाराज नीरजे पाणी अनें मीन जे मछ पाणी नें माछला पछें वालें काइ माछला नें पाणी पछें बीजें काइ गमें नहीं
तिवारइं तेह नें गमें तिम जकीजें प्रभूजी एमा हरें पगे लागीजें नमारे पगे लागुं छुं हे महाराजा माहरे पगे लागी ते तमारे पगे
लागीजाणो ते मारें एह नें त्रगी बाहें फ़ाली नें मनावो घर मां ते मील्यो कुं नम नें बलीयो तानामारें कडुं बत जागतां अथवा कह
हणा मान छमी घर में आवें तिवारें कोइ कमा नद्यो १९ अथ त्रपेझा लबनें दोहरा॥ मान मुचावत बात नजि कहि तें उरप्रसंग
छुटि जाइ जि हां मान सों कहत त्रपेझा अग २० मानमुकावानी वात जीनें कोई कबी जाइ संग नीवात करी दे थानीइ ते सांत लता
मान छुटी जायें तेह नें त्रपेझा कहीइ २० अथ राधिका कीत्रपेझा सवैया॥ चपलान चमकति चमक हथार तिकी बोलन न
मोर ब दी सयन समाज कें जहां तहां गाजत नवाजत दमामें देह देतन दिखाई दिन मनि लीनें जान कें चलि चलिचंद मुखी मा
वरे सखायें बेगि रो बत्यजि कें सो दास अविस्कर बसाज कें चढि चढि पवन तुरंगनि गगन घन आहत फिरत चंद सें धान मराज कें
२१ अर्थः एक दास में नइ विषइ राधाजी मान करी बेठा बइ तिवारें सखी आवीन इ कहें छइ हे राधाजी आज तुं जाणइं बइ जो
आ चमकें छे बीजली तो हे एसियाई नाह मीयार सज कस्या छे ते चमकें छें आ बोलइ छें ते मोर मजाणी सएक बास में नाबंदीबान
कहता बंदीजन छें अनें आ गाजता गाजे छे ते काइ गर्जना नहीं एमोटा ददामां वाजें छें अनें दिन मणी जे सूर्य तिथि लपाणो मा
तेन थी किहांला जीन इ लघ्यो छे हे चन्द्र मुखी त्रनावली रताहरी स्यामजीनी सखी बइ तिहां केम वदास कहि कहें बइ मनतो सो
कतुं कीनें हर्ष करीनें प्रभूजी मा सइं आवी बेरान हीं तो तनमनें अंधकार तेह नो राजा जे राहू तेह ना राजा जत्रे बरावत मबा
नरूपी ये पोसें चढीनें गगन जे आकास तेह नें विषे चन्द्रमानें सोधता हों नें बइ अनें तुं छे चंद्रवदनी जोतुं हमां पमी सतो तो
नें झाली जासे एह वत्रे मां तजीनें राधाजी मानमुकीन इ प्रभूजी पासें आवीनें बेठी २१ अथ कृष्णकोत्रपेझा सवैया॥ के सोदा

जाप \\ \\ बीमाणाथाय \\ \\ मेतो \\

\\ मालती \\ सदिन राति केतकी की आवें तांति जियमें बसति जाति निनें न निमें न लीनी माधुबी कों पीयें मधु मधुरतन अंधक कुं सेवती सेव
तका कुं सेइ गंधफलीनी औरें हों कहत बात काकूका हें कौं लजान एसो तो बिस्याय सकहोय मनमलीनी देखुं कुं छे प्राणपते \\ जोइनें \\
निलज अलिकी मालती सों मिल्यो चाहें लीनें साथिचलिनी २२ अर्थः एक दास मैं नइ विषइ प्रभूजी मान करी बेठा बइ ति
हां चतुर सही आवीन इ अन्यो कबात करीन इ कुं मनइ संस्कावइ बइ हे केसव राय रातिदिहा केतकीनी सांतिलावें बइ।
अनें जीवमां जाइ बसी रही बइ अनें आ ध्योमा हि कमल नी वसें बइ अनें माधव जी जे वसंत वहत्री तेहनो रसपीधे बइ ति।
लें अधबइ वस्के बइ काइ सकतो नथी सेवत्रीनइ वत्री सेवजायें छइ अनें गंधफलिनी एलची तेह नइ सेवबा जाइ बइ एह
वत्रे कस्के तिवारें प्रभूजी मन मां जाथाथावा मास्या तिवारें राधाजी इ कह्के हे महाराज कृतो बीजी बात कडुं तमे स्यामाटें लं
जात छो एमतो रीसच ठावें जेमन नामिला कुं इ हे प्राणपति तमे देखतान थी आनीलजे नसरानींगति मालतीन इ मलवाहीन इ
छे अनें अलिनी जे नमरी ते पिणसाथइ लीधी बइ २२ अथ प्रसंगविध्वंस दोहरा॥ उपजि परे न यचित जस रूलि जाइ जिहि
मानु सो प्रसंग विध्वंस कब के सवदास बषांन २३ जे बात सां न लइ थके मन मांहि नयतीत थायकं बाहें अनें चित्त नें वि
षे लमथाय अनें मान होये ते वीसरी जाय तेह नें केसवदास कहें बइ प्रसंग विध्वंसक हीइ २३ प्रियप्रसंग विध्वंस सवैया
के कान के सब काम के कि कर बोलत मोल न देत दुहाई कामनि माइ हि कामनि कों उरमाइ गीताक हछै हें रसाई गाजति
नांहित में घघटा यह आजतिमें तिसखी कमदाई लोक नए फिरी की बो अबी जो ही बो जो अबें बलि बोलि कहाई २४ अर्थः
एक दास में नइ विषइ राधाजी मान करी बेठा बइ तिवारें सखी आवीन इ कहें छे हे राधाजी आ केकी जे मोर टहुका करे बइ
ते मोर मजाण स्यो एकाम नाकिंकर बइ कहे मे बकबइ ते दुहाइ देता फिरे छें कं साइ यामन ताहां में छे कहें बइ स्त्री राति न इ
+पिण+ विषें नर्तीर स्फुरी सक रिस्से ते स्त्री त्रमरिका मराजा थी सकर सें तुं जाणे बइ जे आमे घनी घटा गाजे बइ पिण एइ आदनी मोसी
वाजें बइ अनें कहें छें जे हे लुथाय तिवारें अबोला ले स्यो पिण हवणां कां कूजीते नइ बइ तिहां आवीन इ बोलो एत लें राधाजी
इ मानमुंक्यु २४ प्रकृकोप्रसंगविध्वंससवैया॥ कोकनिकी कारकाक हति भूकसारिका मोहु रिहु विहित बितु बोंगुमोच

+रु+

गयो है स्फ किरही सकुचनि बाघुरी सुकी तो कहि काक सो सकें न देख उ मनि हरायो है उविवजो आतकी जै अवकें सनाइयो।
जैनी कै हाँ मे के मोराइ कल कुब टायो है मानतु न एतें मर उलटी मनावें बहु अैसोई सयानु मास सुकहि पठायो है २५ अर्थः
एकदास में नें विषइ श्रलजी मान करी बेवाबे तिवारइ सषी कहें बे कौ कनि को कंचक बाकु अनें कारिका जैचक बाकी नें मारि
काजे का बरि ते हतें सहें बइ हे सषी आज एक पोपट पोपटी नइ विठवां लागी बे तो पोपटी हू कहीं जाए एतलें पोपट हू रिस्क रे
तिम तिम तेली नाहियासां छिहि तवो गणु वाघइ बइ वली स्फ काजा पोपटी ने बापनी संकुची रही बइ कबल जाइ रहे बइ तनो
पटें नें केटलु कही कहो बाकी अने कोई आगलि कहीसकें नहीं देह जे हू षेवली रही बइ कठो आपणा आयकी जइ हवइ एह
नें मनावी आमी यें ते बात सषी श्रलजी आगलि कहे बइ हे महाराज लगारेक मारे एतलो कलेश मांसी बेगा छोइ एतलइ उप्र
ग़ंत मो तइ मनाः तो नमी उली वली बापनी फेरा तनइ मनावइ बे हे महाराज एहवो मान होपोपट स्फंत में पढा मो बइ एत उ।
कस्फं एतलें हसी नें मान मुकं बें ३ हा देशकाल बुद्धि वचन तें कल धुनि को मल गान सो ता स्फल सो गंध तें स्फ महीवट ता।
समान २६ देशकाल बुद्धि नाव वचन मनोहर नाद स्फ कुंवी तु ग्यान मारी सो जो इनइ मारी स्फ गंध देषीनें स्फ बेआफरवेंउमा
नवु टिजायें २६ सवैया॥ घननि की घोर स्फनि मोरनि के सोर स्फ निपिक सुकके सव आला पु आली जन को हामि नी दम
के दिमि दीपक दीपति दिंमि दे मिसुलसेज देषि सद तु स्फमन कौं कुकुम की बासु घनसार की स्फबास रयो फूलन की बास
मतु फूलि कैं मिलन कौं हसि हसि बोलि दोऊ अनि ही मनाए मानु छूटि गो एक हि बार राधिका रमन कौं २७ अर्थः एकदास में न इ
विषइ राधा कृस्न ने मान कर्यु बइ ते समे नइ विषइ मेघ गाज वो मांडी तिवारइ मोर इइ टउ का करवा मांडया दीवानी जोतिपि
णदीपवा मांडी वली स्फ दर सिज्या सषीयें समारी मु की हती ते दीठी एक फूल नुं घर बनाव्यु हतुं ते दीठउं अनेक फूलना स्फ।
गंध आव्या तिवारइ घनसार जे कपूर ते हनो स्फगंध आव्यो एहवइ समइ बेहू नो मन मलवा नइ काजे फूल्यू कहतां रलीया
त थयुं हसी नें हसी नइ बेजणां बोल्या एक समें राधा कृस्न नुं मान विना मनाये छूटी गयो २७ दोहरा इहि विधि मानु छूटाव ४९
ही और पुनमें न विनारि मृदु पद तु प्रीति बढावही केसवदास विचारि २८ अर्थः केसवदास कहे बे ए लो प्रकारइ करीनइ जे
॥रपस्फरइ मानमुकावइ अनें घणी रप्रीति वधारइ २८

+र+

श्री यान श्रीतसों करें अति हतुं केसवदास बड सो हाय न आवही जो छिं जाइ उदास २९ अर्थः श्रीया जे स्त्रीने कांइ नर्तारि सं
सो हरव करें नहीं ते स्पा मारइ जो नर्तार रीसकरीने पाछो फिरी जाये तो फिरी ने हाथ न आवे २९ दू० वार हि वार न कीजइ
बारेक कीजै मानु कहे केसव यों आपु में सुदा बढै स नमानु ३० अर्थः केसवदास कहे बे वारे २ मान की जइ नहीं एक आधी
वार थोड़ क कीजइ तो परस्पर स्त्री नर्तार नें प्रीति बाधे ३० दू० प्रीति विना तैं होयन हि तैं बिनु हो यन प्रीति प्रीति रहो जिहि तें
रहे यहे मान की रीति ३१ तयम षे प्रीति नहीं प्रीति मषें कांइ लो नहीं जिहां प्रीति रहे तिहां श्लोक रहे श्लोकहोइ तो प्रीति रहे
एह वी मान नी रीति बे ३१ दू० गर्व असन धन स्पागतें निठुर वचन प्रवास जालि चिविवि प्रिय कुरन त्रिय प्रियतें होइ उदास
३२ अर्थः एतले बाने पुरुष नुं मान स्त्री घडुंजा जे ते कहा छइ बे गर्व कहेव अहंकार असन कहेव कंमो असन स्फाग कहेव तिरस्क
रनि ठूर वचन कहेव मां वउ वचन जाल चि जा जी करइ तिहां पकी नर्तारनुं मन उदास थाय ३२ दू० मान विरह वरण्यो विवि
धि जिहां विधि बिधि बुद्धि बास केसव करुणा कहे कछू कहें जनु विरहु प्रवास ३३ अर्थः केसवदास कहे बे मान नो विर
ह वर्णवी नें सगलो इ कस्यो जेह ने अनेक बुद्धि नो निवास बइ हवें करुणा रस अनें प्रवास ने कहुं ते सांगलो ३३ इति श्री
मन्महाराज कुमार इन्द्रजित विरचितायां रसिकप्रियायां विप्रलंभ सिंगारे मान मोचन वर्णनो नाम दशम प्रभावः॥१०॥ अथक
रुणा दोहरा॥ छूटि जाति केसव जहां स्फषके सबै उपाय करुणा रस उपजत तहां आपुन तें अकुलाय १ अर्थः करुणा
विरह राधा कौ कि सवदास कहे बे स्फष नो उपाय जिहां सगलो इ छूटी जाय तिहां करुणा रस उपजइ तहां आपने पोतानी
मेले मन नामन में अकुलाइ १ करुणा विरह दोहरा स्फष में दुष को वरनीयें औ वरन ओहार तद पि प्रसंग हि पाइ कछू ब
रनति मति अनुसारि २ अर्थः केसवदास कहे बइ स्फष में दुषकांइ वर्णवी इ नहीं मिलतो ही प्रसंग आ मा माटई माहरी म
ति सारु वर्णवी स २ अथ राधिका को प्रच्छन्न करुणा विरह सवैया॥ सेमवई पतिक्षें न सषी स्फरहो मिलि कैं मिलि बेकउ
आनें जाइ मिले दिन हो इगि ड नी दयाल सो दे हद सानब मानें श्रेरत पेज की ये न तु प्रान निये गकि ओर प्रयोग नि दानें जा।
+ल+ जतें बोनपांउन केसव ऐसें हो कौ उकहाउ पुजानें ३ अर्थः एकदास में नइ विषइ श्रलजी विरहमां बेगा उचा ट करे बइ।

मे माह रिम तिघ कृष्णजीनें तेमद वामो कली तेम कृष्णजीनें तिहां जरही तेम लवानें आंही कुं णते मी आवे अने नेत्र रूपिणी जेहु।
नी ते तो दिहा मी जई नई मिलें छई पिणदयाल आगलि अमारी देह दशा काइ कहीनदेषाने हवे शरीर जेने प्राणनें तिहां मोक
लवा ही में छई तेके हनी पछई जिम योगी स्वर मचन साधना ई करी नई पोताना जीव तिम नाकू एवंग वेंछई तिम जाजकरी नई
कुं काइ बोली सकती न थी अनें विणबोल्येकुं णजाणे जेए हमा हा यामा संकटमां छई ३ राधिकाको प्रकाश करुना विरह सवैया॥
हरितहरित हार हेरत हीए हरत हारा हो हरिणनयनी हरि नकहुं लहों बनमाली ब्रजपर बरसत बनमाली दूरि दुष केसव
केसें सकुं हृदयकमलनें नदेषकुं के कमलनैंन हो तेंगी कमलनि नओर कुं कहांकहों आपघने घन स्याम घनहां सिंहो तघन
स्याम निके प्रेमसघन स्याम बिनु क्यों रहों ४ अर्थः एकदा समेनें बिषईं राधजी नई करुणा विरह उपनो छे ते विचार करई छे
हरित रंकह नीलीरल्क हजो इनईं हीये हरा न घाई छई अने हे सषी मृगनेनीकुं हारीरकुं बउ मनमां पिण हरिनें किहां
पामुं नहीं अनें सषीमा लीक ० रूर्यन किराईदीसतो न थी एह बोदीवसषयो नई अनें ब्रजगोकलते उपरि बनमाली।
जेम घनें बरसे छे अनें बनमाली जेकृष्णजी ते दूर कं ० वेगला केसवए ड षकुं किम सकुं महाराज हृदे रूपी योजे कमलने
हनाजल रूपीया कमलनें जोई नई कर मांतुं जाए छे अनें महाराजनें त्र ते कमल जे पाणी तराई आवई छई कुं के आगल
कहुं घनजे मेघते मो तें स्याम छे बली घनो रस्याम रूपकरी देषाडे छे तिलीं करीनईं घनकं ० जाकु स्यामकहितां अंधकार।
घइरह्यू छई एह वा घनस्यामनां कं ० घणा अंधकार मां घनस्याम जे कृष्ण ते विना किमरकुं ४ अथ करुणको प्रछन्न करुणा।
विरह सवैया॥ जैसें मिल्यो प्रथम श्रवनमग जाइ मनु रवन नरवन कीये अलि कअलकमें मनु मिल्यौं मिलें नैंनके सोदास
सविलास छबि आस कलि रहे कपोल फलकमें नैंन मिलैं मिल्यो ग्यान सकल सयान सजि तजि अलि मानन ल्यो तन कीज
लकमें तैसें छलबलराधाके मिलनकुं चाहत कौये मया सतप्रानकुं पलकमें ५ अर्थः एकदा समेंनई बिषई नायकनई क
रुणा विरह उपनो छे तेवेग विचार करईं छई जिम पहिलु प्रथम मन जे हुतें श्रवण मार्गे मल्युते तो मनराधाजी नो जे अलक
केशपास तेहनें विषें रवनकं ० कंदर लवनजि घरते करीनई तिहां जरकुं कहतां अलक जिकपाल तहनई विषई रह्याएह
॥ जाकसमा सातह नई विषई रह्या छई मनमल्यं जाली नई नेत्र पणि जितें न मिल्या तविला साजक ५०

टा छतें द तेहनें पणि लाधी गयां छबि जे कांति तेमपणि मा बेंध की गई आसा ते पणि तिहां गई एमें सघये कपोलनी फलक जे शोभा।
तेहमांहिं लीरह्यां नेत्र नें मज्या ना लीनई ज्ञान पणि जइ मिल्यां ते सकल सयानकं ० मेंषीचतुराई बिलसां छें गई तेम घला
अलिमान तजीनें तन जेशरीर ते हनी जे फलक मोता ते हमां लीरह्या तिम जछलें करी राधाजीनें मिलवानई काज प्राण जजी
वते पाणीव लत मां प्रयान करवा हीं सई छई ५ कुसकको प्रकास करुणा बिरह सवैया॥ तिन रुणाई तरंग निपूर अघूर बपूरब।
रागरंगे पय के सब दास जिहां जमनो रथ संत्रम बिभ्रम नूरि रजायलय तर्क तरंगत रंगित तुंग तिमें गिलमूल बिसाल निकेचय
काककबूक रुणामय है सखितो हि कीयें करुणा बरुणालय ६ अर्थः एकदा समें नई बिषई श्रीकृष्ण नई प्रकास करुणा वि
रह उपनो छई विचार करई छई तरुणाई जे जोबन ते रूपिणी एक तरंगणी कं ० नदी छई तेह नई बिषई रागरंग रूपीया भि
जलातपूर्वे वहे छई अनें के सब रायक हें छई मनोरथ रूपी उबाहल मांहिं फिरे छई संभ्रम विभ्रम जे मनना विचार ते रूपीया
मांहिं तयला गे छई अनें तर्कजि वितर्क रूपीया मांहिं तरंग छई तुंगकं ० उचा तो जे समूह ते रूपीया विशालकं ० मोटा पहु का।
तिमिंगलकं ० मगर तेह ना वयकं ० टोला छई अनें ते सषी राधाजीनें कहई छे एहवी जे नदी छई ते करुणामय जकाने के
पीयो वरुणालय जे समुद्र तेह नई उजलती करे छई ६ अथ प्रवास लक्षण कुं ० केसवको नकुं काज ते पिकमर स्यें हि।
जाय ताको कहत प्रवास सब कवि कोविद समुझाय ७ अर्थः केसवदास कहे छई पीऊ जे भरतार ते कोइ कामिमर दे कोंजा
इ तेह नई कोविदकं ० पंडित एहवा जे कविराय तेह नई प्रवास विरह कहें छई ७ अथ राधिकाको प्रवास बिरह सवैया
तुं कहि हे कहि कोषें कव गो नहि नंदकुमार तो गें तु का पोई मों हु महा मकतो उर कीनें रहें लटिलें जिन के मेलि गोई एसी
न बुझीए केसव तो हि विचार्यो जो बिव बिचारि बियोई ते रे हि जीये जीये जिनकों जीयरे जाय ना बिनु जो बो जीयोई ८
अर्थः एकदा समें नई बिषई श्रीकृष्णजी मथुरा ई गया छई तेह नो विरह राधाजी नई विरह उपनो छई ते कोना नाजी वने
कहे छे हेजी वतुं कहीयें गमन करीस जो तें नंदकुमार ई तो गमन कीधुं मुझनें तो ताहरी मोटी बीक हती जे कांई घ्रस्तवा।
लतें एम पनीनहीं रहे तो पिण कांईनो नें जाजदीसती न थी तेजीवा नो उलवो दीधे एह वो तुझनें कांइ घटे नहीं तेम लवा

बा

स्या एतला विचें बीजो विरते विचास्यो अनें रेजी वता हरेजी वेंते वितु किम जीयो ८ अथ राधिका को प्रकास विरह सवैया।
कौन के नम्री ति का को प्रीतम नहिं विचार तियाही कें अनेबों मति बुरु गाइयतु हैं के सो दास जतन करे हि सले आवें हाय
औरका हा मंडिन के पाछें धाईयतु हें उ विच जो जोन मान इं का ज की बनाय जाते मान सें जमैं हिं वानें ता मैं आईयतु हें या
कें तों हि आज ही मिलो किम रिजातु कछु आगि लागें मेरी माई मेकु पाइयतु हें ९ अर्थ: एक दास में नइ विषइ प्रभू जीनें वा।
त्या सांतली नें राधाजीइं अनेक विलाप करवा मांड्या छे तिवारइं सषी आनक मतीनइं समजावें छइ तोई कांई समजता नथी
तिवारइं एक सषी बोली हे राधाजी ब जा के हनें एम बीमां प्रीतम छे नहीं अनें कोई प्रीतम षबकी विबसता नहीं हो इ आही नो तो को
ई अनो पोमति बुना धर्म दीसइ छइ के सब वरायजे प्रभुतें वाल्हा ह वेतो जतनें हा थइ आवइ बली जिम कोई मंषी औने प्योकु इ ते
हनइं जो सा द करीइं तो आवें पिण कांई वासें दो नाय इम कहीनइ बीजी सषी योनइ कहें छें जो नमानें तो उठी चालो बलाइ जा।
णें सषी माण स उ लषें ते कनें आवें अनें एहनें तो हमणां ज मिल्यें काइ हमणां ज मरु तो आगि लागें काइ ग मय आवइ ९ अ
थ राधिका को विरह लयसवैया॥ कोकिल के किकुजा हलकु लितु ठौर मेंमति की गति फूली केस वसीत सुगंध समीर गयो
उ हि धीर रूज्यों तनु तूली या मनि यांमनि कें विच जोन की जामिनि पैं नअजों प्रिय वितली कौं जिऔ कें से कस्यों बिसखी व इस्यो
विसमा विसम बासिनी फूली १० अर्थ: एक दास मेनइ विषइ नायकानें विरहमकुण नो छइ तमनमां विचार करें छइ
कोकिल जे को इल के कोजे मार ते ह नो जे को लाहल ने राष्टते मांसली हीयामां फूउलउ डीछइ कवं फुल कुंफाटुछे मति जे अजक।
ते हनी गति तो फूली रही के सवक हइ छइ सीत कहतां ठाढो सुगंध कल्पर मलिक सुएह वो समीर जबा कें यरो ति लों कबीनइ.
मरीर तु धीर्य हतुं ते तूटी गयें विस्वावीस जिम आकमातु नुलतु मेए म तूटी गइ नें जामिनी जे राति ते हनें विषइ बेजो हे म कहता
तु जवा ली रातिते हनी एम हि बुहितुली गई छइ किम जीवतु अनें सुकक रु विष मरखी विस्वास घातनी बली राति फूली कहउ ५८
तु जवा ली षइ छइ १० अथ प्रच्छन को प्रछन्न प्रकास विरह सवैया॥ जिनबो लिसु बोल अमोल सबें अंग के लि किलो लिनि मो
ललिए जिनकों चितु लाल वीलो चन सूपअनूप पीयूष मुषी उ जीए जिन के पद के सब पानि छिन्नि सुघ मानि सब छिमछ।

रि कीए तिन को संग फिटि तहीं फिटु वेफ टि को टि कहू कनयोन हीए ११ अर्थ: एक दास में नें विषइ नायक परदेश गया छे
तिहां राधाजीनें विरहें करीनें विमासण करे छइ जे राधाजीनो बोल जे बचनात स्नें बोल कह त मा अमूल कहउ अमूलिक ते ह
नी जे आंषि ते सूषी या जे पात्र ते लरी नें जे ह ना रूपस मी उ जे अमृत ते पी षं ष कें जीबी इं अनें के सब राय कहें छइ जे लपग सू
हषि करी छे हें ष कें म हा सूष उपजइ अनें सगतु रु षबी सरी जाय ते ह नो वि छो ह था तइ हे ही या तुं कनइ फिट कार छइ जे।
तु ते हनें विष इ रहें कोट को टि कट का कांन षयो ११ अथ दम्म को प्रकास प्रवास विरह सवैया॥ केसव कोतु च जे ब लि को
रि संदेस कहै पुनि पिफिके जमपर आगें धरें अपनौ मो कें साहसू मी छें ही मेलि पषे पगनू पर होत जहां न तहां उठे व गे से बलो।
च न कस्ये परेंका हू हिनू पर लोक की लाज कि स्यो न परि पि मिला न करे अध को क के ऊ पर १२ अर्थ: एक दास म इनइ विषइ।
प्रभूजी परदेश चालइ छइ सा थें सषी पोता ना मित्र सकु वोला वा नइ जाए छइ पिण राधाजी नें विरहें करी नइ पग उपर तो नथी।
ते प्रभू जी कि मे चाल ता नथी एक पग तुं रवी नइ बली कुना रहीनें को नि को नि संदेसा कहा वे छइ पोता ना मित्र नइ कहें छइ जे।
औत्या ताइ नइ आम कहि यो इम स सूनइ नलाम ण दे छे इम राधाजी नइ विरहें करीनें एतला बाना करें छइ अनें बाली सक
ता नथी अनें पोता नो पग साहसें कउ ब ले करी पाछी नइ होइं तिहां पर्जे पिण आघो चाले नहीं अनें बली जिहां तिहां उ ला षइ
रहें जिम को णे उ ष्या होइ कउ छे तस्या कुइ तिम अनें कोई हितु जे मित्र ति णे पिण बालो कहि वाय नहीं अनें लोक लाज साज पाछ
पिण बजा इ नहीं पिण अध पातु क परि जइ मेलाप करें १२ दम्म को विरह लय सवैया॥ प्रेत की नारि यो नारें अनेक बढ़ाय
चली चिन नि ब कु षातो कों टि ति सी ककु देम र कं जति के सब सेत सबित नु तानों ठें ट तिहें बरहीं अबही तो बस्या इ गई हि।
रू षें म रब मा तो कि सीक रों कहि कें मैं बन्यो ब कुस्यो नि सि आई कि यो मु कुराती १३ अर्थ: एक दास में नइ विषइ प्रभू जीनें विर
हें करी विरु मनु पनो छे तेणें उजवाली राति गम तीनथी निंदा करें छे आज नी राति एह वी दीसें छइ जिम प्रेत नी नारि मिलाका।
+नारा+ ठीनइ घात करवानें जोए तिम अनें कें रू पीयामें जोवा च टावी नइ जोइ छइ जा णी ए स्फके हनें घातक र स्मइ एह बादी सें छइ अनें।
जाणीइ कोई को उणीसीकने उ मते सूपी या कं ज ने कमल च इवं त्री पूल्यों छे ते जाणीइ विरहीना दुष सू ल्यान थी अनें सेतक र

+ह+

लो उजलो है अने मन में मेलो पदीसे है अनेताको कहिवाय वे पिण अमारो फूहीयुं तातो को भेटे है अने आज राति ते हम लोन विरही
नें मिली नें सातें सब मिलि ई नइ गईती ते बली राउ मुष करी नइ फिरी आवी हसे संक करस अने छिम कगर सस ३ अथ राधिका की निद्रा
सवैया।। आए ते आवेगी आ पि ति आगे ही जो लि हिं मानक मोल जई हे सो बैन सो वन दे उन थी न बसो बि तु में त्रनि साधि दई हे मेरी
+के+ अंजू लि कहा कहूं सब सों तिक हूं तें सहेली नई हें स्वारथ मही हितु हे सब के पर देश गाये हरि नींदु गई हे १४ अर्थः हवइ सषी
तुं वचन राधिका प्रतें हे राधे तुं मो लों सं मारे वइ तिवारें कह्यं जा आवि मांहे षीत घते उ मी गई वइ श्री कृस्न आवस्ये तिवारें
निद्रा करसं हव लोनी वेचा ती आपी वइ सन हीं हव लोनें घण आवस्य सतु तो में श्री कृस्न नइ आपुं छे बीजं संकांई तमे ना क
होगो ने सुस्यो सो अरे महारी सषी कृस्न तें वात कहुं छुं तमे मानता नथी ते तो के दिहा मानी परदशी थई वइ कह ता बीजा
माथे मित्राइ की धी छे सर्व तुं हित छे ते तो स्वारथ तु छे ते माटे हरि परदेश गया पछी निद्रा पणि परदेसी थई रही वइ १४ कृ
स्न की निद्रा सवैया।। केसव के सेहूं कोरि उपाय निआनि सतो उर लागत हे चकचौंधि ति सी चित वे चित में चित सौ चत हू
महि जागति हे परदेश त्रिया पउ मो हि पत्याति न जानें को या की कहा गति हे तजि नैनन नींद नवोढ वधू लौं आधिक राति नैं जा
गति हैं अर्थः एक दा समे नंद विषइ सषी प्रते सषी कहे छे हे सषी आज कृस्न आगलि जे कोई कोटि उपाय लोकरी ल्यावे ते ही
या माहिं संसा घई जागे छे अने जाणे छइ जे स्त्री संकृ पुला ये वइ के ना साथुं वइ एको ण मुझ न इ उजागे दे वइ चकवा चकवी
जिम चंद्रमानी कांति चित संनेत्र मसांति नेत्रि नि ति म हरि नइ चित माँ बीन वणी करता र निद्रा माहिं ते चिंता जागे छे माहरा मित्र पर
देशे मेली आव्या पछी समाचार कोई नथी ते हनी सी गति कुं से पमी इ रसषी आछी रात्रि उवी नैन बोढ वधू कोण जे राधा ते ह नइ सं
सार तां निद्रा परदेशी थई वइ १५ राधिका की सषी की पत्री कृस्न सो सवैया।। केसव कुं अर हूं मतातु की कुं सरी बनाद वताये
वन उपवति बिहरति हें कमला में थिर न रहति कहूं भोर कमलानु जायें कमल निते दरति हे कालीयो न केतकी के फूल सू चि
सीता चूं भ्यो निसि चर मुष बंद दे षे ही दरति हें वदन उघार तही मदन सु पो पत नहिं द्रोपदी यों ऽ नांउ मुरव ते रो ही टरटति हें १६ अर्थः ५२
एक दा समे नें विषइ मा ती क० कागल ते सषी इं प्रत जी नें आणी आप्यो वइ ते कागल सषी वांची संभलावे वइ हे केसव राय तुम
।। नान नी कुं अरी जे राधा जी तवन देवता नी पछे वना जवन उपवना ज वाफी ते हनें विषइ विरह करति हा ना

में छे कमला जे लक्ष्मी ते हनी परके किहां थी रहती नथी एक ठामिं किहां रहती नथी कमला तु जा जे कमलि छे ते हनी पछे कमल नें देषी
बी हे छे ते स्या माटे कमल मांज लक्ष्मी नो निवास छे ते माटे तिहां कांई अल छि जई न सकें ते माटे काली जे कलिका ते हनी पछे अने केत
की जे केवडो ते फूल गमतां नथी अने सीता नी परइ मुष उघाड ती नथी अने वारे ५ त मासं नाम लेई नइ जपे छे १६ अथ सवैया।।
नैरी पौन वता हिं नवन बन बीथिका निहंसनी यौ मृदुल मृणालि वहति हैं पिक पिक रटति रहति चित चातकी यो चक्र छिते चक
ई यो सुमुकि रहति हे हरणी यो हेरति न केसरी को कानन ही केकी सनि माली यो विलासन ही कहता हे केसव कुं अर का हू विर
तिहा रात्रि सी स्मरति ति राधिका की मूरति गहे हति हैं १७ कृस्न के सषी की पत्रिका राधिका प्रकोस वैया।। धरकि धरकि उठे लो यही
में केसो राय केसरी कों देषि वन करी यौ छुकाई ही कंपति हिं बासर की संपति चकोर ज्यें चितवत चकवा ज्यों चंद्र छ्विते छी उनो
पवन हैं के कामनि साल यो विलात जात घन स्याम घननि की घोर ही जवासें यों तपति हैं नौ रेयों नवन बन योगी ज्यों जगत रैन
निस्या कत यौ स्याम नाम तेरोई जपत हैं १८ अथ दोहरा केसोदास प्रवास को कह्यो यथा मति साज राधा हरि बाधा हरन बर
नो सषी समाज १९ अर्थः केसवदास कहे छे जेहवी माहरी मति छे तेहवो प्रवास विरह नो साज कह्यो हवे राधा कृस्न ते हनी बा
धा जे पीडा ते हने हरे क० टालइ एहवो जे सषी नो समाज कहूं ते सांभलो।।१९ इति श्रीरसिकप्रियायां विप्रलंभ शृंगारे प्रवा
स वर्णनो नाम एकादशम प्रभाव।।११ अथ सषीजन वर्णन दोहरा।। धाय जनी नाइन नटी प्रगट परोसनि मालिनि व
रइनि सिल्पनी चुरहेरिनी संनारि १ धाय जनी क० दासी एक नाई क० बालिदनी २ त्रीजी नट आनी स्त्री ३ एक मालण ४ एक
परोसीयानी स्त्री ५ छठी चितारानी स्त्री ६ सातमी सोनारनी स्त्री ७ आठमी रांमजनी ८ सन्यासिनी ९ दशमी पटुआ की बाल
१० केसव नायक नायका सषी करे सब काजि २ एक रामजिनी क० चेरागिणी सन्यासिनी अनइ पटुवानी ... स्त्री केसव कहे
हे छे नायक अने नायका एतलि जातिनी सषी करे २ अथ धाय को वचन राधिका सों सवैया।। मोहन सो पिक हानि सी होर सहि
सतरंजन के मिसि बैठी केसव क्यों हु सने मही नारी तो राथि हे री घर हीं महमैठी हो सषी तु सिष देसि पतौ हि तिनो हि चदाय
के दीठि अमैठी कौन लजै तै सरूप न को पेतुं ही कबु जाति अकास हि अैठी ३ अर्थः एक दा समे नंद विषइ धाय जे ते राधा ने
सी षाम लिदे छे हे राधा जी तुं आ मो दिहा नो अनइ आमी राति से तुं जनें मिसि बैठी रही छे जो कि मे ना हरी मा सांतल स्यें तो घरनी

घरमां घाली मुंकसें बाहिर नीसरवा नहीं दें अनें सषी कुंती नें हेत करूं छुं तोही तुं मोत्ज पविस्रां घो चटावे छे तें स्युं कोई लाग-
को वीजी एहवी छे नहीं छें ता हरा जेत लुके हनें रूप नषी पिण तुं हिज कोइ बांकी बांकी आंकामल गें वक बाहीयें छइ ३ अथ
प्रथम को वचन कृष्ण मों सविया ॥ घोरी सी स्युं देखी छे सदा रघन थन के समो री क्रम सी गोरी नो रील व. यूकी मारी सी सारंव की
मी हारी अति सूषि म स्यु भरी कटि के सोदास अंग अंग नाई के उतारी सी सोंधें की सी सौंधी देह स्यु प्र सो स्यु भरी पात भरी दे
वलोक तें किसिंधा नि उभरी सी आज या मोह सिषे लि बोलि बालि नै कुंजा लिका लि ओसी ग्वालि न्यात कामको कुमारी सी ४
अर्थः एकदा समे नें विषइ प्रथम प्रवू जी आगलि कहे छे हे महाराज आ नायका जो उदास नी पिण लक्ष दीसे छइ अंते आंष्यो-
५दी५ के हवी मोटी मीसे छइ अनें स्युं गालव छइ कं० सघली समी छइ अगर नें विषइ छे सोदास कहे छे छइ जाणीइ संघाने उतारी नषी
हे हसगली सों प्रेजे स्यु गंध तिलों सगली देही जाणीइ वरीन कुवे स्युं अमे स्युं प्रजे अमृत ते हमां स्यु भरी छे केना ही रस मुद
माहिं घी काढी एहवी जे आग्वालि नी संघातें आज का कहुं सो बेलोर मो कालि एहवी ग्वालि ला छुं जाणीइं कुमारी मदन नी न कु
वे स्युं ४ अथ जनी को वचन राधका सों सविया ॥ सोना को सघन बन में रो अघन स्याम नित नई नई रूचित नहे रतन राइ ति के
सोदास सकल स्यु वास को निवास करि विविध विलास हास त्रास विसराई त्रि उपर स्यु के कुक सहू सर स्यु सी वो हे मो पूष कुं की
पिली घाहिं जाकी नि अराई त्रि बोरी रतिन निवराए स्युं घ को तु जोलों पियमन मांहि मनु मैलिन वराइ त्रि. ५ अर्थः एकदा समे
नइ विषइ जननी जे ते राधाजी नें कहे छइ हे सषी अमारो घन स्या मा जश्र कृजी ते जाणीइं ज्यो नातुं वन स्यु न्हे न कावे तेह नें नि-
नेंन वन वी रुचि कं० श्री ति उम जावी नइ मन हरी ली जीइं नहीं अनें सषी इघ जे से जमीते हनो र साकनलो कछे अनें मसूष ज
चद्र मानां कि रण ते आगलि स्यामा आ अनें व ली मी दूषनें अमृत नेहनें तो महिली छो टेह राची इ तिन जे नेत्र तिलों चोरी चोरी नें
अवलोकन करजु नेहजु ये को यमु षछे तेमन मेली नें पीयू नामन संघाते एकरस करीन इं मिली इ तेहजु जे स्यु घछे ते सर खु का
ई चोरी चोरी जोया तुं स्यु घनहीं अनें सषी केसव राय जी के हवाछे सकल कं० सगला इजे स्यु गंधने हनो निवास छे कं० स्थानक छे ५३
ते संघाते विविधि विलास करि अनें त्रासजे बीह क ते वीसारी मुकें ५ अथ जनी को वचन कृष्ण प्रति सविया ॥ ओसी बातें ओसे
ही प्रेमें केसें हो कहा परतिया की मति गति लाज पाटसों लपेटी है मेरी ही न आवें मेरे बार एती बार वें तो जानत हो प्रथम ही को-

साथ लो टि लि टी हैं ओसी तो हें चेरीनि की चेरी बाकी के सो राय जैसी तुं सहाहा करि माथ परि लेटी हैं जानति कुंनंद भ्रूय के बेटा हो ज-
जानो छो ति वे कुंतो उनहिं दूषसानु स्युं की बेटी हें ६ अर्थः एकदा समे नें विषइ जनी को वचन पीउ सों हे महाराज एहवी बातो एम ज
न तकाल कि म ही कही जाय अनें एराधाजी नी मति गति ते तो लाज रूपी या पाट मा हे लपेटी छे कं० वीटी छइ अनें हे महाराज वीरइ
लें वेला इं तो मा हरे घरे नावें तो आ ही किम आवइ तम जाणो छो कुं नंद जी ना छो टो छ वं अनें उ ली पिण दूषभान नी बेटी छइ ६ अ
थ नाइ नि को वचन राधिका सों सविया ॥ अब ही तो गए छु निघो रि कुं जौ न ये बोलन जाहि री पीठे ही लागे करि हिं न वा के सीष-
राय ज्यू टो टि हि ह्मि के हि क छु नि मि घ्यो स के जागे जो नर स्यो परे के सब कें मै कु दस त ही स्यु ष स्याम सो नागे दे तो ही जान क्यो राष ति
का हे न आर सी ओ क रि अमि निआगें ७ अर्थः एकदा समे न इ विषइ नाइ न जे ते राधाजी नें कहे छइ हे सषी श्रीकृष्ण जी जा त एतली
वार आ ही वे वा ह ता ते हमणां कुं ग्या ते ह जो पोलि लगें नहीं पो हता कुं इं अनें ब ली के में कु ग्वें तें साद करवा जाए छइ तें पी या रा मो सूं
नें रा धी नई एव नी वार स्युं करी स रा ति दिव स नें कुं जागर तेह नें कांई ष्य स्यु तो तो तुं स्यो ज बाप दे ईस अनें जो स्याम सजी नई जो या विना
२ न हवाय तो अलगा सी ध जवा दे छे ला ग्य वा तें जे प्रकृजी ते हनें आ ही ज वे ठा रा षि आं ष्यो आगलि आरसी नी पर्छे हाथ मांहि आली नें
वेसें ७ अथ नाइ नि को वचन श्रीकृष्ण को सविया ॥ व नी जिय लाज व नो सरूआ लि व नी लकुरी यो व नी चितु जो नें व नी व नी आबि
व नी छ वि सों बित वि व नी छेर व नो स्यु सदा नें व ने ही वि चार व नी रुचि के स व क्यो कुं मिलो तो मिले ह म ही ते व नी ति कुं सों तो मि व ने-
कु ष वो लें इ ते व ने मातु व नो मनु की ते ८ अर्थः एकदा समे नें विषइ नाइन जे ते प्रभुजी नें कहे छे हे महाराज राधाजी नी जीव मां घी
मोटी लाज छे हीया मांहि मोटी चाह कछे अनें लकुं भुव नाइ पणि जालो छे अनें वात नी र चिन्न नें हरे एहवी चाल छे अनें मोटी रूआ घो
स्यु मोटी छ वि सं घातें घणी वार लगी तस्यु मा स्युं जो क मयुं स्यु सदी क्ष घलो विचार छे मन नें विषइ अनें के स व राय एहना हीया-
मांहिं प्रीति मोटी छइ किमे मिली सके तो मिलो अनें अमे तो अलगा तु ला छ तुं अनें महाराज मोटा संघातें इ बोलिवुं ते पिण मोटो छु-
सछइ अन इ एतला मोटा मांहिं मन मोटुं न थी कोधं एतलुं वा स छे ८ अथ नटी को वचन राधिका सों सविया ॥ लाहों दिषा वनता
हि गई री तों मेरी ओं ग्री वगही फिरि माई आंक कि हों दिस साध लगी हिं दिषा कुं गी जाई तो वेइक भाइ देवे ते सारी छें जानि तिन दू अन दे-
वें जरें स्यु य हिं अधिकाई राति की वे गति घ्यो सको एअव हों तेरी बात नि बाज हि आई ९ अर्थः एकदास

मैं नई विषई नटी जे तेरा धाजी प्रते कहे छे हे सषी जो कुं तो तें देषास वा तें ते मी गई तो वली फिरि तें मा हरी जक्को टे वि लगी अनें सषी आ
ज वली मी जो बानी साद र घई छे अनें जो वली कुं देषा मी स तो वली कालि जो या नें ता ने हि ज का कु छें अनें जो मैं नटा ही घई जाये बड अनई
नषी जो नी विवार ईउ ता वली उठ बड एता हरी अधिकाई राति नी गत अनई देह नी आगति कुं नो ताहरी बात नई वाज आवी ७० आ
थ नटी को वचन रूप मसों सविया॥ जही जही दुरे तही जो नेह ओसी जगमगे कें से कुं जो कें सब उ राउ लि ओ रंग की मदन कें पंथ अलि
अलि नि के पीछें आली अलि नी यो लगी फिरे जिनि साध संग की निपट अमिल बऊ तु है मिलि बे की जक कें सैं कौं मिला उं गति मो.
पिन बिहग की एक तौ दुसह दुष दे तें कुं ति दुनि दू जि बी मबी के बिसवास बा कौं बा कैं अंग की ७१ अर्थः एकदा समे नई विषई
नटा प्रभूजी नई कहे छई हे महाराज राधाजी नई जिहां जिहां तिषा मी ई तिहां तिहां बट्ट माना उ जवाला नी पवई मग मगे छई अनें
केसवराय एहना देह नो रंग किम टाक्यो जाय अनें पंथ मार्ग चालतां ग्रारार नो पवन जिहां आवि तेहनो परिमल जाणी नई अली
जे न भरा अनें आली कहि सषी ते पाछि लिई मन भतो हीं नई छई जिस कोई साधु पुरुष होय ते साधु नि संगति जोता हीं नई तिम
राधाजी नई केऐं न भरा जोता हीं नई छई अनें महाराज एराधाजी निपट अमल कहि भलवा नें हां नई नही अनई तम नई तो मलवा
नी जकि लागी छई कहि रहि लागी छई पिण कुं किस मेलाव तं किहां ई छिपाई सकी ई नही अनई दुष एहना अंग नो जय बिमलात
किहां डाक्यो न रहे अनें वीसे विश्वास एहनो एहना पिहनो विश्वास नही तो माहरो विश्वास किस करई ७२ अथ परसोसनि को व
चन राधिका सों सविया॥ पाइ प्रटें पलिका पर स्यो पुगजी रति तोलन मेलि रति ही सोहकि ओ मुकु सोहकि आज बातो तुम सौग
ति ओसी नती हि कें सब कें सि कु दषन कौ जि कें रौ रही नो राकें आनि दिती हि मानष वाव त हा तिन सो तुमराति कहा कतरा
तिकुं ती हैं ७३ अर्थः एकदा समई नई विषई पनो सण जे तेराधाजी ने कहे छई हे सषी आज प्रभूजी न मारे पगे लागा तो तमई प
ग छ कहा आ आ अनें तो हीं तमे मन मांहि षी जाज प करती मुकी नही अनें अनेक समकी भति बारे मुष सामुं करी जगारे क जो मु
अदि तेह मणा लगई तम नई एह जगाति दीसे छई अनें केसवराय मुष देषवा नई काजें अनेक प्रकार ई तो जावी कहि बाहीति मर ५४
तु नो ली घई कहि अजाण घई अनें हवें तुं तेहना मान नी ... बानी वाली नई सवरावे छई तो तुं रातें एव कुं तुणा ती हती ते स्फ. ७४
अथ परसोसनि को वचन रूप मसों सविया॥ हासी मे ... वा सों कही हसि व क्यो क सो कहि ति करि ले यो आमि मिली सषी आमि.

लिबोई स्फ केसव क्यों अवरे षो विचाह मरें चुपु सापे न चातक स्वाति समें हीं अवे स्फ विरे षो आज ही क्यों बह आविं हं हां जिहां.
आगल तिकुं न आगतु देषौं ७५ अर्थः एकदा समे नई विषई परसोसनि श्रीकृष्ण नें कहे छे हे महाराज आज में स्वामिनीजी नई
एसतां वात कही ते सांभली नें हसी नें मुज नई कह्यो ते पिण में हित करी नें मानुं ईम करतां तो आमि मिलवा आवी तिवारें.
सषी तो उठि गई काई मिली नई वेटी नही केसवराय मिलव उ किस भते आवसे अनें स्वामी वा पीयो बरकी र अनें मरई.
पिण आवो न रहे पिण स्वाति आवे तो पाणी पाय ना तेहनी पठे समय विना कांई थाये नही अनें महाराज आज ए आ ही कि
म आवे जे लीई आगि लागे पिण आगणुं दीठु न षी ७६ अथ मालिनि को वचन राधिका सों सविया॥ दूविहैं क्यों न षन वसन
दुति जो बन की देह ही की ज्योति होति हि सं ओसी राति हि ताही कौं स्फ वा स्फल गे है है कें सी केसव स्फता व ही की बा स्फ लोर
नार फाति षाति हि देषि नेरी सूरति की भूरि ति विस्मूरति हों लालन की हग दे षिबे कौं ललचाति हिं वलि हिं क्यों चऊ मुरकी +नी+
कुंच नि को नार नयि कच नि कें नार तोलचा कि करुं जाति हिं ७७ अर्थः एकदा समई नई विषई मालिनि श्रीस्वामिजी नें क
हे छे हे सषी जिवारे मोल मां योवन नी ज्योति आवसें तिवारे वस्त्र पहिरी सभूषण पहिरास ते समा कें तेज मामट उ मिलस्ये ति
वारे तेज किहां समासें एकली देह नो एहबो तेज छे जिहां तेजें राति छे ते दिवस सविष्या दीसें छे अनें त्यारे तो स्फ वास हतां जो
छे तेषी ले ओं नसें तिवारे केहवा घई ञा सरीर नो जे स्फ गंध तिलो करी नें नमरा नी ली हि आवी मिली छे जाणें स्फ फानी षासें अनें स
षी ताहरी सूरति जोई नें मूरति मुज नें वीसरी जाये छे अनें लालन नें प्रभूजी तेहनी जे आंषो ते तुं जोवा नई घणी लालचिकार छे
अनें हे चद्रमुषी कुंच जे स्तन ते जिवारे मोटा थासें तेहनो जिवारे नार लागसें तिवारे उचाली किससकीस अनें कच जे केसपास
तेहनो नार तिलों करी कुंच जे स्तन तेहनई नारें तिलों करीनें कटि जे ते लचकी जायछई ७८ अथ मालिनी को वचन रूप सों सविया॥
पैरों जिन मोहि घर जान दे कुं घन स्याम घरीक मे लागी उरदे षिबी यो दामिनी होय कौ कुं ओसी बेसी आवें हन उनमें स्फ वह रूप
नातुर की बेटी गजगामिनी आदित कौ आयो अंतु आओ बनि बलि जाउं आवति छि वेऊ बनी आई अस्फ यामिनी कामकेऊर
नितुम कुं जग स्यो कें सोरा यसों रनि कें नयसो तु गस्यो उहि स्यामिनी ७९ अर्थः एकदा समे नई विषई मालिनी जे ते प्रभूजी नें.
कहे छे हे महाराज मुज नें मार ग मां घर जावा द्यो घनीक मां उर नई विषई लागी जदी जदी सेस्यो जिम मेघ मांहि वीजली दीसें छे
॥ अनें केह.

वीहोय अनें कोइ हाथीजे हवी तेह वी आवें अनें तेदे षो तो आवृषभानजीनी वेटी किहांनासी न सके गजगामनी कंठ हलवें रवाते
वें अनें पत्ननजी आदितनो पिण अनआ ओकठ सूर्यपिण हमणां असपामस्यें अनें तमे पिण वनमें आवज्यो अनें राधाजी पिणव
नीथी नें वनमां आवें वें अनें यामिनी पिण आवी छइ अनें केसवरायतमे कामिनी वीहकें कुंजमांहिं छपी रह्या छो तिमराधाजी पि
णतमरानी वीहकें घरमें वेसीरह्या छें १४ अथ वरइनकोवचन राधिकासों सवैया॥ मैनअँमें सोमनुमृदुमृदुलमृणालिकाकेंसू
तकेंसी सूरक्रतिमनि हिहरतिहिं दसो कें मैं बीजदांतपांतसें अरुन ओठ केसो दास देषि दृग आनंद लरतिहें अरी मेरी नेरी मो
हि लावनिसलाई तातें भुजति हों तो हि ओकच्ळ जनहरतिहें मांबनसी जालमुषपंकजसों कीवरो कहि काठसाकठें बीबातिकेंसे
निकरतिहें १५ अर्थः एकदा समें नइ विषइ तबोलन श्रीराधाजीनइ कहइ छइ हे सषी तमां कमन तो मांषणस राखुकोमलअ
नेंमृणालिकाजे कमलनीदांडली तेह नाजे हेलापरागनेसरषी तमारा स्वरनी ध्वनि कोमलतसांलस्येंषकें मनहरे अनइ दाडि
मनाबीजसरषा तो दांत अनें फूलनीपांषडी सरिषा अने ओठ कहतां अधर ते अरुन सरिषा केसोराय दीठइ षकइ आंषो
आनंदनराइ एह वा छें अनें ताहरी जीलमांषणसरषीं कंआली छइ अनें मुष तो कमलसरषुं कोमल छइ पिणमारा कहे
जे आवी काठसरषी कठिनवाती किहां थी तीसरे छइ अनें हेमाहरीवाल्ही सषा तुजनइ कुलताई मांट हू छठ छठ वीजी
तो-तुजनें पूछतीवीहें छइ १५ अथ विरनकोवचन कृस्नसों सवैया॥ तेंनतिवोनें कुअतिहांअनी तिकरे जानतनतुसजे
मेंवुजू जानी यतुहिं वंचलत वरि त्रबिनत वेटकचटिकिलाविलोरकिं विनिअलिसारसं पियतुहें एकनिकेंपेठे तरतरिं
तरोजनमें तरजेतकेसोरायकेसें.तजियतुहें ऐसी कहो तिहें जू बालनकेचोरि चोरि मनमनमथही केहाथिवेचा
यतुहें १६ अर्थः एकदा समें नइ विषइ तंबोलनी श्रीकृस्न प्रतइ कहे छइ हे महाराज तमारा जे नेत्र लगारे कतो सीषामणा
छो ताजी आनीत करे छइ अनें तमे तो जाणो छो आषी ब्रजजाणे छें तिमतमारा नेत्र नां चरित्र घणुं चंचल छइ चीतावधकें कठ
जोरोधके बिननें चेटक लगाडे अनें अलनतर जे हृदे तेह नो सार होय ते पायें छइ कठ ताहरी त्यमि छें अनें एक नीतरमां जे पे ५५
ठोछें एकनासनसंवलगी रहें छें किमटलाय अनें एह बुक्याहे हो तु नथी अनें क्याहे दी ठुं नथी अनें जे स्त्री यो ना मन वेरीम
नइ मनमथजे काम तेह नें हाथि वेचें छइ १७ अथ सखिनिको वचन राधिकासों सवैया॥ अब हीं सुनि बोलिलगी जकपो
।रिफूलो

उठिजांनतदानें मेरेजांनितई उलटी तुमही बस केसवहें कहिं वेकहुं कीनें जो पिंइतो तुषपावतिहो तलफें हृगमीनमनो जला
हीनें तो किततांनतिहो ठिनएकरही क्योंन चित्र योंहाथिहिलीतें १७ अर्थः एकदा समेनें विषइ सखिनीजे कहतां बीनारी तेरा
धाजीनें कहें छें हे समी कृस्नजीनो हमणां जआहांथीचाल्या हजी घोलिलगे नहीं पोहता होइ अने वलीतेमां एह विजलागीछें अनेम
हरामनमां अबतुंलागें छइ अनें माणसकहें छइ राधाजी इम कृस्नजीवसकीधा छें तो षोटउ कृस्नजीं इवसिथई दासें छें जे जो या पछि
रही सकतीनथी जे पषें एनतुं दुषपामें छें मीनजिम पाणी यषें तल्ये तिमतमा हरी आंषो कृस्नजइ जो या विना तलपे छें तो एक घडी
जेते स्था माटे अलगा घु के छें चित्राम णनी पठें हाथमां जमाजी रहें कां नहीं ७ अथ द्रित्या-स्यिनीको वचनकृस्नसों सवैया॥ बोरइरी
जिमधुंट्ररलोग हिडोरकु गोर निजानें न जाकुं लाजन आवतिमारे मलाजनलागो अलीक केताजनें ताकुं कोरविचारि विकार
कुं केसवदेषकुं कुजहितु मवकाकुं नेहछि किफिरिलागकुं संगनतें नतिकौ मंगुम्योरनिवाकुं १८ अर्थः एकदा समेंनइ विषें
द्रित्यनीजे मरोननीते श्रीकृस्न नइ कहें छइ हे महाराज षाटा घोमानी थइ अनइ ग्रही नइ कुसार हो पिण गामकुं गामकां ग्रा
जाणो नहीं जिम स्यानी लाजनहीं आही अनइ ग्रही यें केंन ग्रही इइ हांतुषकें समछे तिमगामजाणो नहीं अनें तेह सषी
जिमचा बकामास्यानी लाजनहीं तिमतमनइ पिणअलोकजे निंदा ते रूपीया ताजणा कठ चाबका ते वाजे छें सनाना वेस होहा
रमारे छें तो हें लाजतातन थी अनें कुमनमांहिं कोफिर विचार करइ छउ अनें केसवरायएतो मकुकोजाणेछइ तेहनइ मधि
फिरी लागे छइ पिणनें त्रनो संगात अलगो करो छो १८ अथ दुरहरनिकोवचनराधासों सवैया॥ मतिमन मिलेंकहा
हा मिलेंकौ सुषु मिलें कुछेंदेष कुंलाइ काकुंवालसों लालिपरीसोह निही बांधिहैं किनेंकदिनबांधे बलिजाउंवनमाली
मालिसों मुकुमावि सोवमनुमारनरीकेसोराइसारकूछेमे रेकहिकमलनालसों तेंन निहीबिहसी बिहसि को लों बोलिहें
होंकबकुंतावोलिसिविहसितंदलालसों १९ अर्थः एकदा समेंनइ विषेंमरोननीराधाजीनइ कहें छें हे सषी कृस्नजी मनें म
नसिस्या पिणअगोअगिमिलीइ नहीं तिहां लगें कांइ ते ह सुषमनकुं इ अनें कोइ ताहरी मायणनें नेसावी मूंठी जो जिमसत्या तुं
समकेहवउं छइ अनें एह वीलालोर तेह केनजाइ कदिहां नांवांधस्यो अनें कुंतोउपरि [illegible] जाउं वनमालीनें बांधेवननी
मालाइकरीनइ बांधें अनें आंष्यो हसावीनें गानागाना किहां लगें बोजस्यो कहीइ कतोह सीनेंनदलालसों बोलो अनें सोह मर

[illegible stamp]

मीनें अनें मननें मारे छे पिण माहरे कसैके सवराय नें मारन ही कमलनी दांमी छे ॥१८॥ अथ चतुरहेरनिको वचन कामसों सखिया ॥
आपु तुम्हिं जे तुम्ही तुम यामें हो हक हाक बड़ तुम्ह दीजै याबिन्तु और कहा यन के सब नाहि कहा यकनो सब कीजे लाग बने जो ।
चित मसो चह तो बिरचाइ कहो कहा लाजि जो बरिसाइ तो जिजे मना नना तो हे तु कसिराइन दीजि ॥१९॥ अर्थः एकदा समेंनइ वि
षे मरोहनी श्रीकृष्ण प्रतइ कहे छे हे महाराज जेह नइ तु बेसा आपणा तुम्ही घई यह रइ नेह नई कही इ काइ तुम्ह प्रथ्वी अनें जेप छइ ।
बीजा काइ गमेन ही के सवराय तेह गमइ तिम जकांन की जइ तमारे मोटे नाग्ये एतम संघात इराबो छइ तो तेह नइ प्रखावी नइ
माहें सूतीजे जो रीसावइ तो पोतें मनावा जइये जिमइ धत्र कह्नो होय ते नाइ ते करीनइ पीजीइ ॥२०॥ अथ स्कनारिको वचन राधि
कासों सखिया ॥ लोल अमोल कटाछ कलोल अलोल कसो घट ओलिके फिरे पांन पसे अति पैने रसालि बिशाल बनइ मन लावे
नेमेरे केस वचीकनें चोगुनें चोषे चिते कैन एह रिम्पाय निचेरे सो तुसंकोचन और तिरोचन धीरज मोचन लोचन तार ॥२१॥
अर्थः एकदा समेंनइ विषइ सो नारि नीजे ते राधाजी प्रतइ कहे छइ हे सखी ताहरा जे नेत्र ते लोल कं० चपल अमोलिक कं० अमू
लिक एहवा कटाक्ष नाजे कलोल ते जे पट फ्रं घटो ते फिरे वो छइ तिवारे अलो प्रघई जाई छइ वली नेत्र केहवा छइ पांणी पक० ते
जतिणीक्ष छइ पेनां छइ कं० अणी आला छइ कं० अनइ रसाल छइ कं० नवे रसे कर्‌या छइ अनें विशाल छइ कं० मोटां छइ ते सखी
कहे छे मुझनें घणु गमें छइ अनें घणु चीकणां छइ चोगणां चोषा छइ अनें जो यां घकां के सवराय न्याये वस घई रह्या छइ वली ने
त्र केहवा छे सोच जे विमास मुं तेहनें टालवइ अनें रतिजे प्रीति तेहनइ वधारे अनें धीर्य नइ मुंकावइ एहवां ताहरा लोचन छइ
२२ अथ स्कनारिको वचन कामसों सखिया ॥ दामी मेंह मैंनें हरि हेरे के कृत मनु हरि के हस तिहि रितिहि लिअनुरागहिं पेमकी
पहेरी गूढ जान तिन नाव तिही आजु अधरा तिक लीमेरे साथ जागी हैं अबलौं जाध स्यो धीर ते सें दिन है क ओर धरो गिरिधर उम
नैको बहना गीहि लावती । मतिहारी वह का किहीति कैसो राह का मकी कपानिक छूकाम दें न लागी है ॥२३॥ अर्थः एकदा समेंनइ
विषइ सो नारनी प्रत्ये जानइ कहे छइ हे महाराज आज मैं नमारी वाल्ही जे राधाजी ते आगति हमतां रवात कीधी तिवारे मन माहि ल
गारे कल ज्या मा मी क्रि रिते वली हल वे कहसी ति तेंजाणी छइ जे हीया मांहि पिउ प्रीति दीसे छइ अनें प्रेम नी पहिली कं० अर्ध गुढा ५६
ते सीमनी मुझनें मूछती हती आज अधीक रातिल गे जागी छइ एतला दिन लगे जिम धीर्य धर्‌या छइ तिम दिन बे कवली धीर्य धरो
गिरिधरलालन मधी कोई वली बहना गीह स्मे नमारी लावती जे राधाजी तिलइ कालष की कामिनी कष्टा उपरि कांन

देवा मां स्याछे ॥२२॥ अथ रामजनी को वचन राधासों सखिया ॥ कोमल अमल बेंतो मलीन एती छे चल अलित निलित नवनील के सेमा
तहि कपेसीह सामुहे वे ते कुटिल करि मएतो के सव प्रेम चोर परम कि राइ तहि पाइ हि पक रितब पाइ हे ते नकि सें कु सै तु धो री अब
लाति ए तो अति बरजति क्यों न तु हूं कब की कहिहि निमेरे मोहन को मन ते रे नैन छे जात हैं ॥२३॥ अर्थः एकदास
मेंने विषे रामजना कं० वेरागिण जे ते राधाजी प्रतइ कहे छे हे सखी ताहरा जे नेत्र केहवा छइ मलिन कं० स्याम छइ अनें नीर छे ।
कं० नीषा छे चल कं० चंचल छइ अनें नलिन जे कमल तेहनी जे मां भमी ते सरषा छइ अनइ प्रत्यजा तु मन केहवो छइ कमर छे कं०
माधरो छे अनें साधु कं० गरीब छे कहवें कं० पवित्र छइ अनें ताहरा नेत्र केहवा छइ कुटिल कं० वांका छे अनें वांका कर्म करे छइ अ
नेंपर मन चोरे छे ते छेघ के मननइ चोरी ले छे अनें बीजा चोर ने जलायें एहनइ जलाइ नहीं अनें तुं तो घोसी वांकाई करइ छइ अनें
एतो घणी वांकाई करइ छइ इके वारनी कुछ ते तु वारती न थी कां एह वी जे ताहरी आंषो ते माहरा मोहनजी ना मनने वारैर छोही
जाइ छइ ॥२३॥ अथ रामजनी को वचन कामसों सखिया ॥ क्यों नै कुलो पु कहा रचो के सव कामनी कोटिक सों हितु ठाढ़े रचन साधसमे
कष की बिनु राधे कों आधक लोचन माहिं क्यों पारि सी तल बांस कुरें मुख जोरन पीघन सार के साटे लाल वे हाथ रहे व्रजनाथ
पिंघा सब झाई न औस के चाटे ॥२४॥ अर्थः एकदा समेंनइ विषइ रामजनी जे ते कृष्ण प्रतें कहे छे हे महाराज केसवरायजी ए
तमे अनेक उपाय करो छो बीजी कोटि कामिनी कृष्ण प्रीति वांधे तो ही एक राधाजी नु अर्ध करा च्छ तुं जो बते ते हनी बराबरी ए
कवार काई थेनावे अनें महाराज पमीनो कोकरी नइ घनसार ने माटे फाक तो नर इ तो तिणेंकां शहा ट ते पाय काई क
गंध पाय हे व्रजनाथ लाल चि कर वीज कु गारे विलजाक लवाटें कांई तरस न टले ॥२४॥ अथ सत्यासणी को वचन राधासों सवे
या ॥ न छूटहे कूनाइ जब करि हो पौ के सीत नब के सोदास अन त्रास प्यास लुष लागी है बेतु लतिजाइ गो पफ नाइ गो न चित्र चितु
कछन ॐ कहा हु गौरी रैनी दिन जागिहे ताते तेन पेतितु नी सीरे ते मह मगुनी उपमिजि परे गी उर अ सी एक आगिहे तिन सों अनाहि
जिठुं अचतु उना का ओलि लि ओस निहीं काकु कीं कमी वित हिं लागिहे ॥२५॥ अर्थः एकदा समेंनइ विषइ राधाजीने सन्यासिनी जे ते कहइ छ
इ सषी ता मस ज्ञानी सरना सर निमकरो अनें छेह नो उपरि ते षकोन गोमकरो नीचो जोई नइ चाले कु बोलापा पवीनइ कं कुछ ते जो केह +अ+
नइ आवीनें द्रष्टि लागी तो पणु माफ पामो ते कही इ छइ द्रष्टि लागस्ये ते केहनी छे भावी छूट स्मे नहीं तिवारे स्कं करस्यो अनें केसवक

हैं वे अनायासें कहुं सहजें रूप बिन रसरली जासें रामति वी मरी जासें सील मांहिं बिन कांइ रहसें नहीं कांइ दीठुं गमसें नहीं अनें
दिनत घाराति जागस्यो कहुं घऊ आवसे नहीं कांई तानी वस्त आवसें ने घकी बिमणी नपति घासें अनें ताढ घकी अजायणी आवा
सें हि याने विषइ एहवी आगपहसें २५ अथ सन्यासनी को वचन कृष्ण सों सखिया॥ सीतल कृहीत तिहारे न बसति बहु तु मन न तजत
तिन्ह ताको उर तापगो कृ आपु नो ज्यो हीरा क्यों परा त्यो हाथ बुजनाथ दे को तो अकाथ साथ मैन त्यो सो मन ले कृ एने पर के सो राइ तु स्ने त
घवाह वाहि वहे जकजागी जागी रूप सकल न्यो दे कृ मां मे मुकु वां मे भि मतु ब तिन बवी ले लाल त्यो सा तो गवारि नी सों तु म ही निवाहो
ने कृ २६ अर्थः एक दासमें ने बिषइ सन्यासनी जेत श्री कृष्ण प्रत इं कहे छे हे महाराज तमारा जे सीतल बोल अनें हितकारी तेह नइं तो
+ श्री + एँ [?]रतीन थी अनें मननी लाजत जतीन थी अनें कोई रषें जा ले एह वा एह नामन मां ताप लागे अनें आपणो कहुं पोतानो मनरू
पीयो हीरो ते अकाथ कहुं फोकट पीया राहाथ मां आपीने को ले पा छेउ ली छेवे अनें हे व्रजनाथ एमन मांइ म जाणो छइ ने माटें मन
आप वाही मतीन थी एतलाउ परिमने तो कांइ प्रवाह न थी अनें तेहनें तो एहवी जकलागी छे तिलें करीनें रूप लागी गई अनें प
रतुं मुषवी सरी गयुं अनें मुह में मीठाई सुकी छो गी छे अनें छबीला लाल एक हृण मांहिं एहवो छल थई गयो छइ ने माटें एहवी गू
लि सा घइ तेह नो निर्वाह महाराज तमे त मे जपसे २६ अथ पटइनि को बचन राधाजी सों सखिया॥ याही को मेरी गुसाई निमें पहिलें
मिलई वनी मांछे लिछे लौं बाने मिलै अभि आं मिल इ सषी आं निकी आं भिमि पार के त्यो लौं आं भिमिलें मनु लागरा हं मनु ले
लि अवगाहें हमगे लौं मिलो मनु साइ कहा करिहौं मुकुही के मलें तो कि ओ मनु मेलौं २७ अर्थः एक दासमइ ने विषइ पटवानी स्त्री जे
ने राधाजी प्रते कहे छे हे सखी मइ तुजनें गुसाई जे प्रभुजी तेहनइ पहिली वातें मिली कहुं बातो कही दे मा मीठे लपणानी वातें मिल्या
पछी मन तिहां लागी रह्युं ने मन लेई नइं मिल्यं ते अमे मेल्यं पिण मन मिलें स्युं थाय पिण मुहामुहें मली इनि वारें मिल्यो साचो थाय
२७ अथ पटवनि को वचन कृष्ण सों सखिया॥ वाम गनें नी यों और निहारत गावत हो के घंथ मुष ऐसें न रूजे सो ने ई सीसो पेषा ता
रिहो इतो के सव केसें कृहा धन वूजिं आपु गिरा गुन जो सिम बेत उकाकन को किलयो किलकूजें संदर स्याम बिराम करो कछू आ
व को साघ न आमली मूजें २८ अर्थः एक दासम इं नइ बिषइं पटवी जेने श्री कृष्ण प्रतें कहे छइ हे महाराज तुं तो मृगनेंणी जे राधाजी ५४
ते हनी पछे उरक हुं बीजी स्त्रियोनें मुह में लगा मो छो ते कांइ बाकन थी अनें के सवराय मीतल जो सोनाम रिषु जग तु होय तो हि पिण

हाथें छो हें नहीं अनें महाराज गिरा जे सरस्वती ते पोतें आपो आपि पांजरा मां घाली ने काग मानें पढावें वलीयें कांइ कोयलनी पढें को
इ मनोहर बोलें नहीं ते स्यां माटें सुंदर स्याम मनहवें वामकरो कांइ आवानी इच्छा कांइ आं बलीयें मुहवें नहीं २८ अथ हरु वय
न नयन सुष सयन कर कहें सषिनि कें मर्म केसव कहो कछू अब तिनके को विद कर्म २९ अर्थः केसवदास कहें छइ वचनें मा
वलै मुषें करीनें जे कांइ सषीना मर्म हता ते कह्या हवें एह ना जे वतुर सषाना कर्म ते कहीस २९ इति श्री रसिकप्रियायां सषी
जन वर्णनं नाम द्वादशमः प्रभावः॥१२॥ अथ सषीजन कर्म कथनं दूहा॥ शिक्षा विनय मनाइबो मिलिबे करिहि सिंगार ऊ क्षि दे ह
उराहनो यह ताको ब्यौहार १ अर्थः एतलां काम सषी जे ते करें शिक्षा कहुं सीषामण दें १ विनय कहुं बीनती करें २ मनावी मेलिवे सं
गार करावें भाजें उलंभो ए ५ सषीनो विवहार १ अथ राधिका को शिक्षा सविया॥ नाकु लगो मुकुसों निदहें दिन ना हि लगों दुषु दे
ह दहेगो नां हि अवि सुषु दे तिहिं केसव नाकु सदा सुषु देत रहेगो नां हि ते नां हिं री नाहिं न लाइ नली सव नां हि तो यें कहेगो नांहि
सो ने कु नि बाहि व लाइ स्यौं नाहा सो ने कु कहा निवाहे गो २ अर्थः एक दासमें नइ विषइं सषी जे ते स्वामिनीजी नई सीषामण दे छे
हे सषी नाह ने विषें प्रीति राषस्यो तो सों स्यो छे ते दिहाडी बलस्यें अनें जो नाह साथें प्रीति न राषस्यो तो तमें दुषें बलस्यो अनें नाह नेहव
णां ही ज सुष थयो छे पिण नाह जे भर्त्तार ते सदाइ सुष देस्यें अनें सषीनां थकी नाकहे लाइ नथी अनें नाह जे भर्त्तार ते कांइ कहस्यें
ने तकें हीज कहस्यें अनें सषीजु ता हरी बलाय तुं नाह साथें नेह राषो अनें नाह स्युं संबंध कें टला वार पूरव स्यें २ अथ कृष्ण को शि
क्षा सषी को सविया॥ कुंकुम उबटि कुमकुमा केन्ह वाय जलस्युं ले सिर लाय पाहिस्या एक हारा समें चंदन वढाइ पुनकु लिपहिराई
रूलि वे हीका जिआं जिसां जिकी ताहें प्रकाश में केसव कपूर पूरि काहें कों षवावौं पांन जो पें मनमगन हें ऐसा ही विलासमें तो वा
हिकों मनावो हरि हाहा करि पाइ परि सवही सुवास वसे या कें मुष वास में ३ अर्थः एक दास में ने विषइ सषी जे ते श्री कृष्णनइं क
हे छइ हे महाराज कुंकुम जे केसर ते हनो उगटना करी कुंकुमा कहुं अनेक सुगंध युक्त छे जे जल ते लेई न्हवरावी अनें मस्तक ने विषें
अनेक सुगंध फुलेल घालीनें अनें सुंदर छव माला या अनें चंदन चढावी फूल पहिरावी भूले र फोकट तमे आनें जो तमाकुं आ
जी मां जी अनें प्रकास करी उतीरा भी अनें कपूर वरास घाली घाली नइं पान स्यानें षवरावो छो अनें जो तमारुं मन एहवा सुगंध
ना विलास मां मग्न छे तो कुं कहुं ते करो तमे राधाजीनें मनावो हाहा करीनें हा हा करी पगे लागीनें ते मीआवो जेहना मुषपरिमल सा
हि सगलाई सुगंधवसे छइ ३ अथ राधिका को विनय सविया॥ ऐसें साँहीं कौं तु मुछंद रहि हौं सषि हौं महि हौं मत राह ठ सों लौं क्यौं

सरिहै मिलि बेबिनु तोहि तऊ मिलिहैं मिलिए दिन जोलों के सब कौरि करौं उपचार मिलें कौं कहा मिलिहि स्यु तोलों दे षि धौं अंगनि।
आरसी लिं मिलिहि पियसों मन ही मन कोलों ४ अर्थः एक दास मैं नइ विषै राधाजी नें सषी विनय करे छइ हे सषी इम किम वू पकरी हे २
छे सषी कुं सें रहतु संघातें तो हो स्यातो ताहरे मिल्या विना किम सरस्यें का छे तिवारे दिहा मी मिली इ जिहां लगें ने वा छइ अनें केसव
कहे छे कों सउपचार करो पिण तिहां लगें मिल्या नु स्य सउपजइ नहीं जिहां लगे अंगो अंगिन मिली त्यें अनइ आगमां आरसी लेइ नें
जोए छइ प्रिय संघातइ मन नी मन मइ क्या हालगइ मिली रही स अंगनि अवस्था जो ४ अथ कृस्न को विनय सवैया॥ स्याम के सेफूला।
निन दास्यौ सेद मनत्रिं नलालसैं अधरहास स्य धस्यो स्य धस्यो हिं वेनी पिक हिनी की त्रि वेनी सी बनाई बीर बारी कबार सों करि हा कों
करि हास्यो हिं कीनी कुच अमल कमल मत्र रुक्के से फलके सों दासया तें वि धि स्य गंध बिवास्यो हैं देषो न गुपाल सषी मेरी कौं सरीर सब
सोनें सों सबारि मनु मैन सों सवास्यो हिं ५ अर्थः एक दास मैं नइ विषइ सषी जेतें लज्यारि नें विनय करे छे हे महाराज एह वास्य बनाफू।
ल एह वाते नेत्र अनइ दाडिम नां बीज हो यए हवा तो दांत अनें लाल कंठ रा तो अधर हास्य जाणी इ प्रवाला न होय अनें वली राधाजी नो
चोटलो गुंथ्यो ते जाणी इ त्रिवेणी तो हो य गंगा यमुना सरस्वती तो हिं अनें बारी क कंठ सीणा सवाला अनें हल वी जे बालि ते करी जेहा।
स्यी ते जोइ नें हा स्यो छे अनें एह ना स्तन ते जाणी इ लक्ष्मी तो हू क्ल जे वीली ते सर षा की धवे के सव राय कहें छे हे हां बु ध्याजी य णि ह्य।
लादी सें छइ माहरी सषी जे राधाजी ते हना स्तन नी सुंदरता इ आगलि वीलाना स्यो आसरो अनें गोपाल रायजी नें वली बुद्धि ना जोर
इ माहरी सषी जे राधाजी ते ह नु शरीर व ह सोना सरषु की धु अनें सन जे ते सीण सरषु की धु ५ अथ राधिका को मनाइ वो सवैया॥
रीझि री जाइ जरो बनिजां बिरही मुष देषि दिषाई स्य ना हो बोलिन आवें अबोली लई अब लाक सब छ्रि सोह मैं न स्य हा हो मैब कुति व हराइ
हिं तो सारी रीं बहरा बति सो हइ प्राहो एहि सयान सदा बलिहो हि हरि सौं हसि हा करि सोंहि सौं ना हो ६ अर्थः एक दास मैं नइ विषइ राधा
जी जेते मनाव इ छइ हे राधाजी यहि क्रंन मे सन मानी री जी जरो बिंच ढी प्रस्नजी सा स्म जोयो योता नो मुष पिण प्रस्नजी नें दे षा स्य प्रस्नजी
नें अनें कयत नें करी रीझ सा अनें कुं बोलाबी आवी एन लें अबोलपइ बेठी केसव राय ना सम सजो एह वतें कां इ अमन इ गमें नहीं अ
नें सषी में तु ऊ सरषी घणी बाही छइ अनें तु फरी नें मुऊ नें बाह बाही में छइ अनें कुं अजाण सदाय एस चालइ छइ हरि स्यं हसी न इ
हायानी छइ अनें मुऊ नें एक हे छइ जे नहीं आवो ६ अथ कृस्न को मनाइ वो सवैया॥ लूष न ले द बनाइ के के सब फूल बनाइ रिबा।
तो ला गुबडाई स्य हा गु बडाइ हि ये अनुरागों माय नें लाग नसों धे ब ढावत पांन मावा वतहीं निसि जागों कां स्य च लोउ दिबि दिक हास
न कुं सिप राया बस्य सपा लागों ७ अर्थः एक दास मैं नें विषैं श्री कृस्न नें सषी मनावा आवी छइ हा क्र सव राय तमा जा तिआन क लोदा।

लूषण बनाओं बागा बनाओ फूल बनाओं लाग्य व धस्यो सो लाग व धस्यो राग व धस्यो अनें ही याने विषैं अनुराग वधस्यो पगे लाग ता हा।
तो अनें सो धे वमा वताहता पांन मवरा वता हता आषी रातिन गें जाग्या इ मकरा न इ मीया रामन चोरी नइ हवे वली री सा व वाला गा हे का
कुं उ ठौवहि लो बहिला बालो बेसी कूं र हो ठौ ७ अथ राधिका कृस्न को मिलिवो सवैया॥ जो हौं गनौं औगुन तितौं गनें गुन गान जो हौं गनौं गु
नतों नऔगुन के गन में के सोदास औ सी प्रीति छि पावत छिलन में जे में छिन व छि छटि छूटि छि मिं घनास नारी है ति बुरति सिना दों की नया
वनी में स्य क्यों बसे घ प्यारया कौ पियब सें बन में बेटें तें उ गाये उ छिलि ते सब लिर हैं सोई मेरी कैयों न कहि त्योड हंत रे मन में ८ अर्थः
एक दास मैं नइ विषइ सषी जेत राधाजी नइ कहे छइ हे सषी जो कुं अवगुण गुणसोतुं अवगुण मिलें अनें केसव राय नी प्रीति छइ तें तुं अस
आगलि छ मानी स जि मस्तर्य नी छ बि मेघ मां वादला माहि छिपे तिम अने सषी तु लारी हाथा नी कछिन दोसें छइ अनें एह वी स्यादरबा ती।
छिहा मणी जे राति ते हनइ विषइ जे हमो लज्जा रवन नें विषइ वसे ते किम घरमां वे सो रहैं अनें सषी वेसो एतो कुमन छ गानी इ वाले न
हीं अनें वाले तो कुन्ती घ इ र है अनें सषी ताह रा मन मां हो इ तो कहें न ही स्या मा टे कहती न थी ८ अथ कृस्न को मिलिवो सवैया॥ सि षि।
हारी सषी सरवा इ हारी का दंछिनी दामिनी दिषा इ हारी दिसि अधराति की कुकि कुकि हारी रति मारि मारि हास्यो सारू हारी जक को
रति त्रिबिधि गति ब्रात की दई निरदई बाहि काइ हिं स्य सी मति दई जार ति जरै निकेनि दा कुअंसैं गीत की केसें कुन माने हौं मनाइ
रही के सोराय बोलि हारी कोकिला बुलाई हारी चातकी ९ अर्थः एक दास मैं नइ विषइ राधाजी नें मनावीर स्या पिणसना णान हीं ते
प्रसनजी आगलि कही दे षा में छइ हे महाराज सषी सगली सीषा मण दें छइ दे ई नइ हारी अनें कादसनी जअधरी रातिते विहावी रतिहा
री अनें दामनी जे वीजली अइ रात्रि लगें दिहा देषा नी हती रति जे प्रीति कुकी कंठ थी जा न इ हारी अनें मार जे एकांत मारी न इ हास्यो
बाक नी गति त्रिण प्रकार नी छे सीत मंद स्य र नि कंठ स्य गंध ते पिण बाइ नइ हास्यो दिकं ठ दिवति लो एह नें एहवी निर देमति कां आपी
रातिन पा दो हैं पो ता ना देह नी जे कांति ते हनें बा लें छे री सें अनें महाराज कुं मनावी हारी पिण किं सें न मानी को इ लजे ते बोली हारी।
चातकी बोलावी रहारी ९ अथ राधा स्य कौ सिंगार सवैया॥ दी नो सिंमाइ अंबाइ महावर आंजी सिंअजन आंधि स्य हाइ लूषन लू।
षित की नि सिं पके सब माल मनोहर सिंप हिराई दर्पन लिं अवदीपति दे षि सषी सब अंग सिंगारी सि धाई बंक विलोकनी अंक
लिं पांन सबा वि केौ कांक्त कुमारकी नाई १० अर्थः एक दास मैं नें विषें सषी प्रस्नजी नें कहे छे हे महाराज में कामोलि ई नइ राधाजी

तापगछैया महावरजे पोथी तिलोरंग्या अजालतिईनहं आंषोिमें आंजी नूषलजे मगरहएां ते जिहां ग्रोलें ते पहिरा आ अनें केसव
रायमनोहर मालामें कोट मांपहिरावी अनें हवें दर्पन लेईनहं पोतानी कांति जोएछें जोईनहं पोतें बीजा संगार घटे ते कीधा पिणम
हाराजन मारी मटें बकोकिं जोइ तबगनें विषइं बेसारी तमारी मटें मांन मवरावतां आवाते तेन मेषवरावज्यो १० अथ कलस को
सिंगारकु सवैया॥ पागबनी अरु बागो बन्यो बकु बाघट्ट काकटरा कटि नीकौं सों छैंबन्यो अतिबाकचटीव तहारबन्यो उरसावतजी को
बीराबन्यो मुकुंदरायतमनोहर मोहि सिंगारलगे सबफीकौं औ तो लली छिछिसाल गुपाल कि सो सुहि बालबनाइ नटीको ११
अर्थः अथ राधीवचनं एकदा प्रस्ताव इं राधी प्रत्ये जानइं कहे छे हे महाराज पाघ सीतो आवी बनी अनें बागोवन्यो अनें पटको ब-
+३४+ न्यो बीकुं बांधे ते पिण मांहि बन्यो अनें बाजुबंजे को पलोते पिणबनी अनें कटनें विषेंकटारा बनी अनें सों छे जेते स्फ गांधते मनो
हरकरुंकरवणयो छइं ते पिणबन्यो अनइं मनगमतोहार पहिर्यो छइं ते पिणबन्यो बीकुं बांध्यं ते पिण सुंदर दीसें छइं पिणम
हाराज एसंगार मुझनें तो हांलगें फीको लागें छइं जिहां लगें श्रीराधाजी इं वेहां वेंबनावीनइं टीकुंनथी बनावुं तिहांलगें बाअगोपा
लकाई बन्यो नथी ११ अथ राधिका कोऊकिको सवैया॥ फिरि फिरि फेर फेरि के सो में हरि को मकमक फेरे फिरि फुनिनाग को लली
घरी घटुरमाई तिपरताकु तीजिनकें स्यासो पीयतेरे माइ पीके पियहों मरी बहै निकी बेटा निकी बनी त्यों बकाई मेटिके सोदा
सबकनि कुं मिमिं जोतू बनी करी हो तो जानो मनात्यों तिमे रोगु नु मानि हि पियाह कों मनाइ ते जमो हि कों मनभरी १२ अर्थः सखी
राधा प्रतइं वचनं एकदा समें ते विषइं सखी राधा प्रते कहे छे हे सखी में फरी रकही रअनें परे फेर बामइं प्रत्ये जी तुमन फेर कुं अ
नें प्रत्ये जी इं पिण ताहरा लाग्यता घनी फेर बीनइं लली की धी अनइं तुं जे हनइं घनीइं रघनें लागती ते धीकने में ताहरे पगें लगाड्यो अ
नें पगें कुं लागी अनें मोटानी जे बेटीयो ते हनी मोटाई मेटीनइं कर टालीनइं केसवरायआगलि मगलिमगला मोटा मां में तुझनें मा-
टी की धी अनें कुं तो जाणुं छउं माहरे मनाव्ये माहरो गुण मानी स पिण मना ओं घकें ते मुझनें छिनी मारी १२ अथ कृस्न को ऊकिवो-
सवैया॥ तासों बमाइ कहा कहि के सब का मलता तक स्तैं हरइं छिपिकी लिपि लो पीनजाय अमोलिक लेमनि सी मल इं गाइ इं अप
ने मुख देकु आरसी लकु नि बात को होय रमान लई इम्बना न कतापर ते रसहागनि बात जहां लगिं नीं गई १३ सखी-नायक प्रतें व
चनं एकदा प्रस्ताव इं सखी प्रत्ये जीनइं कहे छइं हे महाराज ते हनइं समजावी नइं स्यं कहीइं जकमलनी लतासरषी ते हनइं सा घइं +न+
॥ददीनइं छपिं पिण विधि जे प्रसातहतु जिमु ते काई लाणुं जाइं नहीं अमूलिका जमणि ता लईनइं कजगाज सर्पा ते हनइं मा पूर्ण

धैंघातीमेतातुमुषजोईनें आरीसोलेईनइं अ॰ नें प्रमाणवात आफली पिंजाणसो इहसान सनातपरि जे कोई बीजी कहागणि
ते तो उतारी नांषु जिहां लगें जीवतां लगें तिहां लगें उतारी नांषु १३ अथ राधिका को उराहनो सवैया॥ कैसो दासकोंनवनी रूपकुलको
नियें अनो षोि एकु नेरें ही अनु पउ र त्यो लिख्यो आपु ने समानकी कारु मानन सें नमानें तु गूमानतिकें छिमानावती कोंमानों मनो-
लिख्यो ल्यों नसो तिमाई अतिअवलजु मान्यो लिखीसी छो लिख्यो त्यों न छंनी छिनवनीतिर सो लिख्यो दो नो मनुहार जिहिं हो राखो हरि कें नो
हरिसों हरिलनि नीह रिकुं तो बोलिखो १४ अथ सखी राधा प्रतइं वचनं एकदा प्रस्तावें नइं विषइं सखी राधाजी नइं कहे छइं हे सखी
कोण मोटी नथी के स्यं ताहरा सरषु कुलनथी पिण ताहरो अहंकार अनें षोदी पांसछइं कांनबोकोई करीतिनो दीसें छइं अनें आप
णी बराबरि ना माणस इं ने हनु मान्य नहीं तो गुमान ना विमानउपरि बेसीनें अकास लगें उडे छइं अनें मानी चालइं छइं तांकी +२+
रहृ छि जोएछे ते मुकी पैइं मकांइ मोकल षामीसं नही अनें जिलोहरिं हीरा सरषु मनहाथमां आप्युं ते हरि संघातें हरिनें निलगा
रे कह छैल वें हूल वइं नो बोली सें १५ अथ कृस्न सो उराहनो सवैया॥ सों हनि को सोंचु नस को चुकाकु बीच की कों पिाणोंप्यारे
घीकापो चलोचनिकी नारिकी मांषन की चोरी की हो घोरी छोरी सो कुस्यमिजान ति बाछ छितोषजारी हें जबारे की सेरी एकुस
तिओरें कहाकहो के मोदासलागति हिं लाजलाजइहां मात धरें की एतीहें फूकाई वाहि अबहीं सूठाई बहबारऊ तो छूटी ना
हिं माई तिकें मारे की १६ सखी प्रत्ये जी प्रतइं वचन एकदा प्रसइं नइं विषइं सखी प्रत्ये जानइं कहें छइं हे महाराजा तमनें इंका
ई समसतो मावो दोस तो नथी अनें कोई माणस विचें आवे ते हनो पणि संको चदी सतो नथी अनइं महाराज तबोलनो छोनो आ
विनें किमारे कं० आं विनें त्रूलें वलगो छें ते तूंहीटालो अनें महाराज मां षणनी चोरी करता ते तो मुझनें छोनी रसम छिछे अनें रा
धजी पिण जाणें छइं जेत मारी बालपणानी जाणे छें अनें केसव रायत मनें स्यं कहुं ए साहरी जिकुमतिछे जेमें तमनइं मेलो-
वीतमनें आंही आव्यो छे ते हनी लाजे कांई कहीस कतानथी माल सकहें छे घरे आमाविरानइं मानीयें पिणमहाराज एव
मीटूवाई करी नेहव मांजरी सचटावी अनें पकाछिम गिलागीनें मनावी हती ते हजीम गानी रजमा घनीइं पीटती नथी
१७ अथ सवैया॥ आंधीसी धायहिं दाई दवारिसी दासिनी के दुमदे हदहीहिं ताएकेहूं धलत बोरि निसा तिनी नायनी नाह-
कें ने हनहीहिं नेरी सों तेरी सों मेरी सघीकनि तेरी अकेली आसरही हिं कां कामिला तें किसो हित माई हैं आपुने जीको में

तोसौं कहीहिं १६ राधाजी सखी प्रतें एकदासमैंनें विविधि राधाजी सखी प्रतें कहैहें हे सखी अइं तो आंधी सरखी लागें छे कंवनो
+दीबानी+ लीयो सरखी अनेंदाईजे तेदवाजेकूं तो सरखी लागइं छइं अनें तापनातूल सरखा मलअनें नवो ति लिलागें छइं अनें नाह
नजे वालंद तेतो नाहनें नेहें ब अगली छइं तारा समजो माहरी सखीता कतो हरी आसरही छइं कांकनें मेला वेनहीतो मुकनइंन
हीमिलेजोकूं कांकनइं विरहदशासी अवस्थायां मीस माहराजीवनी बातमैं तुमनें कहीछइं १६ दूहा इहविधि सामसिंगासर
सों बकु विधिबरनकूं । अतोइ आविबरनवकूं आश्रमहि कहतम्हतनस्म बहोइ १७ अर्थः केसवदासकहेंछइं इहां प्रकार
सें संगारवर्णव्यो आरवर्णनकं ब्राह्मण१ क्षत्री२ विश्य३ शूद्र४ वलीच्यार आश्रम एकब्रह्मचारी१ बीजो गृहस्थ२ त्रीजो
बानप्रस्थ३ चोथो संन्यासी४ ए आरि आश्रम एस गलाइं मां लत्यं बकें हमधां मसें १७ दूहा राधारमन को कलो संगारूह
देसहास्य आदिदे बकुकहूं ओ रूरसनकेलेस १८ अर्थः केसवदासकहेंछइं हे राधारमण श्रीकृष्ण ते हनो सिंणगारवर्णव्यो हास्य आदिदेइनइं बीजा रसलगारेक वर्णवीइंछइं १८ इतिश्रीरसिकप्रीयायां सखीजनवर्णननाम त्रयोदशमप्रभावः
समाप्तो संगाररस॥ अथ हास्यरसकथनं दोहरा॥ नयनबयनकछु करतजब मनको मोदकूं देतु चतुरचित्तयहिचाअ
तिजें तहां हास्यरस होइतु १ अर्थः नयनकं आंबियनकं मुखें करीमनतो हर्षप्रगट जाणीयें आंखिमुखितेहनइं हा
स्यरस कहीइं १ अथ हास्यभेद दूहा॥ मंदहास्य कलहास्य रक्ति कहेकेसवअतिहास्य कोविद कवि बरनइं सबें अरुचो
थोपरिहास २ अर्थः केसवदासकवि कहेंछे कोविदकं माहाजे कवि तेहास्यरस च्यारप्रकारनो कहेंछइं ते कोण एक मंद
हास्य बीजो कलहास्य अतिहास्य३ परिहास्य४ २ मंदहास्य लक्षनदोहरा बि+कसेनयनकपोलिकछु दसनबसनकेसा
ववास मंदहासतासों कहिं कोविदकेसवदास ३ केसवदासकहेंछइं कोविदकं माहाकवी तो तेहनें मंदहास्य कहेंछइं ल
गारेक फरकइं तेहनइं मंदहास्य कहीयें ३ बरनन क्वाटिग्रंथजिहिं कीनें नकेसवदास त्योंरो रस योंजानिजकु सब प्रब
नप्रकास ४ केसवदासकहेंछइं वर्णवतां ग्रंथ वाधइं पिणसगलाइं रसइम जाणज्यो ४ अथ राधाजूको मंदहास्यलक्ष
नसवैया॥ जानकैंमांनमवावताओंकूं गसीतजिओं गुली ओवनबीतें। तबितमैंतबहीतिहि तांतिगुपालकेलोचन
लीलिसैंलीनें केसवबानकहीहरखें हसिसिंसमुझी बिंमहारसनीतें जानतिकूं पियकेजियकेअतिलाघसविपरिपू ६०

रनकीनें ५ अर्थः एकदासमैंनें विविधें सखी राधाजीनें कहेंछे हे सखी आजतुमनें प्रभुजीयें कोलजाणेइं सखानजीवीजी
मवरावी तिवारें गोपालनालोचनजेते लीलामांहिंलीजीरस्या अनें तेहलवें एकहसीनइं बातकहीतेकूं पिणसमजी पि
णप्रभूजी समजीनें महारसमां लीना अनेंकूं जाणुंछुं जे आजनें पीयूनामनना अनिलाषपूराकीधा ५ अथकृष्णकोमं
दहास्यसवैया॥ दसनबसन महिदरसेंदसन तुतिबरसैं मदनरसकरतअचेतहो जोइजलकतिलोल लोचनकी
जमैंनकें मोललित मनकर्मबचनसमैंन ताहों सोहिकहिदे तिनावकहों मेरीनावतीकेनावते छवीलेलालमैंतकोनहिं
हीं केसवप्रकासहासमहसिकहांतेकूं गेजत्ये मीहाहसेतिनोहियतिहरिलितहों ६ अर्थः एकदासमैंनइं विविधें सखी प्रभुजी
नेंकहेंछे हे महाराज दसनजेदांत तेहनावसनकं अधर तेहमांहिं दसनजेदांत तेहनी कांतिजेकांति तेदरसेंछे कंदोमीछे
तेदबीनइं जाणीइं कामना बाणवरसेंछे तेस्त्रीयोनें अचेतकरीनांषेंछइं अनें मछलोलकं चपलजे लोचनतेहना अं
प्रतिबिंबने आरिसा सरषा जे कपोल तेमांझलकेंछे तेतोदेषेंछे तेहनइं मनसा वाचा कर्मणायेंकरीनइं तेहनें मोमैंक
रीत्येंछेकं सेवककरीमुकेंछे वलीहीयानोजेनार वतेलूंहां आफणीयेंकहीआयेंछे वलीमाहरीनावतीजे राधाजी तेह
नानावतांजेतमेछवीलालालमुकनइं सांचउंकहो मोनमधरीरस्याछो तेस्कं कारणअनेंकेसवरायप्रकासइं सें तिवारें कृष्ण
करस्यो जोलगारेकमरकलामांतनमोहियेंकं तनमनहरीलीधो ६ अथ कलहास्यलक्षनदोहरा॥ जहांकृतितिचित्ति
कृतिकछु कोमलविमलविलास केसवतनमनमोहिजे बरनकूंकविकलहास ७ अर्थः जिहांकृतीजेकं मनोहर कृतिसा
तलीइं कोमलविमलकंएहवातिरमलजिहांविलासहोइं तेहनइं केसवदासकहेंछइं कलहास्यकहीइं ७ अथराधिका
कोकलहास्यसवैया॥ काछैंसितासितकाछनिकेसवपातुरत्यों पुतिरीतिबिचारें कोटकटाछनितेंगतिभेदनवावननाचे
कनेंकुतिन्यारें बाजतहेंमदुहासमदंगकदीपतिदीपकोउजिआरें देषतुहैं हरिदेखितुलौयहलोतुहें आंषिनहीमिंअखारें
८ अर्थः एकदासमैंनइं विषइं सखीप्रभुजीनइं कहेंछइं कुंजोतुहे महाराज राधाजी जिवारेंनमसाक्तजोएछइं तिवारें आ
षमांहिं अषाडो घायेछेकं तालमषातुमनायेछइं तेकहेंछइं आंषनीजेकीकीतेतोजाणीइं पात्रछइं सितकं स्वेतअसितकं
स्यामतेनोजाणीएकाछनीयोछें अनेंकटाक्षनाजेकोटि रलेदजाणीइं संगीतनागतिनकुं वेस्कं तेहरूमीयोनायकतेजाणीइं

डाक्टर भाऊ दाजी ... Dr. BHAU DAJI

नचावतो नघी मोनें रहसें छै ते जाणी इं मृदंग वाजे छै अनें आंघि तुं ते जते जाणी इं दीवाकी श्रछै एरीति नो आभामोन मसामुं जोए
छाइं छइं ८ अथ कस्म को कलहास्य सवैया॥ आज सखी हरि तो सों कछु बनी बारलों बात कही रसलीनी मेलि गरें पटु कोंपुनि केस
बहारि हिं ओंम तुहा रिसी कीनी मो हि अचंनो महा रूकहा हा करि बांह कहा बकवा दि ति लीनी तसि रहा घदायों तनहिं गुनगांठि
कहा हसि अंचरदीनी ८ अर्थः एकदा समे नें विषइं सखी राधाजी प्रतइं कहे छै इं हे सखी आज तो संघातइं हारवं बनी बारलगें रसेंनी
नी वातकरी अनें केसवराय जी प्रभूजा ति हिं गलामा पट कोघाली नइं हीइं हारीनइं तुरु नें घणी मनोहारकीधी वली सखी मुझ.
नें एम हा अचरिज लागो छइं हाहा करी नइं बनी बारलगें बांह जे ते थवे घकी अलगी तकीधी तेएह नें माथें हाथ धर्यो ते स्कं अनें नइं
भ्रूजी इं हसी नइं छेह ने गांठि बांधी ते स्क ९ अथ अतिहास्य लक्षनं दोहरा॥ जहां हसि हि निरसं कहिं प्रगट हिस्क मुमुकुवास आ.
घे आघे वरनम द तुम जिम रत अतिहास १० अर्थः केसवदास कहे छै जिहां निस्संक थईनइं हसे वली जिहां मुख अर्धतन का प्रगटे
अर्ध रअधर जिहां बोलें तिहां अतिहास उपजइं ११ अथ राधिका को अतिहास सवैया॥ तैसी अै जगति ज्योति सी सखी सप्न.
लति की झलक तुतिलक तक पणिकी तेरे लाल की तैसी अैं दसन दुति दमकत केसोदास तैसीई लसत जाल कंठ कंठ माल की.
तैसी अैं चमक चारु चिबुक कपोलनि की झलक तु तैसो न कमोती चल बाल की हरें हसि नें कच तुरच पलनि नी चितु चकचों में
मेरे मदन गुपाल को ११ अर्थः एकदा समे नें विषइं सखी राधाजी नइं कहे छइं हे सखी ताहरा सीस फूलनी ज्योति तेतलिणी तेहवी
जदीसे छइं अनें हे तरुणी ताहरा लालना तेजनी छबि तेहवी जदीसे छइं अनें ताहरा दांतिनी छबि तिजकांति तेहनी जेदमक कंठ
माका रने पिण तेहवोईं जदीसे छै कंठमाला ते लाल छै ते पिण तेहवी जदीसे छइं अनें ताहरा जे कपोल ते हनी जे कांति ते सुंदर
झलकें छइं हे चतुर हे चंचल ने नीलगा रेकह लवे रहासक हि माहरा मदन गोपालजी नुं चित्त जे ते चकित थईरह्युं छइं १२ अथ कं
स्म को अतिहास सवैया॥ गिरि र ज छिरवो छिरला गें कच बीच बीच प्यारे होत छबी प्यारी प्यारी सों आपुस में अकुलाई आधे र
आघर नि आछी रबा तें कहें आली एक यार मों कहत न कहाई सब समुझी न परें अब के सो राई कीसों कुटिल छिंमें कह प्यारी सों नरते
तनूजा तीर तन कवर तर ठाट तारी दे हें हसन कुंवर कान्ह प्यारी सों १२ अर्थः एकदा समे नें विषइं सखी सखी प्रतइं कहें छइं आज ६२
तरुणी तनुजा नइं जमुनाजी नेहनें कांठइं तरवर छाहें तारी दे हसन कुंवर कृष्णनाताली देईनइं कान्ह कुमर जेनें कोइक बाल अरजी स्त्री.
यो संघातइं हसता हता ते तरुनइं कइंकुतें सांजलि हसतां रवेज णा हे णाय मेंवली कटा झाय इं बलीरीझीरीझीनइं कोटे वलगइं

वली विचें रवेगलां थई नें तुम्हारे हें तेहनें छबि एवएक प्यारी दीसें छै माहो माहिं अलजाई नइं अर्ध रअधर तरु मुखमां थी नीसरें छै सुं
दर वातो करे छै इम सुंदर नारी तसंघातइं अनें ते सांभली थकें घणु सुख उपजइं पिण कांई समझ आवी नथी जिसुं थाए छै सी वातो.
करें छै केसवराय नाम मजोमें घणीवार छमीकु सी आवइं थईनइं जोयो १३ अथ परिहास लक्षनं दोहरा॥ जहां परिजन सब हिहसिय
छै न जिदं पति की कांति केसव को न कुछ बिल सो परिहास बखानि १४ अर्थः जिहां परिजन पासें छेवा कुइं ते समगलाइं हसिय छै दंप
तिसखी बने हनी लाज न करें अनें सगली हसी उठे छै केसवदास कहें छइं ते हनइं परिहास कहीइं १५ अथ सवैया॥ आईहें एकसम
हाबनाते श्रिया गावति मानों कमि राय गुधरी सुंदर ता जानौं काम की कामिनी बोलिकल्यो वृषभान दुलारी गोपीकें जाई गोपालि हिबे
अकुलाय मिलि तुब्रि सादरनाईरी केसव लेटति हीन्ह विचिअ कहसी सबकी कहिं गोपकुमारी १५ अर्थः एकदा समइं नइं विषइं सखी
इं आवी नें राधाजी नें कह्यो एक सखी महावन मांहिं थकी सुंदरी स्त्री आवी छइं ते हव तुम्यान करवें जाणी इं गिरा जे सरस्वती ते पणें
वाली आवी अनें सुंदरता तो जाणी इं कामनी स्त्री सरखी दीसे छै तिवारें वृषभान नी कुंअरी जे राधाजी ते णी इं कह्युं जे ते मीत्या वो.
तिवारें गोपी नो वेस करीनें गोपाल नइं तेमी आवी तिवारें उतावली थईनइं हीयामां घाली नें आदरसंघातइं मिली केसवराय.
मिलतां थकां हीयामां घाती नें बोपी तिवारें सखी यो जे तली बेठी हती ते तली सगली कीकयाट करीनें हहिया १५ अथ करुणारस.
लक्षनं दोहरा॥ प्रिय कें विप्रीय करनतें अति करुणारस होत ऐसो वरनत भानिते जैसो तरुनकपोत १६ प्रिय जे वल्लभ ते.
हनें कोई अप्रिय करे कठ अणगमतु करे तिहां करुणारस उपजइं ते कें सुंदरणारसकेह वो छै लक्ष हेलो कुइं एह बोछइं १६
अथ राधाय को करुणारस लक्षनं सवैया॥ ते ज सुंदर सि अपार चहुं भांमें सुकुमार ग्रां तसें त्रदार तुरु रथवियत हे सुंदर सुमन
मुरे राम सुसेंर न सूरे काम सुसे रूप सार हिमे हरि आनतहिं मागर सेंधीर गनपति मैं चतुर अनिअै में अविवेकी कि मैंदिन नरी यत
हिं तंद मति मंद महाज सो दास कहे कहा हा अैसे भूतपाई पस्मनल करि आनतहि १७ अर्थः एकदा समे नइं विषइं राधाजी ने विचार
करें छै प्रभु के हवा छइं तेज तो सूर्य ना सरखु छइं चंद्रमा थकी सकोमल छइं अनें रूप जे महादेव ने सरखा तु ह्यारछइं अनें मोटापु
रुष जे हनइं हृदें धरी नें राखे छइं दीठे थाकही मा नइं हरी लेएह वा छै अनें समुद्र सरिखा धीर छइं गणेस सरिखा चतुर छइं एहा.
वा अविवेक करीनें दिहाना किमनी गमें छइं अनें नंदजी नें मतिनो महामंद थाई छइं अनें यसोदा नें स्युं कहीइं एहवा दीकरो मां
मी नइं.

मध्यमालकजे गोवालते करीहंकः गायांचरावीनें १६ अथकरुणकोकरुणारससविया॥ चंपेकीसी कलीनलीकेसवकछुवास
नरीरूपकीसीमंजरीमधुपमतिसाईत्रे देवकीसीबांनीअतिबानीतेसयानीदेवराजकीसीरानीजानीजगमनमदाईत्रे काम
कीकलासीचपलासीकामअबलासीकमलासीदेहधरिंपरिदिपुरमाईत्रे कौनेंकीनीनिपटकुचालिजातिग्वालित्रिसाराधि.
काकुवरिपहिगोरसविचाईत्रे १७ अर्थः एकदासमईनईविषईश्रीकृष्णराधाजीनेंकरुणारसकाहेछे. बेवार चिंनवेछईरा
धाजीकेहवांछेचांपानीकलीनेपकीपिणकांतिछेदरवछई अनेंसुगंधेलरीछईकः रारीरसुगंधयुक्तछई अनेंमहायककरुपनी
मंजरीछें मधुरामनरूपीयोजेलमरोतेहनेंगमेंछई अनेंएहनीजेबाणीतेआगलिसीजाणीइंदेवतानीबाणी अनेंबाणीजा.
सरस्वतीतेवेसयानीछेकः गाहीछे अनेंदेवराजाजइंद्रतेहनीजेरांणीएआगलिसीएहनेंदीठइंघकेजगतजेतेसमचपामइ
वलीकेहवीछई कामनीकलासरषीछइ अनेंचपलाजेवीजलीतेसरषीछइ कमलाजेलक्ष्मीतेदेहधारीछइ एहवीछइ पुर
पुत्रेपामीइं एहवीनिपटआजाणग्वालितीजातिकिलेंकीधीएहवीराधिकापासेंसगोरसवेचावीइं १७ अथरुद्ररसवर्णनल
छनदोहरा॥ होयरुद्ररसक्रोधमय विग्रहउग्रहसरीर अरुनवरुनवरनोंसबै कहिकेसवमतिधीर ४ रुद्ररसक्रोधमय.
छेतेहनुंविग्रहकः कलेसमयछे उग्रहकः मोटुंछइ सरीरजोरसवर्णछइ केसवकहिंछइमोटंकवीइंसमकछूछइ १८ अ
थराधिकाकोरुद्ररसलछनसविया॥ केंठरीकोंहरकवीकेरमृगमीनकुनिष्ठकपिककंजमजरीटबजुजीतोहिं मृडलमरा
लणालछिबचंपकमरालबेलकुकुमदाडिमकाहिंहतोपदीनोहिं सारतकनकनतनुननकतनकजाक्षिपटनवटनवंधजी
वगांधहीनोहिं केसोदासदाससयोकोविदकुंवरकाकुराधिकाकुवरकोपुकोनपरकीनोहिं १९ अर्थः एकदासमेनइंवि
षेराधाजीनेंकहेंतमेजीनीसर्वजेरकरीनइंमुक्योछे एवनोकोपकीधोछइ तेकुणउपरि तमेंकहस्योमेंकेहनेजीत्याछइ
तेकुंकहुंएकतोकेसरीबीजोकपोतकः होलोकोकीकः मोरकरीकः हस्तीमीनकः मछपछीएतलानमारीबीहकेंवनमा.
गया अनेंवलीकहुंतेसांमलिकोमलजेकमलनीडांनीबिंबजेपाकोगोकुंचंपकजेचांपोवेलिजेलताकुंकुमजेकेसर अने
दाडिमएहनेंतमेंबिसपुडपदीधुछे अनेंकनकजेसुवर्णकुटकाकटकाघईनइअग्निमांपड्ये अनेंचंद्रमातोघणीकवा ६२
ऐघणीकमांघटे अनेंवकजेबगलोरीयोतसगंधनजीरह्योछे अनइकेसवदासकहिंकोविदकः माहाएहबाजेकांन्हतेवा.
॥सघईरथस्योछइ हवइंतामरकउपरिकोधकरावा १९ अथकरुणकोरुद्ररसलछनसविया॥

सीसिमास्योकलकुवियोगुमास्योवोरिकैंमरोरिमास्योनयनास्योहिं सबकोसोहागअनुरागलूटिलीनेंदीनेंराधिकाकुंवरिकुं
सबसुमास्योहिं कपटुकपटिमास्योनिपटिकैंत्योरनिसोमेरीमहिंचानिमनुमिकुपहिंचान्योहिं जीत्योरतिरनुमछ्योमनमथ
कोमनुकेसोदासवाइकोनककुरोसत्रुरमारयोहिं २० अर्थः एकदासमेंनइविषइंसषीजेतेमुलजीनेंकहेंछइं मुलजीतमे
सर्वनेंजीतीजेरकरीमुक्याछे तोहातमेंएवमोक्रोधकेंउपरिकीधोछे तेकहोइंछइं कलहजेकजेसतेतोतमेंमरमीमास्यो अ
नेंवियोगनेबोलीमास्या अभिमाननेतोमरनीमास्यो अनेंसयाननेतोनारेंकरीनांख्योछइं अनेंसगलाईसोहागअनुरागजेप्रे
मनेतोतमेंलूटीलीधेतेराधिकाकुंअरनेंदीधेछे तेप्रेमकेहवोछे सगलासुषमांसलोछे अनेंकपटातेहनइंपछाडीमास्यो
निपटजेकठिणतेहनाहीयाउपरि अनेंमहिचाननेंकामतेहनुंजेउजवांनतेतोमननोमनमांजराषीछे अनइंरतिनुं.
जेरणकः संग्रामतेतोजीत्यो अनेंमनमथजेकामतेहनुंजेमननेपिणनमेमछ्यो अनेंकहेंनहींकेसवरायहविकोण
उपरिक्रोधकरोछो २० अथवीररसलछनदोहरा॥ होयवीरउछाहरस गौरवरणदुतिअंग अतिउदारगंभीरकहि केसव.
पाएप्रसंग २१ अर्थः वीररसतेउछाहकः हर्षमयछइं सरीरनोवर्णगोरवर्णछइं अतिउदारहोइंगंभीरछइं केसवदासक
हेंछे २१ अथराधाकृष्णकोवीररससविया॥ गतिगजराजसाजिदेहकीदीपतिबाजिहावरथभावपतिराजबलवालसों केसो
दासमंदहासअसिकुचभटनिटरिनेटलयेंप्रतिनटजालिंनरवजालसों प्रगटसाजकुलकानिसोचपोचलयभाजितिलोहि.
धनुतानिबानलोचननविसालासोपेमकेकवचकसिमाहसूमहायकुलेंजीतिरतिरनुआजमदनगुपालसों २२ अर्थः रा
धाकहेंछेराधाजीतोहरीजेचालितेतोहस्तिनासरषीछइं तेरूपीयोहस्तीसजकीधेछइं अनेंदेहनोजेकांतितेरूपीयोतो.
घोडो अनेहावतोजाणीइंरथ अनेंभावतेतोजाणीइंरथनापतिकः उंबरांउ सातिराजकेंजेकांमतेतोजाणीइंराजातेह
नोजेचंचलताकः उतावलोलसकरचाल्यो अनेंकेसवदासकहेंछेमंदहासतेतोअसिकः षड्ग अनेंकुचजेस्तनतेरूपीया
जेनटकः योद्धा अनेंप्रतिनटजेसाम्हायोद्धातिलेंनखरूपीयाजेजालातिलोंतस्या अनेंलाजलज्जासाजलेअनइंकुलनीकांति.
सोचजेविचार अनेंपोचजेगरीबपणुं अनेंनयकः बीहक एतलानेयोद्धानेंकहमेरूपीधंधनुषचनावी अनेंलोचनरू.
पीयोबांणेंकरीनेंमारीनांख्या अनेंप्रेमरूपीयोजेकवचकः बगतरतेकसीनेसाहसरूपीयुंसहायकरीनइं

आजमदनगोपालसोंरतिरागजीत्यं २२ अथकृष्णकोवीररसलछनंसवैया॥ अबयौंउदारिहौंकिबकयौंबिदारिहौंकंसको
किकेसोराहूकेसीयौंपसारिहौंहरिहौंकिमानताप्रभूतनाकिप्रानतियौंबनतेंकिबनमालीकालीयोंनिकारहौंकुविहौंविमदय
नबाहनयोंघनस्यामकाजुसौंनहारहरियासोंक्योंहारिहौंबैठीकामरुवरबुजकीजुमारिकांनिमारिउहैंनदकेजुमारिकब
मारिहौं २३ अर्थः सषीजितव्रजजीनइंकहैंछइ हेमहाराजअबजेअघासुरतेहनेपठेउमादस्योकेंबकासुरनीपठेबिदा
स्योकेंकंसनीपरेंमारस्योपछाडस्योकेंनाहिंहाप्रभूतनानीपठइंएहनाप्राणहरस्योकेंकालीनागनीपठइंएकजलमांहिंथी
बीजाजलमांघालस्योहेबनमालीकेंनाथनवाहनाजइंइतेहनेमदकुतास्योतिमएहनेजुनारस्योहेघनस्यामकिहांतमेहा
स्यानथीएआगलिकिमहारस्योहेमहाराजबकामरूडकोकटवुजनीजुमारिकानइंकामजितमारछइतिकामनइंकहीइ
मारस्यो २३ अथभयानकसलछनंदोहरा॥ होयभयानकरससदाकेसवस्यामसरीरयाकोदेषतसक्तनहींउपजिपरिनार
२४ अर्थः केसवदासकहेंछइ भयानकरससदाईकालोछइ अनइंजेहनुंनामसांभल्यइंथकेंभयउपजइंतेहनेभयानक
रसकहीइ २४ अथराधाकोभयानकरसकथनसवैया॥ नविमंडलमंडितकेंघनघोरउठिदिविमंडलमंडीगटी गहरा
तिघटाघटवानकेंसघटघोषघटेनघटीजुनघरीदसजुदिसिकेसवदामिनीदेषिलगीप्रियकामिनीकंउनटी जानुपारथ
पाइपुरंदरकेबनपावककीलपटेंझपटी २५ अर्थः नभमंडलजेहथवींमंडलतेहनइंविषइंमेघनीघटाइंअंधकारथ
ईरह्योछे अनेंदिसोदिसेंघटाजेतवमीआवि अनेंघोघाजज्ञाहूजेतएकघरीइंउछेभायतोनथीदिसोदिसेंदामिनीजेबीजली
तेझात्कारकरीरहीछेंतेहवेंसमेंराधाजीनेंबीहानेंव्रजजीनइंकोटेंवलगीछेंएहवोभयानकदीठउंप्रथमकं॰ अर्जनतहने +आदी+
मिलीनेंकामिनिजेनेंश्यानलतितोपुरंदरजेइंद्रतेहनुंबनवाल्मतिवारइंजेहवउंअंधकारदीसतुंहतुंतेहवउंदेषीनेंकोटेंवल
गी २५ अथकृष्णकोभयानकरसलछनंसवैया॥ रासमेंरसकेबोलविसतेंसरसहोतजानेंकसषव्रजलपितदाषिजिनवा
षाहिंकेसोराइइपुदीबिलायकलपैवतुमआजनलजुमियाकीआंषिअलिलाषाहिंसुधेजिसषभरिवेकोआएसिषवनसोहिं ६२
सुधेकुमेंबसूधीबातिमोसोंवनितापाहिंऐसेमेंकुकेसेजाडुरिक्रुषेदेषीजाइकामसीकमांनेंसावराईलोहिंरापीहिं २६
अर्थः एकदासमेनेंविषइंसषीजितेव्रजजीनेंकहेछे हेमहाराजरीसमांजेरसमांबोलतेंविषधीमीवीलागइछइं पिणतेस

बादषीतिकपिणीझाषवाषीजुइंतेजाणोंमहाराजआजतुस्तेहुषदेवानोंघैछे अनेंआजदोहलगेराधाजीनेंआंषोंदरसननें
अभिलाषीकरेंछइं अनेंतमेसूधापाधराथईनइंतुझनेंसीषामणदेवाआवेछेतोहिसुझआगलिसाचीबातकहतानथीएहमां
जुकिमजाउंवेगलाथायेंनहीजोतोकामनिकवाणसरषीतमेंवटावीनइंजलोछइं २६ अथवीभत्सरसलछनंदोहरा॥ निं
दामयवीभत्सरसनीलवरनवपुतासकेसवदेषतसक्तनहींननमनहोतउदास २७ वीभत्सरसजेतेनिंदामयछइं अनें
सरीरजेतेनीलवर्णहोइं अनेंकेसवदासकहेंछइं तेवीभत्सदीठेथकेंसांभल्येइंथकेंमनजेतेउदासथाये २७ अथराधिका
कोवीभत्सरससवैया॥ इटसाटफणाघतोंधूमधूमेंसेनसनेजगुरउगोमीसापछोबीनतिघानजूकंटककलितत्रिण
वलितलछितविगंधजलतिनकीलताकोलतवानजूकुलटाकुचीलगातअंधतमअधरातिकहिनसकतवानअतिजु
अकुलाइनजूछेमीमेंधधस्योकिंघरईधणकोघनस्यामघरघरणीतिहिंहिंजाहघिणानजू २८ अर्थः सषीजेनिकृष्णव्रत
इंकहेंछेहेमहाराजमेघनीगर्जारवसांभलीनेंधणाइकजीवगामिणामिथीदूटइंछइंकं॰ झोल्याछइंक्षितीकं॰ तिमराजी
गोमीकं॰ सर्पवांतणीसर्पवीछीनेंअनंतनीसरइंछे तेहवामांजावउं अनेंजेकडुजावउंतेकेहवीछइंजेहवउंसरीरस
गलुंकंआमेंलफ्कछे तेहाथआगीइंतोजाणोंकाटाघ्रसेवानुजलनेंदुर्गंधगंधयतेहनीसिज्यानेउपरिसोढिवानइंकाजइं
घणुंलालविकरोछो अनेंकुलटानीजातिमहामलिनछे अनेंएहवुंअंधकारथईरह्यंछइं अनेंअर्धरात्रिगईछइं अनेंन
मनइंकहीसकतीनथीघणुंआकलाथायोछोछीमीमांमैसीनइंजावउं अनेंएहवीस्त्रीनेंघरजावउं हेघनस्यामपीयारी
स्त्रीनेंघरजातामनमांआसतानथीकं॰ लगारेसरमातानथी २८ अथअद्भुतरसलछनंसंषेपसोंदोहरा॥ होयअचंनो
देषिकनिसोअद्भुतरसजानिकेसवदासबिलासमनिबिपीतवरनवषुवषानि २९ जेदीठेथकेंअचंनोउपाजकं॰ विस्म
यथायसांनलतांनिमजथाय केसवदासकहेछे विलासनिधिजेपरमरसनेंहनोपीतवर्णछइं २९ अथराधाजूकोअद्भु
तरसलछनसवैया॥ केसोदासबालविसदीपतितकनीनेरीवानीनृपवरनतबुद्धिपरीसांनकी कोमलअमलउरउ
रजकठोरजातिअबलापैंबरबीरबंधनविषनकी चंचलविलोनीचितअचल॰ सनात्रसांषसकलअसांषलावकास
कीकधानकीबेचतिफिरतिदधिलेतिनितिहेमोलालेतअदत्तनरसकतरीबेटीवृषभानकी ३० सषीराधाजीव्रतइंकहेइछे

हे सषी ताहरो वेस तो बालक नो छे अने दीपति जे कांति ते तो योवनवंत सरषी छे अने ताहरी जे वांणी ते तो लघ छे कं॰ घो-
ली छे वर्ण जे अक्षर ते हनी जे बुद्धि ते तो प्रमाणिक छे ताहरो जे हृदय ते कोमल छे अमलक॰ निर्मल छइ अने तारो जे ज-
स न ते तो कठिण छे अने नमां सं नाम नो अबला छइ अने बलें तो बलवीर नइं बांधे एटलो छे नमारी काम कथा ते तो जोरा-
वर छे अमाधक छे बीति व लिजे जो वो ते तो महा चंचल छइ अने चित्त जे अचल छे अने स्वजाव नमारो सर्वसाधक छे वेवती किरे
छे दही अने ग्राहक नाम न बेचाताले छइ एहवी अधिकी कोइ छे एहवी अद्भुत रसे नरी दृष्टांनजीनी वेटी छइ ४७ सवैया॥
बुज की कुमारिका वेलीनइ श्रुकमारिका पढावें कोक कारिका तिके सब सबि निबाहि गोरी गोरी तोरी तोरी घोरी घोरी
वेस फिरें देव तासी दोरी दोरी आई चोरी चोरी बाहि बिजुगुन तेरी आंन नट कुटीक मांन तांनि कुटिल कटाव बांन यहि अ-
चरज आहि एते मान ठीव इछ ते रे कों अदीव मनु पीवा दहि मारति पें बूक सान कोकनारिहि ४८ अर्थः सषी सषी प्रत
इं कहे छे सषी बुजनि कुमारिका जे राधाजी ते एकदा ग्रां मांमो पटबी जाहा ग्रमा काबरि ते हनी कोक सास्त्र नी गाथा तेलणा॥
वें छे ते के सब राय सर्व जोइ छइ ते हने प्रीति ते निर्वाह देषाडे छइ अने तारा रे गोरी छइ अने दिहाडें घोरी छे कं॰ तानी छे
एम घकी फिरती रमती हींडे छे देवतानी पठे त्रो ती रनइं चोरी रने हरि मारुं जोइ छे सषी ताहरा समजो एमो टो अचरिज
छे तकुरी समक मालते गुण पषै नाले छे अने कुटिक॰ बांका एहवा जे कटाक्ष रूपीया बांण ते चलावी नइं धीठ नायकनेई
व कं॰ मित्र ते हनु अदीव कं॰ अणदी ठु एहवुं ताहरा हरि तुं जे मन ते हनइं पीवदेइ नइं कं॰ कुपराणी कतीघइ नइं मारे
छे पिलए के चोट चूक ती न घीएमो दुआ संपूर्ण ४९ अथ कृष्ण को अद्भुत रस सवैया॥ मांषण कोचोर मषका चोर दधिचोर हूं घिचो-
र देषो नहीं देषत हीं चित्त चोरी सबही हिं प्रूरन पूरातन अरु पुरुष पुरांनइ॥ हि पुरुष पुरातन कहत कहि हैं तहिं कें॥
सो दास देषि सकरनकी सुंदरी विंकर ति विचार सब कुमत सामनाहिं दिषै गति गोपी का कीन्ह लिजात न जगति अगति तिं॥
केसें कें परम गति दे ताहि ५० अर्थः कृष्ण के हवा छे मांषण ना चोर मषू ना चोर अने सषी जो तुं नहीं देषतां रचित्त चोरी ले छे ६४
अनइं पुरातन जे वृद्ध एहवा जे कोइ पुरुष कहें छइ ते स्फ कारण के सबदास कहे छे देवतानी सुंदरी ते अनरिछ घका॥
जोई रनइं विचार करे छइ ते केहवी छे महा बुद्धिवांन छे ते कहे छे एते कृष्ण अने गोपिका जे राधा ते हनी जे गति ते जोई नइं॥
॥सो ताती गति मतिनजी

जाए छे तो एवी जातें परम गति आपें छे ते किम आपें छे ए आश्चर्य ५१ अथ शांत रस लछ्छन दोहरा॥ सबै तें हि य तदास मतु ब-
सत एक ही ठौर ताहि सौं सम रस कहि केसव कवि सिरमौर ५२ केसवदास कहे छे सघली वस्तु थकी मन तु दास घाइं छइ ए
क वस्तु परि आवी रहे ते हनें सो टाक वि सुर शांत रस कहे छइ ५३ अथ सवैया॥ देषें नहीं अरविंद नि सौं चित चंद की आ-
+ कं ५ नंद दनि काइ कांन न काम कथा कहि कामिनि ताकि त्रि भुमकी सुंदरताई देषगई जब ते तुम्हे कों न वतें कछु बाहि न देषो॥
सो हाई ओ कें गी देह को देषें बिना अहो देकु न का कुकका केंदि षाई ५५ अर्थः एकदास मे ने विषइं राधाजी नी सषी श्री कृष्ण प्रत
इं कहे छे हे महाराज अरविंद जे कमल ते किम वं द्रमा न इ जोई नइं बीजाइं जाए छे पिण चंद्रमा केहवो छे तो छे हे मइं आनंद
नु मूल छइ ते तो हिं पिण कमल नइं गमतो नथी ते हनी पठे राधाजी नइं तमा रं मुष जोइं गया पछी त्रिलोक नी सुंदरताई छइ
ते राधाजी नें गमती नथी कान मघा जे वनात दी व तु गमतुं नथी अने काम नी कथा कांइ गमती नथी अने प्रलुजी तम ने जोया
विना एहवा लोंदे हीं वां न स्मे ते माटें कां कृ आवी नइं दरसन देषाडो ५५ अथ कृष्ण को सम रस सवैया॥ षारिक षात न दा-
स्यो उदाषन मांषण कुं मकु मेरोइं गाइं केसवक षम युष कूत हू मत आइ हों तो पहि गाजि जिजाइं तो रदन ऊद कों रसं ब कहा
षिगए कविकों कुटि गाइं बाहि न ते उन राषा उ आइ समे तक धाव सुधा का मिठाइं ५६ अर्थः एकदास मे नइं विषइं राधाजी ने
कहे छे हे सषी प्रलुजी षारिक माता नथी दाडिम नथा षा मत था मां षण एसर्वे षाव उ मेल्ये कु षक हे॰ सेलडी मषक अ वे कु मा
नां किरण ते रूपी युं जे अमृत तात पिण गमतुं नथी ते माटें धीठाई कं॰ हठाई तमुं कीनइं जो सली आवी नइं ताहरा जे रदन छद
कं॰ अधर ते हनो रस ते रेंचक कं॰ थोमो एक जो राव राइं चाषी गया ते दिहा ना पा॰ छो अमृत नइं आदइं दइं नइं प्रथवी मां जे तली मिठ-
ई छे ते तली स गली षावी मे ल्ही ५६ अथ सवैया॥ दतु ज मनु ज जी व जल थल जल निके पर्यौई रहत जहां काल सो सम रूहै
अनंत अजर अज अम रो भरत परि केसव ति कहि जानें सोई तो अ समरू हे बजनु भवतु कुनि सभु जि सब द कवि अरवि-
द निकों बाडु नहीं सिव कों नमरू हें लाग रूहें लागो लिया लाग तिजैं लां म्यो परि ता मिनी ते वन मांझ नय कों सवरू हें ५७
अथ दूहा॥ इह विधि वरनऊ वऊ नव रस रसिक विचार कां ध वऊ दृत्ति कवित्त की कहिं केसव विधि च्यार ५८ अर्थः के-
सवदास कहे छइ इहां प्रकारे नव रस वर्णव्या हवे च्यार प्रकार नी कवित्त नी दृत्ति छे ते सांभलयो ५८ इति श्री नवरस वा॥

र्णनो नाम चतुर्दशः प्रभावः १४ अथ वृत्ति वर्णनं दोहरा ॥ प्रथम कैसकी भारती आरभटी इह भांति कहैं केसव सकल साचुकी
चतुर चारि विधि जानि १ अर्थ च्यारि वृत्ति ते कहीई छै प्रथम कैसकी १ बीजी भारती २ त्रीजी आरभटी ३ चौथी सात्विकी ४ केसवदास
कहे छै चतुर हो यते च्यारि वृत्ति जाणवो १ अथ कैसकी लछन दोहरा कहां केसवदास जहां करुणा हास्य सिंगार सरल बर
णन जुत अति सुलाव जहां सो कैसकी विचारि २ अर्थः केसवदास कहै छै करुणा हास्य अनें सिंगार रस इत्यादि कोमल वर्णन कीजई
अनें स्वाधरा अछर आणीई सुंदर अर्थ आणीए ते हनें कैसकी वृत्ति कहीई २ अथ सवैया ॥ मिलि कै एक मती मिलि +अरु+
फिरैं दूतिका सों मिली मन मन ही बिलास बिलसति हैं बोलि कै एक बोल बोलन्ति वै कौ बोलि बोलि तौरपति ब्रजति बस
है षि कै एक करि फिरैं देवता सी दोरि दौरि देवता मनाई दिन दान मानसति हैं कौंन कहा करम कौं ई ही रूप मेरी माई ए तो
मेरी कान्हि सुकौं नाम हि हसति हैं ३ अर्थः एकदा समेनें विषई सषी सषी प्रतई कहे छई सषी राधा जी जते प्रत्यंग संघातई मि
लवानें काजई प्रथम पुरुषनें मिली मछे दूतिकानें मिली पिण मनना मन मांहिं जमिली नें मन मांज बिलास करै छई एकवात
बोलवाने एक वातमांत लवानें काजई अनैं कती मर्म अनेक ब्रत करे छई अनें केतली एक स्त्री यो प्रत्यंगजी ते हनई दरसन दे
तानथी अनें कुसमथी सूर्य्य की जीयें कर्मनई अनें रूप नी बात तें सुंदरई ही सें छै है व छि नर तो मांहरा कान जी ना नाम नई जेह
मेछे प्रत्यन्त ई जो वांछी नें छै एह बी कर्हतिहां सिंगार समदान दृत्त करे छे तिहां करुणा रस हस्से छई कहतिहां हास्य रस ३
अथ भारती लछन दोहरा बरणिए याम हि बीर रस रस मय अद्भुत हास कहैं केसव सुभ अर्थ जहां सो भारती प्रकास ४ के
सवदास कहै छई कहां बीररस वर्णवीई अनें महो अद्भुत बीररस वर्णवीई मांहिं हास्यरस वर्णवीई अनें सुभ अर्थ जाणीई
ते हनें भारती वृत्ति कहीई ४ अथ सवैया ॥ कांननि कनक पत्र बनि बम कर वाकु पुज छिति मिलि कलक तिअति सुन्दर
य कि राव बीला छत्र सीस फूल मारथी सो केसरी की आसि अधराधिकार बीव नाय नी किंहीन की बसमनी बीकों मोतिनी
कों नाक एक ही बिलोकन गोपाल तों गए बिकाय लोचन बिसाल लाल जरित जमाई लाल मानों वह्यो मानि तिकें रथ मन मथरा ६५
य ५ अर्थः कर्णनई विषई कनक पत्र कछ लालि ते कर्णनई छै ते जाणीई चक्र धरूं छई अनेक फूलके ई छई ते जाणीई धजा ने
॥ धणुष्य धदा यक छई सीसई छई मस्तक नई विषई फूल छई ते जाणीई धरथ छत्र छई राधाजी ई केसरनी आदि

नाबी छै ते जाणीई सारथी नाकनें विषें नकवेसर छै ते तो जाणीई नकीमछे एकवांकी दृष्टि तु जे जोवो ते तो जाणीई परमेश्वरनें
आधीन की धां लोचन जे ते विसाल छै क० मोटा छै अनें लाल नें विषें बादल मां एक लाल पर्णे सुंदर छे ते जाणीई मीन क० माछि
लुं ते जो मीनें मन मथ क० काम ते जाणीई रथ त्र परि बेठो छे ५ अथ आरभटी लछन दोहरा ॥ केसव या महि रौद्र रस भय
बीभत्स जानि आरभटी आरंभ यह पद पद यमक बखानि ६ अथ सवैया ॥ घोर घनें घन घोरत सजल उजल कज्जल की
रुचि राचे रूले फिरें इत सेतन यापाई कमाव न की पहिलीति घिघांचें ष्योकु कुंदांन छिते तरपि तर पिवनिता कहि केसव
साचें जानि मानों ब्रजराज बिना ब्रज ऊपर काल कहूं बिनि नाचें ७ अर्थः एकदा समेनें विषें घन जे वरसात तिहां कज्जल
नसा घोर क० बीहामणा जे गाज तेणों करीनें ब्रज उपरि गर्जना करइ छइ उजल क० उजला त बादल ते हनें विषें काले तेम
रिषा जे मेघ ते घणुं सोभे छे ते आवण सुदि धुंबमीनें दिहाडे अनें दिसे थी आरि बीजली नें रसें छे क० छे कना मारे छई केसवदास
कहें छे ते देषीनें ब्रजनी स्त्रीयो सांचे बीहे छे ते जाणीई ब्रजनाथ क० श्रीकृष्ण ते आंहीं नथी ते मांटे ब्रज उपरि काल नृत्य करे छे
छे ७ अथ सात्विकी लछन दोहरा ॥ अद्भुत रुद्र बीर रस समरस वरन समान कवि निति हि समझि त सात्विकनि सो सात्विकी
सुजान ८ अर्थः अद्भुत रस रुद्र रस बीर रस शांत रस ते सगलाई तु वर्णन करे तिहां सात्विकी वृत्ति उपजे ८ अथ सवैया ॥ के
सोदास लाषर लांति नके अति लोभ बाविदें सी बावरी न बाहु ही यो लाहरी सा राधिका हरकी प्रीति सब तें अधिक जानि रति रस
बहु कैं दैबोरति हीरी सा ति नमें हिते कुन नवानी कुपि पांसो जाय जारन में जारती की जारती तें जो रीसी एक गति एक मति
श्री कें प्रांन एकै मनु देषि बे कूं देह हैं कि हैं नैंन निकी जोरीसी ९ अर्थः एकदा समेनें विषें सषी सषी प्रतें कहें छई हे सषी लाष
लाषर लांति ना अतिलाष करे छई लपुं कीदें हे बावरी क० गहेली हो ली नी पछई हीं कही लमां राधा कृष्णनी जप्रीति ते सहु थी
अधिक छे रति क० कामनी स्त्री अनें रति नाथ जे काम ते हनें प्रीति घणी छे पिन राधाकृष्णनी प्रीति सो नी राधाकृष्णनी प्रीति बिचइ
नवानी पिणले द थामीन मके अनें नारथ नें विषे नारथी जे वाणी ते एहनी प्रीति आगलि थोडी बली एबेज णांनी एक गति एक म
ति अनें एक प्राण एक मन पिण जो बानई बेजणा छे ते केहनी मछई जिमने त्राबे छे पिण जोति बिकुनी एक जछई ९ दोहरा
इह बिधि केसवदास कवि नव रस बरणक विल पच तीति अनरस कन्यो बाहिं नदीजे वित्त १० अर्थः केसवदास कहि छै

इणेंप्रकारेंनवरसवर्णना एवेंपांचसांतिनाअनरसकहेंतेसांलखि १८ इतिश्रीरसिकप्रियायांचतुर्विधकविप्रावर्णनंनाम
पंचदशमप्रभावःसंपूर्ण १५ अथअनरसलक्षनदोहरा॥प्रत्यनीकनीरसकविरसकेसवदुःसंधान पात्रदुष्टकविनकहु
करेसकुकविबखान १ अर्थः प्रत्यनीक१नीरस२वीरस३दुःसंधान४पात्रदुष्ट५केसवदासकहेंछें एपांचेंअनरसकह्या १
अथप्रत्यनीकरसलक्षनदोहरा॥जहांसिंगारकबीभत्सअबारहिवरनेकोय तोद्रसकरुनमिलतहीं प्रत्यनीकरसहोय २
अर्थः केसवकहेंछें जिहांसिंगाररसबीभत्सरसरुद्ररसभयरसवीररसकरुणाएटलारसवर्णवीइ तिहांप्रत्यनीकरसथाय
जै २ अथसवैया॥हसतिबोलतिहीसहसेंसबकेसवलाजनजावनलोकनलोगें बातचलावनधेरुचतेंमनआवनहीमन
मकुजागें तुमकहिसकुतीमनमेरेजुजानियहेंनहियोंऊमगें हरिसोंनेकुमीठिपसारितहीआंसुबानमसारतलागुल
गें ३ अर्थः सखीराधाजीप्रतेंकहेंहेसखीजोहसीबोलीएतोसगलाईलोकहसें अनेंजोलाजमुकीइतोसगामुकवापमें जोबात
चलावीइतोघेरुकरेछेंदकमीचालइ जोमनमांआलीइतोमनमयजागें अनेंसखीतुंकहतीहतीतेहिजमाहरामनमांहतीॱ
मिलणजालीइंछें तिवारेंहीउमगीआवेंछें अनेलगारेकहरिसामीदृष्टिपसारीयेंकरेछेंलावीइतिवारेंजोकजेतेआंगलीॱ
वीधणुकरे ३ नीरसरसलक्षनदोहरा॥जहांदंपतीमुजुमिलेसदारहिहंहिरीतिकपटुरहेंलपटीइंमननीरसरसकीप्रीति
४ जहांदंपतीजेस्त्रीभर्तारतेमुहामुहेंमिलेंमनमेंकपटइवीणाइरहेंतेहनइंनीरसकहीइ ४ अथसवैया॥गाहतिसिंधु
सयानिकेंजितकीमतिकीअतिदेहदहेंली सोहहंसीदुखुदोकुदईतिनकुकजनावतवेसयेहेंली जानिहेजानिमिलीमुकुलीहि
यामांछितेनावतिगर्वगहेंली आजलोकानतिकुनमुनीकलोदेषिबलीअबसौतिसहेली ५ अर्थः हेसखीसयाणपणजेवउराॱ
ईतेहनोजेसमुद्रतेअवगाहीइकहियेंतेमतेंसोधीइ पिणएसोहेतेहसीमणिहियामांजेदुषेंबलीतेसंघातइतोबलीमहेलीॱ
कहेछेकरेअर्थकहेंछें प्रेमनीवार्ताकहेछें नाहकजाणपणुजाणेहवेंरामिहेगहेलीएकाइमुजनेगमतुंनथीअनेंआजनीॱ
घनीलगेंकिहांदाछोनथीमांसल्योनथीजेकोइसोकिकांइसाथलणिथइनइवातइ ५ अथवीररसलक्षनदोहरा॥जहांसोग ६६
मुहिलोगकोवरनतहेंकविकोइ केसवदासकुलालसमोतहांविरसरसहोय ६ जिहांसोकमांजोगवर्णवीइ त्याहांकेॱ
सवदासकहेंछेंवीररसथयजइ ६ अथसवैया॥केसोदासहीतुबातुबातुमांतुलयोंप्रातुमीठकीसीमीठहि बांमकुरंसि
॥कलालयह

जकवहबालदेषतहीसबसुखुतुमकुंउवेठीहें ऐसीसोंबसीठीसीठीचीठीअतिदीठीसनीमीठीबातनजनीकेंकुंमैंसीॱ
ठीहें इतिनिसोंटटीहूठीताकेंसागकीअंगीठीयाकेंउरमेंसकेंसेंहसिलीठीहें ७ अर्थः सखीसखीप्रतेंकहेंछें नाणकरेन्हावुॱ
जेदेवुंपानजेपीछेंतेतेवीसरीजायछइकरेविसरीगयोछें गानकरेगावंनध्यानतेतोजानारसा आणजजीवतेपिणउस
+सि+ हाछेंथइरसोछें रांकलालजेप्रभूतेहनेंएकजलागीछें तलीजेबालातेहनेंमिलप्रमुनइंजीवानइकाजेंसथनीविष्टकारॱ
+सं+ छें इष्टजेमोलानासगातेंनोहेतुत्रूटोतेहनोसोकनीअंगीठीतेहीयांमांहिंउठीएहवीक्याहेंदीठीछें ७ अथदुःसंधानरसलॱ
क्षनदोहरा॥एकहोयअनुकूलजियजहांदूजोप्रतिकूल केसवदुःसंधानरससोनहुतहांसमूल ८ केसवदासकहेछेइए
कजणोअनुकूलबीजोप्रतिकूलहोइ तिहांदुःसंधानरसकहीइ ८ अथसवैया॥देदधिनेउधारहोंकेसवदानकहांअरु
मोललेबेहैं दीनेंबिनातुगईंसगईंहोगईंनगईंघरहिफिरिजेहैं गोहितुवेसकियोहितुहोकबवेसकीएवहुनीकिफिरि
हैं वेसकैगारसबेचकुंगीअहोवेओनवेओतोटोरिनदेहें ९ अर्थः एकदासमेंनेविषइप्रभुजीनेंकहेंछें दहींआपोॱ
तोकहेंकांइउछीनतुंआपुंछें प्रभुजीकहेछेदाणलागेछेतेआपोबलीराधाजीकहेंछें दाणतोकांईहोइनहीदेवातोल्यो
तोआपुंप्रभुजीकहेछेंदाणदीधापवेनजावादेंराधाजीकहेंछेंगयानहीतोघरेंफिरीजासंतोप्रभुजीकहेछेंअमतुमरिषी
हेनउतासाराधाएहेउहेउजकहोप्रभुएवेरकीधंराधाएकीधंतेकीधंघरअमतुमरिषीहेतउतारीनेंअमतुमरिवेरकरी
नेसकईगोरसवेचस्योराधाएनवेयोतोलीनेंदेसं ९ अथपात्रदुष्टरसलक्षनदोहरा॥जेहिजहांनबूझिएकविहिलेसोॱ
दुष्टबितुवितुवारिजोबरेतितोओरसपात्रकहीदुष्ट १० अथसवैया॥कपटकमानीमानीप्रेमरसलपटानीप्राततिके
गगादूकेमांनीसमवानीयेंस्वारथनिधानीपरमारथकीराजधानीकामकीकहांनीकेसोदासजगजानीयेंसवरनअरुजा
नीसधसोसधविज्ञानीसकलसधनमांनीजगसमदानीयें गोरीअरोगिरालजानीमोहेंमूढगूढमांनीलेसीबानीमेरीॱ
रानीबिबुधेवषानियें ११ अर्थः एकदासमेंनेविषेंसखीसखीप्रतेंकहेंछे हेसखीएहवीजेवाणीतेहनेविषइसरसीलागेंछे
अनेंस्वारथनीनिधानीछें अनेंपरमारथराजधानीछें कामनीकहांणीछें सगलीवउराईमांकमाणीछइ अनेंझानंनीॱ
समदायकछइॱ

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June, 2017

रसकप्रिया
पत्र० छीं सा
हनापरत छे

२

केसवदासकहेंछें सगलेंजूगेंजाणीछें सुमाजेअद्भुरतेहमांगूढ्वांणीछें अमृतमाहिं घी:काठीआणीछें गिराजेसरस्वतीतेपि
णलजाणी मूढअरूपज्ञानीतेहनेंमोहउपजावें ११ दूहा केसवदासककरुनाहासककडु अरुबीभसिंगारु बरनांनबीररतया
नक हिंसंततबिंसबिचारु १२ अर्थः केसवदासकहेछइं करुणारसहास्यरसबीभत्सरस शृंगाररसबीरस तयानकरस
एतलानेंनिरंतरवेरछइं १२ दू० तयउपजइंबीभत्सतें अरुसिंगारतेहास्य केशवअद्भुतवीरतें करुनाकोटप्रकास
१३ बीभत्सथीतयरसऊपनो अनेंशृंगाररसथकीहास्यरसऊपजेंछें केशवदासकहेंछें वीररसथकीअद्भुतरसऊपजें
रुद्ररसथकीकरुणारसऊपजें १३ दू० इहिबिधिकेसोदासरस अनरसकहेबिचारि बरतनलिपरीजहां कबीकुलतें
ऊरूधरि १४ अ० केसवदासकहेंछें एणीपरइंरसअनेंअनरसवर्णव्या वर्णावर्णवनांकेहांतलिपसीकइं तिहांसो
टाकवीकुइंतेऊधरीलेयो १४ जैसेंरसिकप्रियाबिनादेषिअदिनरदीन त्योंहीनाषाकबिसबेरसिकप्रियाकरिहीन
१५ अर्थः केसवदासकहेछइं रसिकजेतेजिमसुंदरस्त्रीपषेंदिहाडीदीनथाए तिमजेनेनाषाकविसगलाईरसिकप्रिया
तण्यांबिनाहीनतापामे १५ बाहेंरतिअतिमटें जानेंसबरसरीति स्वारथपरमारथलहें रसिकप्रियाकीप्रीति १६
अ० काविकहेछेंरसिकप्रीयानीप्रीतिजेनेपरमारथअनेंस्वार्थबेऊपदार्थनेंपामइं रतिजेनेप्रीतिमतिअनेंरसनी +२+
रीतिनेरसिकप्रियातणेंथकीअत्यंतवृद्धनइंपा मइं १६ दूहा सबबालाभःनीस्वामिनी सुरबालाजियजांनि ब्रज
भूषनमुषनावती नाकुकीठकुरानि १७ अर्थः सर्वबालामांहिं ब्रजबालानेमोटीछइं सुरबालाक० कल्पद्रुसरषी
छें ब्रजबालोकनेंभूषणसमानछें मुषथकीबोलतांपिणमीठी बीजीबालामांहिंएठकुराणीछइं १७ इतिश्रीमन्महा
राजकुमारइंद्रजितविरचितायांरसिकप्रियायांअनरसवर्णनोनामषोडशप्रभावः संपूर्णमिति १६ संवत१७७२
वर्षेश्रावणवदि५गुरुवासरेलषितं पं० हेमाविजयेनः श्रीराजनगरमध्येंलषितं लेखकपाठकयोः श्रीरस्तुः ॥